Nimat Sinhg Jain Tract Series No. 21.

नियामतसिंह रचित जैन ग्रन्थ माला अङ्क २१

सती

विजिया सुन्दरी नाटक

इसमें शील धर्म की महिमा दिखाई गई है। कि किस प्रकार एक गरीब लकड़हारे ने शीलव्रत का पालन करके राजा की पदवी को प्राप्त किया। तथा सती विजिया सुन्दरी ने अपने पति के खोए हुवे राज्य को किस प्रकार प्राप्त किया और अपने पुत्र जीवंधर को किस प्रकार राज्य गद्दी पर बैठाया।

—:卐०卐:—

जिसको

स्वर्गीय पूज्य बा० नियामतसिंह जैन सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार ने सर्व साधारण के हितार्थ रचा।

श्री वीर निर्वाण सं० २४८७

सन् १९६१ ई०

—:०:—

द्वितीय वृति ११००]   [मूल्य ३)

शंकर प्रिंटिंग प्रेस कटला रामलीला हिसार।

नोटिस

नियामतसिंह जी के बनाये निम्नलिखित भाग छप कर तैयार हैं ।

१.	सती कमल श्री नाटक	=)
२.	सती मैनासुन्दरी नाटक	६)
३.	सती विजया सुन्दरी नाटक	३)
४.	भविषदत्त तिलका सुन्दरी नाटक	३)
५.	सती चन्दन बाला नाटक	१)
६.	'विश्व' दर्पण'	१॥)
७.	महावीर चांदन गांव नाटक	॥)
८.	पद्मपुरी चारित्र	।)
९.	स्वाभिमान रक्षा	।)
१०.	जैन समाज दिग्दर्शन	।)
११.	महावीर चारित्र	≡)
१२.	प्रह्लाद नाटक	।)
१३.	नमोकार मंत्र का पाना	।)

पुस्तक मिलने का पता—

राजकंवार जैन

मालिकः—न्यामत जैन पुस्तकालय

मु० हिसार (पंजाब)

HISSAR (PUNJAB)

नियम

—

(१) चिट्ठी में पता साफ नागरी व उर्दू व अङ्गरेजी में लिखना चाहिए।

(२) यदि किसी चिट्ठी का जवाब न पहुँचे तो दूसरी चिट्ठी साफ पते की आनी चाहिये।

(३) कमीशन प्रत्येक ग्राहक को २ आने प्रति रुपया दिया जाता है। बुकसैलरों को २५ प्रतिशत दिया जाता है वह भी यदि ५ सेर का पार्सल मंगाएं तो।

(४) कोई साहब वी० पी० वापिस न करें। वरना डाक महसूल, उनको देना होगा।

(५) डाक खर्च खरीदार के जिम्मे होगा।

पुस्तकें मिलने का पताः—

राजकंवार जैन प्रोप्राईटर

नियातम जैन पुस्तकालय

हिसार (ई० पंजाब)

HISSAR (E. Punjab)

विशेप सूचना ।

१. यह सती विजिया सुन्दरी नाटक द्वितीय वार आपकी सेवा में आ रहा है। इस नाटक को बा० नियामतसिंह जी ने अपने अन्तिम समय में तैयार किया था। परन्तु भाग्य वश वह इसे छपवा नहीं सके कारण कि इसके पूरा होने में थोड़ी कसर रह गई थी जिसको अब पूरा करके आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। यह नाटक पं० नियामतसिंह जी की आखरी भेंट है जो इस समय प्रकाशित हो रहा है। मैं आशा करता हूं कि इस नाटक को भी आप सती मैंना सुन्दरी व कमल श्री नाटक की ही तरह अपनाएंगे।

२. इस नाटक को किस्सा कहानी समझकर इसकी अविनय नहीं करनी चाहिए। वल्कि जैन शास्त्र समझकर इसे विनय पूर्वक पढें क्योंकि इसमें श्री जैन शास्त्र का रहस्य दिखाया गया है।

३. इस नाटक को भी भादों और अठाई के पूर्व में श्री मंदिर जी में रात के समय सभा के बीच में नाटक के तौर पर पढना चाहिए। नाटक पात्र अलग अलग होने चाहिये।

४. इस नाटक के वास्ते हारमोनियम बाजा और तबला आवश्यक होना चाहिये।

५- चूंकि यह धार्मिक नाटक है इसलिए इसके पढ़ते सुनते समय किसी प्रकार की अविनय या अनुचित हंसी मसखरी नहीं होनी चाहिए।

राजकंवार जैन हिसार।

यह पुस्तक निम्नलिखित पतों पर मिल सकती है।

१ श्री राजकंवार जैन प्रोप्राईटर नियामत सिंह जैन पुस्तकालय हिसार। (पंजाब)

२ श्री गोपीचन्द, मैंनेजर मित्र कार्यालय 'जौहरी बाजार' जयपुर।

३ श्री अतर सैन जैन, श्री दि० जैन पुस्तकालय 'मोहल्ला 'अब्बुपुरा' मुज्जफरनगर।

४ श्री निहालचन्द दयालचन्द जैन बुकसैलर जालंधर सिटी।

५ श्री मोहनलाल जैन शास्त्री 'लाखा भवन' पुरानी चरहाई जबलपुर (सी० पी०)

६ श्री मंगलसैन जैन विशारद श्री दि० जैन पुस्तकालय श्री महावीर जी (जयपुर स्टेट)

७ महावीरप्रसाद, विनोद कुमार जैन श्री वीर जैन पुस्तकालय श्री महावीर जी (जयपुर स्टेट)

८ श्री मूलचन्द, किसनदास, मैंनेजर दिगम्बर जैन पुस्तकालय कापड़िया भवन, गांधी चौक सूरत।

९ देहाती पुस्तक भण्डार 'चावड़ी बाजार' देहली।

श्रीजिनेन्द्राय नमः

पुरुषों के नाम

सत्यंधर—राजपुरी का राजा।

काष्टांगार—लकड़ी बेचनेवाला (लकड़हारा)

धर्मदत्त—राजा का महामंत्री।

जीवंधर—राजा सत्यंधर का पुत्र।

गंधोत्कट—राजपुरी का बड़ा सेठ।

नंद—सेठ गंधोत्कट का पुत्र।

पद्मास्य (पदमदास) जीवंधर का मित्र।

गोविंदराज—जीवंधर का मामा (तिलक नगर का राजा)

स्त्रियों के नाम

विजिया सुन्दरी—राजा सत्ययंधर की रानी।

पद्मा व देवदत्ता—राजा की दरबारी वैश्या।

जीवंधर की आठ रानियों के नाम

गंधर्वदत्ता—गुणमाला, पद्मावती, क्षेमश्री, कनकमाला, विमला, सुरमंजरी, लक्ष्मी देवी।

कठिन शब्दों की व्याख्या

केकई यंत्र) एक विमान का काम है। जो आजकल
देव यंत्र) हवाई जहाज के नाम से पुकारा जाता है।

सिद्धार्थी—स्वर्ग की देवी।

दंडक वन—जहां साधु मुनी तपस्या किया करते थे।

सती

विजया सुन्दरी नाटक

पहिला ऐकट

राजा सत्यंधर का खुश होकर अपना राजपाट काष्टांगार को देना । काष्टांगार का राजा सत्यंधर को मारना और उसके पुत्र जीवंधर को फांसी का हुक्म देना। देवता का आकाश से आना और जीवंधर को फांसी के तख्ते पर से उतार कर आकाश में ले उड़ना और चन्द्रोदय पहाड़ पर लेजाकर छोड़ना ।

❀ श्री जिनेन्द्राय नमः ❀
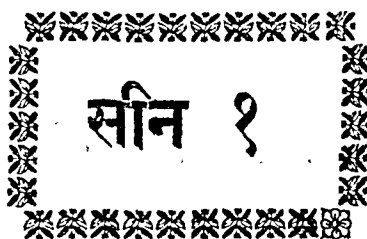
दरबार का परदा

नोट—अनुमान अढ़ाई हज़ार वर्ष से कुछ पहले भारतवर्ष के हीमांगद नामा देशमें राजपुरी एक बड़ा शहर था। जहां राजा सत्यंधर राज करता था। श्रीमती विजिया सुन्दरी उसकी रानी थी जो बड़ी चतुर और महा सती थी। राजा हमेशा विषय भोगों में फंसा रहता था और धर्म-कर्म और राजपाट की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देता था। धर्मदत्त उसका महामन्त्री था जो बहुत विद्वान और चतुर था और वही राजकाज प्रबन्ध किया करता था।

एक दिन राजा का दरबार में बैठे हुये नजर आना। परियों का भगवान की स्तुति करना।

(चाल)—बूवे हर गुल में परवरदिगार है।
हां! पत्ते पत्ते में तु नमुदार है।

तेरी महिमा ये सब से महान है।
हां जर्रे जर्रे का भी तुझको ज्ञान है॥

१ ले हितंकर का अवतार आया यहां।
तूने देखा कि है दुख में सारा जहां॥
दुखी हर एक इन्साँ हैवान है। हाँ॥

२ तूने मुक्ती का मारग बताया हमें।
सुख शान्ति का रस्ता दिखाया हमें॥
तेरा ममनूँ ज़मीं आसमान है। हाँ॥

३ दूर हिंसा का व्यवहार तूने किया।
दया में धर्म प्रचार तूने किया॥
सच्चा तुझ में दया का निशान है। हाँ॥

४ ध्यान ईश्वर का अब तो लगाया करो।
प्रेम भक्ती से गुण उसके गाया करो॥
वो बिलाशक गुणों का निधान है। हाँ॥

(परियों का चला जाना)

रानी विजिया सुन्दरी का दरबार में आना। सब दरबारियों का झुक कर प्रणाम करना। राजा का रानी को अपने अर्द्ध आसन पर बिठाना। देवदत्ता वैश्या का नाचते हुए आना और गाना गाना।

(चाल) जिधर देखता हूँ उधर तुही तु है।

१ तेरा नाम नामी जहाँ जानता है।
ज़मीं जानती आसमां जानता है॥

२ तेरे हुसन पे हैं फ़िदा चाँद तारे।
तुझे खूब हिन्दुस्तां जानता है॥

३ तेरे नाम से कौन वाक़िफ़ नहीं है।
हरिक तुझको पीरो जवां जानता है॥

४ तेरे गीत गाता है सारा ज़माना ।
तुझे हर बशर मेहरबां जानता है ॥

५ नहीं कोई भी तेरा दुनियां में सानी ।
है यकता तुही ये ज़मां जानता है ॥

रानी विजिया सुन्दरी का देवदत्ता वैश्या से दरयाफ्त करना, कि आज पद्मावती वैश्या दरबार में क्यों नहीं आई ? (शैर)

१ देवदत्ता आज महफिल रंग पर आती नहीं ।
और सब मौजूद हैं पद्मा नज़र आती नहीं ॥

२ है सदा पद्मावती राजा की मंजूरे नज़र ।
आज क्यों हाज़िर नहीं कुछ है तुझे उसकी खबर ॥

देवदत्ता–(शैर)

१ महारानी पूछो न पद्मा का हाल ।
कई रोज़ से उसका जी है निढ़ाल ॥

२ बदन से उतारे हैं ज़ेवर तमाम ।
नहीं अक़ल करती मेरी यांपे काम ॥

३ कोई काष्टांगार है नीच नर ।
वो शैदा हुई है उसे देख कर ॥

४ इसी दरद में रात दिन मुबतिला ।
पड़ी रहती है ग़म में वो दिलरुबा ॥

राजा सत्यंधर—देवदत्ता यह तुम क्या बक रही हो। क्या मेरी दरबारी वैश्या एक नीच पुरुष पर मोहित हो सकती है, मैं ऐसा हरगिज़ नहीं मान सकता।

देवदत्ता—महाराज मैं सत्य कहती हूँ। आप बेशक उनको बुला कर पूछलें, अगर ज़रा भी झूठ हो तो मुझे आप चाहे जो सज़ा दें।

राजा—(कोतवाल से) अच्छा कोतवाल, तुम अभी जाओ और पद्मावती और काष्टांगार दोनों को एक दम गिरफ्तार कर दरबार में हाज़िर करो।

कोतवाल—जो हुक्म। (चला जाता है)।

राजा—अच्छा देवदत्ता, कोई और राग होने दो।

देवदत्ता—अभी लो महाराज—

गाना (चाल) खुदा यह कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पड़े हुए हैं।

१ खुदा को ढून्ढा कहीं कहीं पर,
खुदा को लेकिन कहीं न पाया।
जो खूब देखा तो यार आख़िर,
खुदा को हमने खुदी में पाया॥

२ न मसजिदों में, न मंदिरों में,

समंदरों में न कन्दिरों में।
छिपा हुवा था हमारे अन्दर,
हमीं ने ढून्ढा हमीं ने पाया ॥

३ अरब में कहते हैं रूह जिसको,
उसीको आतम ये हिंद वाले।
जिनेन्दर ईश्वर है गोड वो ही,
फरक ज़रा भी कहीं न पाया ॥

४ मतों के धोखे में आके प्राणी,
परस्पे लड़ लड़ के मर रहे हैं।
भरम का परदा हटा के देखा,
तो एक नक़्शा सभी में पाया ॥

५ है सच्चिदानन्द रूप जिसका,
है ज्ञान दर्शन सरूप जिसका।
वही तो तू है विचार राजा,
कि जिसने ढूंढा उसी ने पाया ॥

कोतवाल का आना और काष्टांगार (मये लकड़ी के गठ्ठे के) और पद्मावती दोनों को गिरफ्तार करके लाना।

(शैर)

१ महाराज पद्मावती बेशरम।
थी घर में गिरफ्तार की एकदम ॥

२ मिला काष्टांगार बाज़ार में ।

पकड़ लाया दोनों को दरबार में ॥

राजा—पद्मावती तुम्हें शर्म नहीं आती, मेरे दरबार की वैश्या होते हुए एक नीच आदमी पर मोहित हुई हो । तुमने महफिल को बदनाम किया है। सच कहो क्या मामला है, तुम्हें क्यों नहीं इस बात की सज़ा दी जाए ।

पद्मा–महाराज आप बेशक मुझे जो चाहें सज़ा दे सकते हैं, परन्तु इसको तो मैं पहचानती भी नहीं ।

राज़ा-अजीब मामला है, पद्मा कहती है मैं इसे जानती भी नहीं । अच्छा काष्टांगार तू ही बता कि तेरा इस पद्मा से क्या सम्बन्ध है ।

काष्ठांगार—(चाल बनजारा) टुक हिरसो हवा को छोड़ ज़रा मत देश विदेश फिरे मारा ।

१ महाराज मैं क़िस्मत का मारा ।

निर्धन लकड़ी बेचन हारा ॥

दो पैसे कमा कर पेट भरूं ।

दिन रात फिरूं मारा मारा ॥

२ ये पद्मा सुन्दर रूपवती ।

जूं पूनम चंदा उजियारा ॥
मेरा इसका सम्बन्द कहां ।
ये धनवंती मैं दुखियारा ॥

३ हां इक दिन खड़ा हुवा था मैं ।
था सर लकड़ी गट्ठा भारा ॥
अपनी क़िस्मत को रोता था ।
नहीं मिला कोई लेने वारा ॥

४ इस पद्मा ने मद में आकर ।
मुख पीक मचल मुझ पे डारा ॥
फिर हंस हंस कर अपमान किया ।
गाली दे दे कर दुतकारा ॥

राजा–पद्मावती क्या तुमने अब भी इसको नहीं पहचाना ?

पद्मा–महाराज अब मैंने इसे पहचान लिया है।

(चाल क्वाली)

१ बेशुवा है ये वही धोखे में लाने वाला ।
और मुझे आज ख़तावार बनाने वाला ॥

२ पहले पहचाना न था अब मैंने पहचान लिया ।
है बिला शक ये वही राड़ बढ़ाने वाला ॥

राजा–अच्छा पद्मावती, यह बताओ तुमने इस ग़रीब लकड़हारे पर क्यों पीक डाली थी और बिला वजे

क्यों गाली दी थी ?

पद्मावती—(चाल क़व्वाली)

१ मुझ को मालूम न था मेरी हंसाई होगी।
सरे बाज़ार मेरी यों बेहयाई होगी॥

२ बनके मुजरिम मुझे दरबार में आना होगा।
हथकड़ी में मेरी नाज़ुक ये कलाई होगी॥

३ देवदत्ता ने हँसी करके कहा था मुझ से।
खूब हो तेरी अगर इस से सगाई होगी॥

४ सुन के ये बात कड़ी बल मेरे चितवन में पड़े।
इस से गुस्से में कहीं पीक गिराई होगी॥

५ ये बिगड़ घरको गया कहके कि समझूँगा तुझे।
मैं न समझी थी यहां तक ये बुराई होगी॥

६ मैं ख़तावार हूँ जो चाहो सज़ा दे दीजे।
सोच रक्खा है कि मेरी न रिहाई होगी॥

राजा—कष्टांगार तुमने फिर घर जाकर क्या किया ?

काष्टांगार—(चाल बनजारा)

टुक हिरसो हवा को छोड़ मत मियां देश विदेश फिरे मारा।

१ अपना बदला लेने के लिये फिरजमाकिया मैंने कुछ धन।
कुछ बसतर धोबीसे लेकर संध्याके समय जल्दी बन ठन॥

२ पद्मासे मिलने को पहुँचा ये होगई मुझको देख मगन।
ये करने लगी बातें हंसकर जैसा होता है इनका चलन॥
३ इतने में मेरी नज़र पड़ी चंदा देखा बिलकुल पूरन।
पूछा पद्मा से कौन तिथि है आज बता मुझको फौरन॥

राजा—तुम को इकदम चाँद को देखकर तिथि पूछने का क्यों खयाल आया ?

काष्टांगार—(चाल बनजारा)

टुक हिरसो हवा को छोड़ ज़रा, क्यों देश विदेश फिरे मारा।

१ महाराज इक दिन दो चारण मुनी देखे मैंने परउपकारी।
बन राजपुरी में करते थे प्रचार धर्म का हितकारी॥
२ मैंने भी जाकर धर्म सुना सुनते थे जहां बहु नर नारी।
पूर्णमासी की शील प्रतिज्ञा मैंने अपने चित्त धारी॥
३ याद आगई मुझे प्रतिज्ञा जब देखी चंद उजियारी।
पूछा पद्मा से है कौन तिथि बतला मुझको प्यारी॥

राजा—पद्मावती तुमने इसको क्या जवाब दिया और तुम्हारी ऐसी मातमी सूरत बनाने का क्या कारण हुवा ?

पद्मावती—(चाल क़याली)

कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है।

१ बताऊं क्या तुम्हें राजा है क्यों सूरत बनी ग़म की।
नहीं मालूम मुझको भी वजह कुछ अपने मातम की॥
२ कहा जिस वक़्त मैंने आज है दिन पूर्णमासी का।
यकायक इस की सूरत पे घटा बस छागई ग़म की॥
३ उठा घबरा के और बोला बहाना करके मेरे से।
अभी आता हूँ मुझको बख़्श दे फ़ुरसत ज़रा दम की॥
४ निकल आया मेरे घर से छुड़ा कर हाथ से दामन।
जुदाई बन गई मेरे लिये आतिश जहन्नुम की॥

राजा—कष्टांगार हम को बड़ा आश्चर्य होता है कि पद्मावती गणिका के मकान पर जाकर तुमने कैसे अपने नियम और शील को क़ायम रक्खा। ऐसे मौक़े पर बड़े बड़े मुनियों और ऋषियों की प्रतिज्ञा भी भंग हो जाती है।

काष्टांगार—(चाल क़वाली) कौन कहता है कि मैं तेरे ख़रीदारों में हूं।

१ चाहे गरमी से बरफ इक दम पिंघलना छोड़ दे।
चाहे पूरब से कभी सूरज निकलना छोड़ दे॥
२ पानी सरदी छोड़दे और आग गरमी छोड़ दे।
संग सख़्ती छोड़ दे और मोम नरमी छोड़ दे॥
३ चाहे बुलबुल बाग़ में जाकर चहकना छोड़ दे।
चाहे बिजली बादलों में आ चमकना छोड़ दे॥

४ पूर्व में शुक्र सितारा टिमटिमाना छोड़ दे।
चाहे उत्तर में ध्रुव अपना ठिकाना छोड़ दे॥
५ नीच है वो जो नियम अपना निभाना छोड़ दे।
मैं नहीं छोड़ूँ धर्म चाहे ज़माना छोड़ दे॥

राजा—(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

१ मेरी नज़रों में ये नर है निहायत पाकसारों में।
निभाया नियम को अपने है ये परहेज़गारों में॥
२ बचाया शील को अपने पद्म गणिका के हाथों से।
रहा साबित क़दम देखो है कितना होशियारों में॥
३ मैं खुश किस्मत हूँ ऐसे लोग हैं इस राज के अन्दर।
शुबा कुछ हो नहीं सकता है ये इमानदारों में॥

काष्टांगार तुम बड़े नेक इन्सान हो। हम तुम्हारे से बहुत खुश हैं। तुम आज से इसी शाही महल में रहा करो, ये पद्मा भी तुम्हीं को देता हूँ चूँकि यह तुम्हें प्यार करती है। तुम दोनों अपनी ज़िन्दगी ऐशो आराम से बसर करो। मैं भी आज से तुम्हें अपने राज़दारों में शुमार करूंगा और राजपाट के कार्यों में भी तुम्हारी सम्मति लिया करूंगा। तुम जिस क़दर रुपया खर्च के लिये चाहो शाही ख़ज़ाने से ले सकते हो।

(राजा का सिंहासन से उठना और पद्मावती का हाथ काष्टांगार के हाथ में पकड़ा कर दोनों की शादी करना)

(परदे का गिरना)

सीन २

महल का परदा

राजा सत्यंधर का महल में बैठे हुए नजर आना। धर्मदत्त मन्त्री का आना और दोनों का बात चीत करना।

मन्त्री—(प्रणाम करके) कहिये महाराज आज क्या पेचीदा मुआमला पेश आया जो हजूर ने महल में याद फरमाया?

राजा—मन्त्री जी आज एक ऐसे मुआमले का दिल में विचार है जिसमें आपकी सम्मति लेना अत्यन्त आवश्यक है।

मन्त्री—फ़रमाइये महाराज वह कौनसा कार्य है, दुनिया में कोई ऐसा काम नहीं जिसके पूरा करने का कोई सामान न हो कोई ऐसी मुशकिल नहीं जो आसान न हो।

राजा—(चाल इन्द्र सभा) मामूर हूँ शोखी से शरारत से भरी हूँ।

१ राजा को राज से कभी फ़ुरसत नहीं होती।
झगड़ों में राजकाज के राहत नहीं होती॥

२ हर वक्त लगा रहता है बस ध्यान राज का।
इस ग़म से किसी हाल में फरहत नहीं होती॥
३ दुनिया की ऐशो इशरतें भोगूँ मैं किस तरह।
पाबन्द होके ऐश में लज़्ज़त नहीं होती॥

मंत्री जी हमारी राय है कि यह सब राजपाट किसी को सौंप दिया जाये, इसके सिवा मुझे और कोई सूरत नज़र नहीं आती। आप बताएँ कि इसमें आपकी क्या राय है। मेरे ख्याल में तो इसमें कोई हर्ज नहीं दीख पड़ता।

मन्त्री—(चाल इन्द्र सभा) मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूँ।
१ महाराज क्या कहूँ मुझे जुरंत नहीं होती।
इस बातके सुनने की भी हाजत नहीं होती॥
२ महाराज का ख्याल है नीति के बरख़िलाफ़।
यां राज़ छोड़ने की हिदायत नहीं होती॥
३ जिसने तजा है राज मुसीबत में वो पड़ा।
हरगिज़ भी राज त्याग से राहत नहीं होती॥

महाराज आप अपने राज का काम नियत समय पर किया। ऐश करने के समय ऐश भी किया करो, यह कौन कहता है कि राज में फुरसत ही नहीं होती। हां इतना अवश्य है कि राजा को हर वक्त ऐशोआराम में नहीं पड़ा रहना चाहिये। इस बातकी अवश्य नीति में इजाज़त नहीं है।

राजा—मंत्री जी यह सब कुछ ठीक है, मैं भी नीति से खूब अच्छी तरह वाक़िफ हूँ। परन्तु इस समय तो मेरा दिल राजपाट के कामों से बिलकुल हट गया है। यही जी चाहता है कि किसी सूरत से मुझे आराम मिले और यह राज का झंझट मेरे सर से टले।

मंत्री—महाराज आप खुद बुद्धिमान् हो, आपको समझाना सूर्य को दीपक दिखाना है परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगा कि राजको त्याग कर आज तक किसी राजा ने सुख नहीं पाया।

(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

१ राज को छोड़ करके सुख नहीं पाया किसी नर ने।
न ऐसा करना बतलाया किसी मतके भी रहबर ने॥
२ गंवाई हाथ से सीता लखन मारे फिरे बन में।
राज को छोड़ कर सुख क्या मिला श्री रामचंद्र ने॥
३ पांच पांडव भी जा नौकर रहे वैराट-राजा के।
बनाई द्रोपदी बांदी राज तज कर युधिष्ठर ने॥
४ सही लाखों मुसीबत राज तज कर देख लो राजा।
सती दमयंती रानी और राजा नल बहादुर ने॥
५ पड़ा सागर चढ़ा शूली हुआ था भेंट देवी के।
तजा जब राज पद श्रीपाल कोटी भट दिलावर ने॥

६ रहा भंगी के घर मुरदे जलाये जा मसानों में।
बिके रोहतास तारा जब तजा पद हरिश्चन्द्र ने ॥

राजा—मैं राजपाट के झगड़ों से फ़ारिग हो कर ऐशो आराम भी करूंगा और साथ साथ धर्म ध्यान भी करूंगा। इस समय न आराम ही मिलता है न राज पाट का काम काज ही ठीक तौर से चलता है।

मन्त्री—(चाल कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है)।

१ हुवा क्या गर किसी ने मुद्दतों सिजदे में सर पटका।
किये फ़ाके रखे रोज़े कुवें में सर के बल लटका ॥
२ ऐशो आराम में जाती रहे है आबरू सारी।
कि जैसे एकदम बहता है पानी फूट कर मटका ॥
३ खुदा की राम की दसतार गर बांधी तो क्या बांधी।
है ला हासिल न गर बांधा अदाए फरज़ का पटका ॥
४ पृथ्वीराज और जयचन्द से कुछ तो सबक़ सीखो।
विषयों में जो फंसा वो उमर भर दुख में रहा अटका ॥
५ फिराये भी अगर माला के या तसबीह के दाने।
तो मत समझो कि मिट जायेगा योंही मौत का खटका ॥
६ किसी ने हज किया और कोई तीरथ भी गया तो क्या।
अगर अपना फरज़ छोड़ा तो वो योंही फिरा भटका ॥

७ करे निष्काम जो कारज वही तो चैन पाता है।
अय राजा इक इबादत से कभी मिटता नहीं खटका ॥

राजा—मंत्री जी आपका कहना सब बजा है। परन्तु अब मुझे धर्म कर्म का उपदेश बिलकुल नहीं भाता। बेहतर है आप ख़ामोश होकर बैठ जाएँ।

मंत्री—(शैर)

१ ख़याल आता है मुझको राजका महाराज क्या कीजे।
मैं चुप हूँ मेरी बातों का न कुछ दिल में गिला कीजे ॥

(महारानी विजिया सुन्दरी का आना। धर्मदत्त मंत्री का उठकर प्रणाम करना, महारानी का सिंहासन पर बैठना। धर्मदत्त का महारानी जी से अर्ज करना।)

मंत्री—महारानी जी आज राजा साहिब ने राजपाट छोड़ने का यकायक विचार कर लिया। मैंने तो इन्हें धर्म-नीति राजनीति खूब अच्छी तरह से समझाई, परन्तु इनके एक समझ में नहीं आती। आप विद्वान् हैं कृपा करके आप इन्हें समझाएँ।

रानी, (चाल) गये दोनों जहान नज़र से गुज़र, तेरी शान का कोई बशर न मिला

१ अय महाराज मैं भी करूं कुछ बयां,
गर हुकम हो तो मैं अपनी खोलूं ज़ुबां।
मुझे पहले ही से ध्यान था राज का,
कि बिगतड़ी चली जा रही है दशा ॥

२ मैंने फिर भी किसी से ज़िकर न किया,
भेद अपने ही दिल में छिपा कर रखा।

आज तो खुद बखुद भेद खुल ही गया,
हाय ये क्या हुवा हाय ये क्या हुवा ॥
३ स्वप्न में भी मुझे ये नहीं था गुमां ॥
खुद बखुद भेद हो जायेगा यों अयां ।
भेद कैसे भला रह सके था निहां,
खैर कब तक मनाती यूं बकरे की मां ॥
४ क्यों बिचार हुवा राज के त्याग का,
मुझे दीजे बता है ये क्या माजरा ।
यक बयक तुमने दिल में ये सोचा है क्या,
ग़ौर कीजे मेरे हाल पे भी ज़रा ॥
५ फोड़ कर अपना सर मैं गंवादूंगी जां,
देखना और ही गुल खिला दूंगी यां ।
मानजा, मानजा, मानजा, मानजा,
अय पिया अय पिया अय पिया अय पिया ॥

राजा—अय मेरी प्राणप्यारी मेरा दिल राज पाट से बिलकुल उचट गया है । राज में बहुत दुख हैं अब तो यही जी चाहता है कि किसी तरह राज पाट त्याग कर महलों में रहूँ और ऐशोआराम से अपनी जिन्दगी बसर करूं, कहिये इसमें आपकी क्या राय है ।

रानी–(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ।
१ प्रभु मैं क्या कहूँ दोनों तरफ से मेरी मुशकिल है ।
इधर भी मेरी मुशकिल है उधर भी मेरी मुशकिल है ॥

२ तुम्हारा गर कहा मानूँ तो सारा राज जाता है।
राज मारग बिगड़ता है यहां भी मेरी मुशकिल है॥

३ अगर इनकार करती हूँ सती के पद से गिरती हूँ।
धर्म में दोप लगता है यहां भी मेरी मुशकिल है॥

४ पती जी आप मालिक हैं जो मन आये वही कीजे।
मेरे हां या नहीं कहने में राजा मेरी मुशकिल है॥

राजा–प्राणप्यारी घवराओ नहीं जो कहना है शौक़ से कहो मैं तुम्हारी हर वात ध्यान से सुनूँगा।

रानी–(चाल) खुदाया कैसी मुसीवतों में ये हींद वाले पड़े हुवे हैं।

१ प्रभुसे हरदम यही दुआ है कि मुझको प्यारी स्वतंत्रता हो।
वलासे वन जाऊं वन में पक्षी परंतु प्यारी स्वतंत्रता हो॥

२ जो जीव जलथल आकाश मंडल बिहार करते स्वतंत्रता से।
उन्हींको धनहै कि जगमें उनको सदा ही प्यारी स्वतंत्रता हो॥

३ है उनको धिक्कार धन की ख़ातिर जो खुद पराधी हो रहे हैं।
नहीं हैं हम राजधन के ख्वाहां यही तमन्ना स्वतंत्रता हो॥

४ नहीं है परवा अगर विधाता वनादे मछली पतंग कुछ भी।
वनादे घर चाहे जा नरक में मगर वहां भी स्वतंत्रता हो॥

५ सुखों को भोगूँ परतंत्र होकर नहीं है मंजूर मुझको राजा।
फिरूं में वनमें भी वनके जोगन मगर ये प्यारी स्वतंत्रताहो॥

६ हो आजतुम खुदमुख़तियार राजा हूँ मैं भी स्वतंत्र तेरी रानी।
दिया जो गैरों को राज तुमने तो फिर कहां ये स्वतंत्रताहो॥

राजा–प्यारी मुझे अफसोस है कि मैं अपने इरादे से नहीं फिर सकता और न आपकी बातों को स्वीकार कर सकता हूँ। मैंने मंत्री साहब और आपकी बातों को गौर से सुन लिया है और अपने दिलमें फैसला कर लिया है कि जरूर राज किसी दूसरे के सुपुर्द करूंगा और मैं आराम से महल में दुनिया के सुख भोगूँगा अब आप यह बताएं के राज किसको दिया जाये, ताज किस के सर रखा जाये।

रानी—(चाल कवाली) फैला हुआ है सारी दुनियां में जाल तेरा।

१ ये कहां थी मेरी किसमत स्वतंत्र राज होता।
महाराज राज करते मनमाना काज होता॥

२ प्रजा की उन्नति में तन मन निसार करते।
मंत्री गुणी जनों का निश दिन समाज होता॥

३ क्षत्री धर्म दिखाते, सबको सुखी बनाते।
सर पे हमारे यश का कीरत का ताज होता॥

४ खुश हूँ तेरी खुशी में समझूँगी ये ही मन में।
जाता ही क्यों करम में गर मेरे राज होता॥

५ बेहतर था आप कुछ दिन गर इन्तजार करते।
शायद करम में अपने पैदा युवराज होता॥

६ न इतना रंज होता न इतना फिक्र होता।
इस राज घर का मालिक गर कोई आज होता॥

७ दो खैर मंत्री को ये राज पाट सारा।
रहता हमारे घर में अपना जो राज होता॥

राजा-कहिये मंत्री जी आपकी इसमें क्या राय है।

मंत्री-महाराज मैं राज का प्रवन्ध करने को तय्यार हूँ, परन्तु अकेले सारे राज का इन्तजाम करना वहुत मुशकिल है सो अगर आप थोड़ी सी तकलीफ गवारा करें तो मैं हुकम वजाने के लिये तय्यार हूँ। वह यह है कि आप वेशक रात दिन महलों में आराम किया करें परन्तु सर पर ताज रखने की आप ही तकलीफ गवारा करें।

राजा-मंत्रीजी हम पसंद नहीं करते कि वराए नाम भी राज के झगड़ों में पड़ें या अपने सर पर ताज रखने की तकलीफ गवारा करें। इससे वहतर है कि कुछ दिन के लिये राज काष्टांगार को अमानत के तौर पर दे दिया जावे। काष्टांगार निहायत होशियार है। धर्मात्मा है और इमानदार है सो ताज उसीको पहिना दिया जाये। इस सूरत से राजपाट का काम भी अच्छी तरह से होता रहेगा और हमें भी ऐशो आराम करने का मौका मिलेगा।

मंत्री-(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

१ महा मूरख कमीने नीच को गुणीजन समझते हो।
ग़ज़ब करते हो जो दुर्जन को तुम सज्जन समझते हो॥
२ हलाहल को सुधारस नीम को चंदन समझते हो।
ढ़ाक के फूल को गुल, जेठ को सावण समझते हो॥
३ कंस जालिम को तुम श्री कृष्ण नारायण समझते हो।
आग को नीर दुशाशन को तुम अर्जुन समझते हो॥
४ चोर को शाह, छली को संत, रज को धन समझते हो।
गधे को अश्व अरु गीदड़ को पंचानन समझते हो॥
५ दुर्योधन को युद्धिष्टर पीत को कंचन समझते हो।
ऊंट को फील, दशानन को तुम लक्ष्मण समझते हो॥
६ जमीं को आसमाँ पाषाण को कुंदन समझते हो।
काग को हंस, नागन को हार चंदन समझते हो॥
७ हितैषी को तो अय राजा आप दुशमन समझते हो।
दग़ाबाज़ अरु कमीने ग़ैर को साजन समझते हो॥

राजा (शैर)

१ हो नहीं सकता वो भूले इस मेरे अहसान को।
किस तरह मुमकिन है इक दम छोड़दे ईमान को॥
२ राज सारा देके जब कर दूंगा उसको ताजदार।
है ये ना मुमकिन मुझे दुशमन करे अपना शुमार॥

मंत्री (शैर)

१ ज़माने से अनोखे आप दुनिया से निराले हैं।
कमीनों पे न जाने क्यों भरोसा करने वाले हैं॥
२ नहीं सुनते किसी की अपनी ज़िद पर हो तुले बैठे।
यही आसार तो इक दिन क़यामत ढ़ाने वाले हैं॥
३ न अपनी फिक्र है और न ही प्रजा की तुम्हें परवा।
यही तो ढंग हम सब पर मुसीबत लाने वाले हैं॥

मन्त्री—(चाल इन्द्र सभा) मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूँ।

राजा-मंत्री जी चाहे कुछ हो हमें काष्टांगार की ईमानदारी और परहेज़गारी पर पूरा भरोसा है अब आप ज्यादा गुफतार न करें और मुझे हैरान न करें। आप जाएं और दरबार का इन्तजाम करें, मैं भी अभी दरबार में हाज़िर होता हूँ।

(वजीर का चला जाना)

(रानी विजिया सुन्दरी का राजा को राज और प्रजा की रक्षा के लिये विषय भोगों को छोड़ने के लिये राजनीति का उपदेश देना।)

रानी-(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं।

१ ग्रहन कीजे राजनीति के ज़रा पैग़ाम को।
छोड़ दो प्रजा की ख़ातिर ऐश को आराम को॥
२ है प्रजा के दुख में दुख आराम में आराम है।
भूल जाओ तुम विषय भोगों के अब तो नाम को॥
३ धार्मिक राजा है वो और धर्म का अवतार है।
धर्म पर चलता है जो तज कर विषय को काम को।

४ अपने सुख के वास्ते मत छोड़िये इस राज को ॥
सोच लीजेगा ज़रा इस काम के अञ्जाम को ॥

राजा–महारानी मैंने राज छोड़ने का पक्का विचार कर लिया है। मंत्री जी और आप की बातों को बखूबी सुन लिया है। अब अगर आप मुझे और जियादा हैरान करेंगे तो नतीजा अच्छा न होगा, इस लिये आप ख़ामोश रहें और मुझे अपना काम करने दें।

रानी-(चाल)गये दोनों जहान नजरसे गुज़र तेरी शान का कोई वशर ना मिला।

१. तेरी आज्ञा का पालन करूंगी पिया,
चाहे इस तनमें जान रहे ना रहे।
मुझे परवा नहीं राज की पाट की,
चाहे दुनिया में शान रहे ना रहे ॥

२. तेरी सेवा करूं दिल जां से पिया,
मैंने मन में ये अपने विचार लिया।
जिसमें तेरी रज़ा उसमें मेरी रज़ा,
चाहे जीवन का सामां रहे ना रहे ॥

३. पतिवर्ता धर्म देख लीजे अभी,
जान दे दूं हुकम मुझको दीजे अभी।
सतीधर्म की परीक्षा भी कीजे अभी,
क्या ख़बर कल की इंसां रहे ना रहे ॥

४. मुझे खुद आपसे आ रही है हया,
व्यर्थ में मैंने तुमसे विवाद किया।
जा व बेजा भी मैंने कहा अर सुना,
मेरी बात का ध्यान रहे न रहे॥

५. आपका मुझे कहना भी मंजूर है,
राज तज कर के रहना भी मंजूर है।
कष्ट का मुझे सहना भी मंजूर है,
हां बला से ये प्राण रहे ना रहे॥

६. राजा दरबार में जाओ जल्दी करो,
काष्टांगार के सर पे ताज धरो।
जाके अपना तो अरमान पूरा करो,
चाहे मेरा तो मान रहे ना रहे॥

७. मुआफ़ कर दीजिये राजा मेरा कहा,
लो मैं जाती हूँ चरणों में सर को झुका।
मैं तो आज्ञा में तेरी रहूंगी सदा,
चाहे राज का सामां रहे ना रहे॥

(रानी का प्रणाम करके चला जाना) (परदे का गिरना)

सीन ३

दरबार का परदा

राजा सत्यंधर व धर्मदत्त मन्त्री व भूपाल आदि मंत्रियों का बैठे हुवे नज़र आना। राजा और धर्मदत्त मन्त्री का आपस में बात चीत करना। राजा का काष्टांगार को अपना राज पाट देना।

राजा-वज़ीर साहिब मैंने दिल में पक्का इरादा कर लिया है कि राज पाट का काम काष्टांगार को संभला दिया जावे। यह आदमी बहुत ईमानदार मालूम होता है और राजपाट का काम काज भी बखूबी कर सकता है।

धर्मदत्त-तो क्या महारानी जी ने इसके मुताल्लिक़ अपना ख़याल कुछ जाहिर नहीं किया ?

राजा-मैंने उनको भी अच्छी तरह समझा दिया है कि राज पाट का काम काष्टांगार करता रहेगा और देख भाल हम खुद रक्खेंगे।

धर्मदत्त-जैसी हजूर की मरज़ी, हमारा तो आपको समझाना फर्ज़ था मानना न मानना तो हजूर के ही अखतियार है।

राजा–अच्छा काष्टांगार और पद्मावती दोनों को हाज़िर दरबार किया जावे।

धर्मदत्त–जो हुक्म (वज़ीर का कोतवाल को काष्टांगार और पद्मावती दोनों को बुलाने के लिये हुक्म देना।

राजा और धर्मदत्त मंत्री का फिर बातचीत करना

राजा–वज़ीर साहिब, आप घबराइये नहीं, ऐसा नहीं हो सकता कि काष्टाँगार हमसे कोई दग़ाबाज़ी करे या किसी क़िसम की जाल साज़ी करे। राज की बाग डोर तो हमारे ही हाथों में रहेगी, उसको तो सिरफ़ अपने एजंट के तौर से मुकर्रर किया जा रहा है।

(कोतवाल का काष्टांगार और पद्मावती दोनों को साथ लिये हुवे दरबार में आना)

काष्टांगा–(प्रणाम करके) कहिये महाराज, आज आपने कैसे याद फरमाया ?

राजा–काष्टांगार हमारी राय है कि आज से राज पाट का काम तुम किया करो हम तुम से बहुत खुश हैं। अगर कोई खास बात पूछनी हो तो हमारे से मशवरा ले लिया करो।

काष्टाँगार–महाराज, राज का काम बड़ा कठिन है।

राजा–क्यों ?

काष्टांगार–महाराज, इतने बड़े राज को संभालना क्या कोई आसान काम है। मुझ से तो कोई और ही काम

ले लो, राज का काम तो मेरी ताक़त से बाहर है।

राजा--तुम इस बात की चिंता न करो, अगर कोई ख़ास दिक्क़त पेश आयेगी तो हम खुद हाज़िर हैं।

काष्टांगार--जैसी हज़ूर की मरज़ी।

राजा--आगे आओ (राजा खड़ा होकर अपना ताज सर से उतारता है)

काष्टांगार--(हाथ जोड़ कर) महाराज, यह ताज तो किसी और ही को पहना दो मुझे तो शर्म आती है।

राजा--शरमाओ नहीं, आगे आओ। पद्मा तुम भी आगे आओ।

(काष्टांगार का आगे आना। राजा का ताज काष्टांगार को पहनाना और अपने बराबर सिंहासन पर पद्मावती और काष्टांगार दोनों को बैठाना, काष्टांगार का नीचे मुँह किये हुवे सिंहासन पर बैठना। सब दरबारियों का झुक कर प्रणाम करना।

देवदत्ता का गाते हुवे दरबार में आना।

(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

१ तुम्हें ये ताज शाहाना मुबारिक हो मुबारिक हो।
कि खुद राजा का पहनाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥

२ ये सब क़िसमत की खूबी हैं ये हैं सब खेल कर्मों के।
रंक से भूप हो जाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥

३ मुबारिक है तुझे पद्मा राज रानी कहायेगी।
ये कर्मों का खुल जाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥

४ मिली है देखिये जोड़ी भी क्या अय देखने वालो।
है राधा कृष्ण सा बाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥

५ करम की है गति न्यारी करम ही सार है जग में।
करम से राज मिल जाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
६ खुशी का आज है मौक़ा खुशी हैं सारे दरबारी।
राज रानी के गुण गाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥

(परदे का गिरना)

सीन ४

राजा सत्यंधर के महल का परदा

विजिया सुन्दरी का रात को महल में सोते हुवे नज़र आना और खोटे स्वप्न देखना। फल पूछने के लिये राजा सत्यंधर के पास जाना। राजा का रानी को अपने अर्द्ध आसन पर बैठना और स्वप्न के फल बताना। (बात चीत)

रानी—(प्रणाम करके) महाराज, मुझे रात को तीन स्वप्न दिखाई दिये, जिनके देखने से दिल बहुत उदास है सो आप बताएं उनका क्या फल होगा।

राजा—बताओ रानी, वह स्वप्न कौन से हैं।

रानी—१ महाराज मुझे पहले तो एक कल्प वृक्ष दिखाई दिया जो कि पत्तों में खूब लद पद हो रहा था।
२ फिर वह वृक्ष हवा के ज़ोर से ज़मीन पर गिर पड़ा जिससे मेरे दिलको बहुत चोट लगी।

३ अय स्वामी, फिर मुझे वो ही वृक्ष फिर दिखाई दिया जिसमें आठ मालाएं शाखाओं में लटकी हुई थीं। स्वामी मुझे इन स्वप्नों का फल जल्द बताएं, ताकि मेरे दिल का संशय दूर हो।

राजा– (चाल राधे श्याम) (कुछ सोच कर)

१ रानी। पहिले स्वप्ने से तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा।
जो राज करेगा मन माना जिसका भारी शासन होगा॥

३ तीजे स्वप्ने से अय रानी वह शादी आठ करायेगा।
होगा बलवान धनुषधारी मानो जैसे अर्जुन होगा॥

रानी–महाराज आपने पहले और तीसरे स्वप्न का तो फल बताया परन्तु दूसरा स्वप्न तो बीच ही में छोड़ गये

राजा–(चाल राधे श्याम)

२ रानी दूजा स्वप्ना मेरे को सच पूछे दुखकारी है।
ऐसा अनुमान हुआ मुझ को इस फल से मेरा मरन होगा॥

(रानी का यह सुनते ही बेहोश हो जाना और जमीन पर गिर पड़ना। राजा का ठंडा पानी छिड़कना, रानी का होश में आना और विलाप करना।)

रानी–(चाल) खुदा खुदा न सही राम राम कहलेंगे।

१ एक आफत से मर मर के हुआ था जीना।
आयेगी हाय करम और बुसीबत कैसी॥

२ राज का ग़म तो भुलाया मैंने जूं तूं करके।
जान लेने को भी आयगी ये शामत कैसी॥

३ मैं ही मर जाऊं तो बेहतर है स्वामी पहले ।
अपनी आंखों से न देखूं है वो आफत कैसी ॥

४ दिल जला जाता है आता है कलेजा मूंह को ।
है मुसीबत पे मुसीबत ये क़यामत कैसी ॥

५ मेरे करमों में लिखा है सो भोगना होगा ।
ये तो जाहिर है भला अब मुझे राहत कैसी ॥

(राजा का रानी को तसल्ली देना ।)

राजा—प्यारी धैर्य धरो, रोने धोने से कुछ फायदा नहीं । शास्त्रों में लिखा है कि जब कोई मुसीबत सामने आये धर्म को अपने सामने रक्खे । जो हमारी क़िसमत में लिखा है वह अवश्य भोगना होगा, उस को कोई टालने वाला नहीं है । अब तुम्हें धीरज से काम लेना चाहिये । धर्म पर भरोसा रखना चाहिये । धर्म ही दुनिया में सार है । इस प्रकार हमारे कर्म अवश्य शांत हो जाएँगे । विपत्ति को नाश करने के लिये धर्म ही हमारी सहायता करेगा ।

रानी—स्वामी यह आप सच कहते हैं, परन्तु न जाने क्यों मेरा मन इतना अधीर हुआ जा रहा है, मेरी दाईं आंख रह रह कर फरक रही है । निस्संदेह कोई न कोई मुसीबत हम पे आने वाली है । गानाः—

(चाल) कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूँ ॥

१ वीर स्वामी दो बता ये क्या मेरी तक़दीर है ।
कर्म बैरी ने जो गल डाली मेरे जंजीर है ॥

२ क्या कर्म खोटे किये हैं मैंने अपनी उमर में ।
मौत की जो सामने मेरे खड़ी तसबीर है ॥

३ वीर स्वामी इस जहां में अब मेरा कोई नहीं ।
मेरा जीना तुझ पे निर्भर है तुही अकसीर है ॥

४ मेरा स्वामी और मैं दोनों शरण हैं आपकी ।
आप बिन कोई नहीं सूझी मुझे तदबीर है ॥

५ कौन आता है किसी के काम उलटे वक्त में ।
काष्टाँगार अपना समझे थे वही बे पीर हैं ॥

६ राज छोड़ा, ताज छोड़ा जान भी तय्यार है ।
ये भी चरणों में निछावर है तेरी जागीर है ॥

(राजा का रानी को फिर समझाना)

राजा—प्रिय सोच न करो, स्वप्न की बातें सच भी होती हैं और झूँट भी हो जाती हैं । तुम ने तो मुझे सच मुच मरा ही जान लिया, यह तुम्हारी भूल है । सच कहा है औरतें बड़ी भोला भाली होती हैं, झूँट बात को भी सच मान बैठती हैं, उठो उठो जरा बाग़ की सैर करो, तुम्हारी तबीयत बहल जायेगी । देखो कैसे मनोहर फूल खिल रहे हैं

जिन में क्या ही भीना सुगंधी आ रही है। कोयल शब्द कर रही है, क्या ही सुहाना समय है।

रानी—स्वामी मुझे कुछ नहीं सुहाता। मेरा दिल अधीर हुआ जाता है, कलेजा मुँह को आता है। स्वामी आप मुझे सब तीर्थों के दर्शन तो करा दो, संभव है हमारे कुछ दुष्कर्मों का नाश हो जावे।

राजा—अच्छा प्यारी चलो (दोनों का चल पड़ना)

(राजा व रानी दोनों का केकई यंत्र में बैठ कर तीर्थ यात्रा को रवाना होना)

(परदे का गिरना)

सीन ५
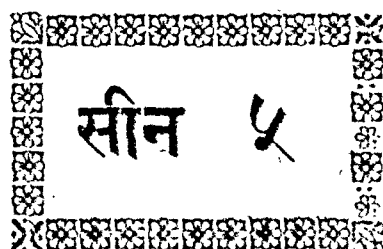
दरबार खास का परदा

काष्टांगार व धर्मदत्त मंत्री व भूपाल मंत्री का दरबार में बैठे हुए नजर आना।
काष्टांगार के साले मदन का भी दरबार में बैठे हुए दिखाई देना।
काष्टांगार और धर्मदत्त मंत्री का आपस में बात चीत करना

। (वार्तालाप)

काष्टांगार—मंत्री जी हम ने सुना है कि राजा सत्यंधर अपनी रानी को लेकर तीर्थ यात्रा करने गये हैं।

धर्मदत्त—जी हां, सुना तो मैंने भी है।

काष्टांगार--यह भी सुना है कि रानी आजकल गर्भ से है।

धर्मदत्त-जी हां यह भी सत्य है।

काष्टांगार--अगर राजा के लड़का पैदा हो गया तो वह अपना राजपाट मुझ से छीन लेंगे, इसके लिए तुमने क्या सोचा है ?

धर्मदत्त--(वज़ीर का दिल ही दिल में सोचना कि काष्टांगार के दिल में कुछ न कुछ वदी मालूम देती है। (कुछ सोच कर) हां महाराज इसमें क्या शक है। वाक़ई अगर उनके पुत्र पैदा हो गया तो वह अपना राज पाट आप से अवश्य लेलेंगे। परन्तु जब तक पुत्र जवान न हो जायेगा तब तक तो राज आप ही करेंगे।

काष्टांगार--वज़ीर साहिब यह बात हमारे शायां नहीं है। अगर पुत्र पैदा हो गया तो हमारी कुछ इज़्ज़त न रहेगी, लोग यही कहेंगे कि लड़का बड़ा होने पर अपना राज पाट खुद संभाल लेगा, काष्टाँगार तो ऐजांट के तौर से काम कर रहा है, इससे हमारी आबरू में वट्टा लग जावेगा और यह शान न रहेगी।

धर्मदत्त—तो फिर आप ने क्या सोचा ?

काष्टांगार—हमारी राय है कि राजा व रानी दोनों को संतान उत्पत्ति से पहले ही मरवा दिया जावे ताकि यह कांटा भी हमारे रास्ते से दूर हो।

धर्मदत्त—महाराजय ह तो वहुत अनुचित बात है जो ऐसा आपने अपने दिल में सोचा है। राजा ने आपके साथ कितनी भलाई की है और आप उन्हें मरवाने की सोच रहे हैं।

काष्टांगार—वज़ीर साहिव खामोश रहिये। हमारी बिल्ली और हमें ही मियाऊं। नमक हमारा खाता है और भलाई उनकी सोच रहा है।

धर्मदत्त—महाराज मैंने उनका नमक वहुत खाया है, मैं अपने स्वामी के लिए कभी बुराई नहीं सोच सकता।

(शेर)

१ मैं नहीं सोचूं बुराई अपने स्वामी की कभी।
चाहे मारो चाहे छोड़ो ये है मरजी आप की॥

२ उमर सारी ही गुज़ारी मैंने उनके पास में।
मार कर बांधूं मैं कैसे सर पे गठरी पाप की॥

३ उनको गर मालूम होजाये बुराई आप की।
खुद ही मर जायेंगे हद हो जायेगी संताप की॥

काष्टांगार-देखो वजीर साहिव तुम्हें हमारा हुक्म बजाना होगा। राजा को मारने के लिये हमारे साथ जाना होगा।

धर्मदत्त-महाराज यह हरगिज़ नहीं हो सकता मैं हरगिज़ ऐसे बुरे काम में आपका साथ नहीं दे सकता।

गाना। (चाल) मरते मरते मर गये लेकिन न छोड़ा आन को।

१. मारने राजा को तेरे साथ जा सकता नहीं।
उनको हरगिज़ शकल मैं अपनी दिखा सकता नहीं॥

२. जिसका खाया हो नमक सारी उमर घर बैठकर।
किस तरह मानूं हुकम हरगिज़ बजा सकता नहीं॥

३. चाहे मारो चाहे छोड़ो ये है मरज़ी आपकी।
हां में हां मैं आपकी हरगिज़ मिला सकता नहीं॥

४. जान गर मांगो तो हाज़िर है तुम्हारे वास्ते।
पर विभिच्छण बनके मैं लंका जला सकता नहीं॥

५. मंत्री पद से भी गर चाहो हटा दीजे मुझे।
व्यर्थ में पर खून स्वामी का बहा सकता नहीं॥

६. क्या करूं लाचार हूँ कुछ बस नहीं चलता मेरा।
पाप का हरगिज़ भी सर बोझा उठा सकता नहीं॥

७. मुझको भी ऐसी ही थी उम्मीद तेरी ज़ात से।
नीच लोगों में वफा का अंश आ सकता नहीं॥

८. है बहुत अफसोस मुझको तेरी इस हरकात पर।
जो तू खुद ग़रज़ी से अपनी बाज़ आ सकता नहीं॥

९. मानले मेरा कहा कुछ ध्यान कर औक़ात पर।
तेरी क्या हसती है तू उनको मिटा सकता नहीं॥

१०. मैं तो हूँ मजबूर ऐसा काम करने के लिये।
नीच कारज में कभी हिस्सा बटा सकता नहीं॥

काष्टांगार–अच्छा खामोश होजा अगर एक भी लफ़्ज़ ज़ुबान से और निकाला तो ज़ुबान अभी क़लम करवादी जावेगी। तुझे तेरी इस बद ज़ुबानी का मज़ा अभी चखाता हूँ।

(राजा का कोतवाल को आवाज़ देना)

काष्टांगार—कोतवाल।

कोतवाल–जी हज़ूर।

काष्टांगार–जाओ सेनापति को जल्द दरबार में हाज़िर करो।

कोतवाल–जो हुकम (चला जाना और सेनापति को साथ लिये हुवे आना)

काष्टांगार-- (सेनापति को देखकर) सेनापति हम हुकम देते हैं कि धर्मदत्त मंत्री को फौरन गिरफतार कर लिया जावे और उमर भर इसे जेल में रक्खा जावे, इसने हमारी हुकम अदुली की है और बदज़बानी से पेश आया है।

सेनापति–महाराज मुझे हथकड़ी लगाते भय आता है कहीं राजा सत्यंधर को मालूम होगया तो न जाने वह क्या सलूक मेरे साथ करेंगे, कारण कि धर्मदत्त मंत्री उनके महामन्त्रियों में से हैं।

काष्टांगार–राजा सत्यंधर कौन होता है। इस समय राजा मैं हूँ, मुझे अखतियार हैं चाहे जिसको बख्श दूं चाहे जिसको कारागार में डाल दूं। तुम्हें इनमें

ज़ियादा बोलने की जरूरत नहीं, हम हुकम देता है कि धर्मदत्त को फौरन गिरफ्तार करके कारागार में पहुँचा दिया जावे।

(सेनापति का धर्मदत्त मंत्री के हथकड़ी लगाकर कारागार की ओर ले जाना)

काष्टांगार–(अपने साले मदन से) मदनलाल तुम हमारी इस कार्य में क्या मदद करोगे ?

मदन--महराज मैं अब तक तो चुप था कि बीच में बोलना उचित नहीं है परन्तु अब बोलना ही पड़ता है कि यह वात आपने बिलकुल अनुचित की है। धर्मदत्त मंत्री का इसमें कोई अपराध नहीं था। आपने उसकी सम्मति ली थी और वजीर का काम राजाको अपनी ठीक राय देने का है। आपका राजा सत्यंधर ने क्या बिगाड़ा है जो आप उनको मृत्यु दंड देना चाहते हो। उन्होंने तो आप के साथ कितना अच्छा बर्ताव किया है कि अपना राज पाट भी आपकी नज़र कर दिया है, इधर आप उनको मारने की फिकर कर रहे हो।

काष्टांगार–देखो मदनलाल तुम्हें अच्छी तरह से मालूम है कि हमने धर्मदत्त मंत्री को महज़ इसी बिना पर कैद किया है कि उसने हमारी हुकम अदूली की थी। अगर तुमने भी हमारा हुकम नहीं माना तो तुम्हारे साथ भी वही सलूक किया जावेगा।

मदन-महाराज वे गुनाह पर छुरी चलाना महा पाँप है और अपने राजा को तो क़तल करने में पांप पापों का भागी होना पड़ता है।

काष्टांगार-पाप का बच्चा ! जल्द बताओ राजा सत्यंधर को मारने में हमारा साथ दोगे या नहीं ?

मदन-(शैर)

१. वड़ी मुशकिल में जां आई भला अव क्या किया जाये।
इधर रोज़ी भी जाये जेल में भिजवा दिया जाये॥

२. उधर उस वेगुनाह राजा पे मुझको रहम आता है।
विचारे ने विगाड़ा क्या जो उसका खूं पिया जाये॥

(कुछ सोच कर) अच्छा महाराज आप जैसा भी हुकम दें मैं बजा लाने के लिये तय्यार हूँ।

काष्टांगार-(भूपाल मन्त्री से) भूपाल तुम्हारी इसमें क्या राय है। बताओ राजा और रानी दोनों को किस तरह क़तल किया जा सकता है ?

भूपाल-क़तल करना तो बिलकुल आसान है आप मुझे हुकम दें, मैं इस काम को खुद सरअंजाम दे सकता हूँ।

काष्टांगार-शाबाशः मुझे तुम से ऐसी ही उम्मीद थी। आख़िर क्या सोचा मुझे भी बताओ तो सही ?

भूपाल-मैं आज ही चार आदमी इस काम के लिये नियत

कर दूंगा कि राजा व रानी जिस समय यात्रा से वापिस आएं, हमें एक दम ख़बर करदें। इधर मैं सेनापति को तय्यार रखूंगा कि उसी वक्त फौज को लेकर राजा के महल पर चढ़ाई करदे, बस इस सूरत से हम आसानी के साथ राजा व रानी दोनों को क़तल कर सकते हैं। कारण कि वह तो उस समय बिलकुल बेखबर होंगे।

काष्ठांगार-बिलकुल ठीक है। भूपाल तुमने तरकीब तो खूब सोची है। मैं आशा करता हूं कि यह काम तुमसे ही बन आएगा। अच्छा तुम जाओ और इस काम को पूरा करो, देखो होश्यारी से काम लेना, किसी को कानों कान ख़बर न हो। वरना लेने के देने पड़ जाएंगे।

भूपाल-अजी आप इस बातकी चिन्ता ही न करें, ऐसी कच्ची गोली तो मैंने कभी खेली ही नहीं। (चला जाना)

(परदे का गिरना)

सीन ६

राजा सत्यंधर के महल का परदा

चार आदमियों का महल के बाहर पहरा देते हुवे नजर आना। आकाश में

केकईयंत्र का आना और चारों आदमियों का भागकर काष्टांगार को खबर देना। काष्टांगार का फौज को लेकर राजा सत्यंधर के महल पर चढ़ाई करना। भूपाल मंत्री का भी काष्टांगार की ओर से लड़ने के लिये आना। सत्यंधर का विजिया सुन्दरी सहित केकईयन्त्र से उतरना। दरवान का घबराये हुवे राजा सत्यंधर के पास आना।

दरवान-(घबराई हुई आवाज में) महाराज अनर्थ हो गया। काष्टांगार अपनी फौज़ लिये हुवे आपको मारने के लिये आ रहा है। होश्यार हो जाओ।

सत्यंधर-हैं! क्या कहा, क्या काष्टांगार मुझे क़तल करने के लिये आ रहा है?

दरवान-जी हां।

सत्यंधर-बिलकुल झूंठ वह मेरे साथ हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकता।

(शेर)

१. राज भी मैंने उसी को दे दिया।
 ताज भी मैंने उसी को दे दिया॥
२. फौज भी मैंने नज़र करदी उसे।
 है ख़ज़ाना भी उसी के हाथ में॥
३. क्या रखा है अब हमारे पास में।
 क्यों वह आता क़तल करने को हमें॥

दरवान-महाराज विश्वास कीजिये, अब विचार करनेका

समय नहीं है। काष्टांगार फौज को लिये नज़दीक ही आ पहुँचा है।

सत्यंधर-अच्छा तुम जाओ और सदर दरवाज़ा बन्द कर दो।

दरबान-अच्छा महाराज मैं जाता हूँ आप अपने बचने की कोई तदबीर जल्द सोचलें। (चला जाना)

(रानी का आंसू बहाते हुवे नज़र आना और अपनी किस्मत को दोष देना) (विलाप करना) राजा रानी का जवाब सवाल। राजा का आंसू बहना। (चाल) आराम के थे क्या क्या साथी जब वक्त पड़ा तब कोई नहीं।

रानी--१. मत रो मत रो मत रो प्यारे।
अब रोने से क्या होता है॥
मेरी भी किसमत सोती है।
तेरा भी मुक़द्दर सोता है॥

राजा-२. प्यारी मेरे को होश न था।
था विषय भोग में फंसा हुआ।
अब मेरे को है ज्ञान हुवा।
जो सोता है सो खोता है॥

रानी-३. स्वामी मैंने थी लाख कही।
नीचों में वफा होती ही नहीं॥
अब आया कि ना तुम्हें यकीं।
कि नीच नीच ही होता है॥

राजा-४ प्यारी है मेरा अपराध सभी, मैंने इक तेरी नहीं सुनी।
गो तूने लाखों वार कही, दे राज नीच को खोता है ॥
रानी-४ स्वामी तुमराभी दोष नहीं, जो होनाहै होता है वही।
करमन गत टारी नहीं टरे, काटे है वही जो बोता हैं ॥
राजा-६ रानी कर क्षमा दोष मेरा, है पलभर का स्वामी तेरा,
सत्यंधर करमोंका फेरा, अपनी किस्मत को रोता है ॥

प्यारी अब अफसोस करना बिलकुल फिजूल है। मैं अपनी करनी पे खुद पछता रहा हूँ। यह मेरी ही भूल का नतीजा है जो काष्टांगार को राज दिया। अब हमें जल्दी करनी चाहिये देखो काष्टांगार की फ़ौज दरवाजे को तोड़ रही है। मेरी राय में तुम इसी केकई यंत्र में बैठ कर उड़ जाओ और अपनी जान बचाओ क्योंकि तुम गर्भ से हो। मैं काष्टांगार से युद्ध करूंगा।

रानी—महाराज तुम भी इसी केकईयंत्र में बैठ जाओ।

राजा—प्यारी यह हरगिज नहीं हो सकता, मैंने क्षत्री कुल में जन्म लिया है। क्षत्रियों का यह धर्म नहीं कि वह पीठ दिखा कर रण से भाग जायें। मैंकाष्टांगारसे युद्ध करूंगा, अगर जिन्दा रहा तो फिर मिलूंगा।

रानी—महाराज तुम किस तरह इतनी फौज का अकेले मुक़ाबला करोगे, मुझे तो डर लगता है दिल घबराता है। कलेजा मुंह को आता है।

राजा-प्यारी लो जल्दी करो अब ज़ियादा बात करने का अवसर नहीं है। केकई यंत्र में बैठ जाओ, परमात्मा ने चाहा तो तुम्हारे अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा। अगर मैं मारा गया तो मेरा पुत्र अवश्य अपने बाप का बदला उस काष्टांगार से लेगा।

(रानी का केकई यंत्र में बैठना। राजा का चाबी लगाना और केकई यन्त्र का आकाश में उड़ जाना। राजा का विलाप करना।

राजा--(चाल) करम गत टारे नहीं टरे।

करम की लीला अपरम्पार, करम के वश में है संसार ॥
१ छिन में राव करे रंकन को, छिन में करदे ख़्वार ॥
२ छिन में राव गदा हो जावे, करमों के अनुसार ॥
३ जैसे करम करे जो कोई, वैसे फल दातार ॥
४ जो प्राणी शुभ करे हैं, पहुँचे स्वर्ग द्वार ॥
५ जो दुष करम करे है कोई, पड़े निगोद मंझार ॥
६ अच्छे बुरे करम का करना, है अपने आधार ॥
७ अपनी करनी से देखो मैं, आज हुआ लाचार ॥
८ करमन गत टर सकती नाहीं, करम अटल व्यवहार ॥
९ अद्भुत लीला है करमों की, जानत सब संसार ॥

हां-करम की विचित्र गति है, इन करमों ने क्या नहीं किया। श्री रामचन्द्र जैसों को जंगल की ख़ाक

छाननी पड़ी। कहां इधर युवराज बनने की तय्यारियां कहां उधर चौदह साल वनोवास का हुकम। कहां राजा हरिश्चन्द्र जिन्होंने कर्म योग से राज पाट का त्याग करना पड़ा और भंगी के यहां अपने आपको फ़रोख़्त करना पड़ा। कौन ऐसा कठोर हृदय है जिसका दिल इन कथाओं को सुन कर न पसीज उठेगा। सत्यंधर यह भी तेरे कर्मों का ही दोष है जिसके कारण तू आज इस दशा में है। मुझे भी देखना है यह करम क्या क्या खेल खिलाते हैं।

(शेर) मेरी क़िसमत में क्या लिक्खा है इसको आजमाऊंगा।
बुरा लिखा है या अच्छा नतीजा देख पाऊंगा॥

(काष्टांगार की फौज का सदर दरवाजे को तोड़ना। काष्टांगार का ललकारते हुए महल में दाखिल होना। सत्यंधर का मयान से तलवार निकालना और जंग के लिये तैयार होना।

काष्टांगार–(सेनापतिसे) देखते क्या हो, यक दम राजा व रानी दोनों को क़तल करदो।

फौज का आगे बढ़ना। सेनापति का राजा सत्यंधर को सामने खड़े देख कर शर्म से पीछे हट जाना। फौज का भी पीछे को हटना राजा काष्टांगार का फौज को पीछे की ओर हटते हुए देख कर खुद आगे बढ़ना और लड़ाई के लिये आमादा होना)।

सत्यंधर–(काष्टांगार को आगे आते हुये देख कर)

(शेर) १ अरे बदज़ात तेरी किस लिये इतनी हवा बिगड़ी।
कि मेरे साथ में जो जंग तू करने आया है॥

२. शरम आती है मुझको क्या लड़ूं मैं साथ में तेरे।
कि मेरे हाथ से तू किस लिये मरने को आया है॥

काष्टांगार-१. शुजा हो तुम ज़माने में यही सुनने में आया है।
शुजाओं में सुना है नाम भी तुमने लिखाया है॥

२. सुना है सैंकड़ों ही मातहत हैं आपके राजा।
हजारों को मैदाने जँग में तुमने सुलाया है॥

सत्यंधर-१. न कर बकवास मेरे सामने पछतायेगा वरना।
चला जा लौट जा क्यों मौत को तूने बुलाया है॥

२. शरम आती नहीं ओ बे हया लड़ते हुवे तुझको।
कि मेरी फौज ले मेरे ही से लड़ने को आया है॥

काष्टांगार-१. न कर बकवास तू भी हाथ दो दो देखले करके।
होश से बात कर तू किसलिये यूं बुड़बुड़ाया है॥

२. ज़रा मैं भी तो देखूँ किस क़दर है सूरमा रण का।
दूध अम्मां ने तेरी किस क़दर तुझको पिलाया है॥

सत्यंधर-१. चखाता हूँ मज़ा तुझको तेरी इस बदज़ुबानी का।
पता लग जायेगा जल्दी ही तुझको दूध पानी का॥

२. ये तेरा जोश भी ढल जायेगा सारा जवानी का।
न जाने किस लिये तू ज़िन्दगी से तंग आया है॥

काष्टाँगार-१. ज़िकर तू किस लिये करता है मेरी ज़िंदगानीका
तुझे क्या फिकर है ये तो बता मेरी ज़वानी का॥

२. आख़री मूँह जाकर देख आ तू अपनी रानी का।
तू बच सकता नहीं अब मारने को काल आयाहै ॥

(काष्ठाँगार का कमान पर तीर चढ़ाना और राजा सत्यंधर की ओर छोड़ना। राजा सत्यंधर का तीर को रास्ते में काट देना। काष्ठांगार का हैरान होना। काष्ठांगार का फिर दूसरा तीर छोड़ना। सत्यंधर का फिर रास्ते ही में काट देना काष्ठांगार का शरमिंदा होना और फौज की ओट में जाकर अपना मूंह छिपाना सेनापति का फौज को आगे बढ़ कर हमला करने का हुकम देना। राजा सत्यंधर और फौज का काफी देर तक युद्ध होना। काष्ठाँगार की फौज का घायल होकर जमीन पर गिर पड़ना, और खून की नदियों का बह जाना सत्यंधर को काष्टाँगार को ललकारना कि वह फौज को क्यों मरवा रहा है, खुद लड़ने के लिये मैदान में क्यों नहीं आता। काष्टांगार का मैदान में लड़ने के लिये न आना। राजा सत्यंधर को वैराग होना कि मैंने फौज को योंही घायल कर दिया। यह बेचारे तो पैसे के नौकर हैं, इनकातो कोई अपराध ही नहीं था देखो यह लोग दो पैसे के लिये जान पर खेल जाते हैं। सत्यंधर फौज ने तेरा क्या बिगाड़ा था जो तूने इनको घायल किया, इस प्रकार के विचार करते करते राजा सत्यंधर एक पद्मासन पर बैठ जाते हैं। काष्टांगार धोके से पीछे की ओर आता है और राजा सत्यंधर को क़तल कर देता है। इस प्रकार राजा सत्यंधर काष्टांगार के द्वारा मारे जाते हैं)।

(परदे का गिरना)

सीन ७
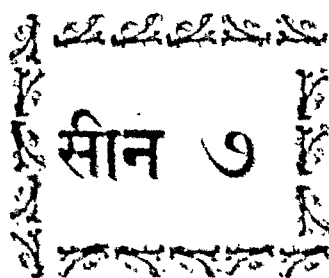
जंगल का परदा

मोरई यंत्र का शमसान भूमी में जाकर गिरना और गिरते ही रानी विजया

सुन्दरी के पुत्र पैदा होना। रानी विजयासुन्दरी का पुत्र को गोदी में लिये हुये विलाप करना। यह शमशान भूमि उसी राजपुर नगरी की शमशान भूमि है।

विजिया सुन्दरी (चाल) करम गत टारी नाहीं टरे !

१ राज हरिश्चन्द्र ने तज कर। क्या क्या कष्ट भरे ॥क०
२ सीता को हर ले गया रावण। सोने की लंक जरे ॥क०
३ कौरव पांडव भाई भाई। लड़ लड़ भूम परे ॥क०
४ धनवे प्यारी कमलश्री को। घर से बाहर करे ॥क०
५ सीता महा सती पे जग ने। क्या क्या दोष धरे ॥क०
६ श्रीपाल कोटीभट राजा। सागर मांही परे ॥क०
७ राजा नल जब राज हार कर। साथी जाये करे ॥क०
८ सभा वीच बेशरम दुशासन। द्रोपदी चीर हरे॥क०

अय पुत्र तू ऐसे समय में पैदा हुआ है, जिसमें तेरी पैदाइश के समय कोई खुशी नहीं मना सकते। अगर आज तेरे पिता राजगद्दी पर होते तो न जाने क्या क्या जशन मनाये जाते, किस क़दर रुपया लुटाया जाता, कितने ही भूखों को अन्न दिया जाता। सारे शहर में रोशनी होती और तेरे जन्म दिन के गीत गाये जाते। नक़्क़ारे व नौवतखाने विठाये जाते, सब कैदी कारागार से छोड़ दिये जाते, मगर नहीं इस समय हमारा मुक़द्दर सोया हुआ है। तेरा पिता काष्टांगार ने ज़रूर मौत की नींद सुला दिया होगा। कहां तमाम फौज का मुक़ाबला

और कहां अकेले तुम्हारे पिता। हाय मेरे पुत्र अब तू ही जिन्दगी का सहारा है, जिस पर मैं सारी उम्मीदें बांध रही हूँ। मेरा जीवन तेरे ही पर निर्भर है, मुझे तेरे पर पूरा विश्वास है कि तू बड़ा होकर अपने पिता का बदला उस बदज़ात काष्टांगार से लेगा, मैंने भी इसी उम्मीद को रखते हुए अपनी जान बचाई है, वरना मैं भी तेरे पिता के साथ ही अपनी जान पर खेल जाती। मुझे ही संसार में ज़िदा रह कर क्या करना था।

(सिद्धार्थी देवी का आकाश से आते हुए दिखाई देना और वृक्ष की ओट में छिप कर रानी विजिया सुन्दरी का विलाप सुनना)

(चाल) वीर तेरी क्या निराली शान है।

१ इस जहाँ में अब हमारा कौन है।
वीर स्वामी के सिवा कोई नहीं॥

२ सैंकड़ों थे कल हमारे पासवाँ।
हाय बिगड़ी में रहा कोई नहीं॥

३ मेरे प्रीतम भी जहाँ से चल बसे।
वीर स्वामी अब मेरा कोई नहीं॥

४ राज भी सरताज भी जाता रहा।
तुम सिवा अब दूसरा कोई नहीं॥

५ तेरे चरणों में मेरा प्रणाम है।
रहम कर अब आसरा कोई नहीं।

६ ये तो माना कर्म हैं उल्टे हुए ।

फिर भी तुमको तो गिला कोई नहीं ॥

७ तुम ने लाखों को उतारा पार है ।

क्या अभागन की दवा कोई नहीं ॥

(सिद्धार्थी देवी का रानी विजिया सुन्दरी के सामने आकर खड़े हो जाना)

सिद्धार्थी--रानी तू अफसोस न कर जो होना था हो चुका, अब तेरा शुभ करम का उदय आ गया है ।

विजियासुन्दरी--बहिन तुम कौन हो ?

सिद्धार्थी--मैं देवलोक से तेरी सहायता के लिये आई हूँ ।

विजियासुन्दरी--क्या मेरी सहायता के लिये, नहीं नहीं तुम मुझसे हंसी कर रही हो, बहिन हंसी न करो दुखी आदमी को हंसी अच्छी प्रतीत नहीं होती ।

सिद्धार्थी--नहीं बहिन मैं तुम से हंसी नहीं कर रही, मेरी बात पर विश्वास करो ।

विजियासुन्दरी--(शैर) (चाल) वीर क्या तेरी निराली शान है ।

१ जबकि अपने ही पराये हो गये ।

दूसरों को गर्ज़ क्या आएं यहाँ ॥

२ तुम हो देवी मैं दुखों की खान हूँ ।

देवियों का फर्ज़ क्या आएं यहाँ ॥

३ आपको क्या ग़र्ज़ है संसार से ।
पूछने है मर्ज़ क्या आएं यहां ॥

सिद्धार्थी–गाना (चल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ।

१ तुम्हारी आहोज़ारी ने असर ऐसा दिखाया है ।
ज़मीं चकराई है और आसमां भी थरथराया है ॥

२ न जाने क्या भला जादू भरा है आह में तेरी ।
कि राजा इन्द्र का आसन भी तूने डगमगाया है ॥

३ वो गहरी नींद में सोया हुआ था सेज पर अपनी ।
यकायक चोंक कर बोला मुझे किसने जगाया है ॥

४ बुलाकर इन्द्र ने मुझ को हुक्म देकर यहां भेजा ।
कि जा और देखकर आ किसने आसन थरथराया है ॥

५ कहा यों भी जहां तक हो सके उसकी मदद करना ।
बड़ी हस्ती है वो जिसने मेरा आसन हिलाया है ॥

६ हुक्म पाते ही अय रानी मैं तेरे पास आई हूं ।
बतादे माजरा क्या है तुझे किसने सताया है ॥

७ तेरे इस पुत्र में शक्ति ज़माने से निराली है ।
बड़ा ही भाग्यशाली है स्वर्ग से चय के आया है ॥

८ इसी के भाग्य से तेरा मुक़द्दर जाग उठा है ।
तेरी इमदाद करने को स्वयं इन्द्रराज आया है ॥

९ मैं हाज़िर हूं तेरी ख़ातिर हुक्म दे दूं बजा लाऊं ।
इशारा देख लो करके बिलक्षण सर्ग माया है ॥

१० रचा था वास्ते सीता के अगनीकुण्ड मैंने ही।
बना कर आग को पानी धर्म मैंने बचाया है॥
११ यक़ीं करले कि अब शुभ कर्म रानी आ गया तेरा।
हुक्म दीजे मुझे किस काम की खातिर बुलाया है॥

विजियासुन्दरी--(शैर)

हुकम तो दे नहीं सकती अर्ज़ ये है तुम्हारे से।
मेरे इस पुत्र को पालो गर्ज़ ये है तुम्हारे से॥

देवी यह पुत्र मुझे अपनी जान से प्यारा है, जिस तरह भी हो तुम इस की रक्षा करो।

सिद्धार्थी-रानी तुम कुछ चिन्ता न करो, मैं अभी सब काम ठीक किये देती हूँ। सामने देखो वह सेठ गंधोत्कट आ रहा है वह अपने मृतक पुत्र को यहीं दबाएगा। इसको मुनि ने बता रक्खा है कि जब तू अपने मृतक पुत्र को शमशान भूमि में दबाने जाएगा तो तुझे वहां से एक जीवित पुत्र मिलेगा, तू उसी को अपना पुत्र समझ कर पालियो, वैसे तेरी क़िसमत में अभी कोई पुत्र नही है।

रानी और सिद्धार्थी देवी का उस सेठ की ओर देखना। सेठ का खड्डा खोद कर मृतक पुत्र को दवाना। सेठ का इधर उधर कोई चीज ढुंढते हुए नज़र आना।

सिद्धार्थी-(आगे बढ़कर) सेठ जी क्या ढून्ड रहे हो ?

गंधोत्कट--कुछ नहीं।

सिद्धार्थी—आखिर कुछ तो ढून्ड ही रहे हो ना।

गन्धोत्कट—मुझे मुनि महाराज ने बताया था कि तू जब अपने मृतक पुत्र को दबाने के लिए शमशान भूमि में जाएगा तो वहाँ से तुझे एक जीवित पुत्र की प्राप्ति होगी, मैं उसी को ढून्ड रहा हूं परन्तु मिला नहीं।

सिद्धार्थी—सेठ जी, मेरे साथ आइये।

गन्धोत्कट सेठ और सिद्धार्थी का रानी के पास जाना। सिद्धार्थी देवी का रानी की गोद से बच्चा लेकर सेठ की गोद में देना। सेठ का बच्चे को अपनी छाती से लगाना।

सिद्धार्थी—देखो सेठ जी, अब तुम बहुत होश्यारी से काम लेना, मैं देवलोक से इसी काम के लिए यहां आई हूँ। यह पुत्र राजा सत्यंधर का पुत्र है। काष्टांगार ने राजा सत्यंधर को क़तल कर दिया है यह तो तुम्हें मालूम ही है। काष्टांगार मुमकिन है इसे भी मारने की चेष्टा करे इस लिए तुम्हें बहुत होश्यारी के साथ इसका पालन पोषन करना होगा।

गन्धोत्कट—देवी मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि यह राजा सत्यंधर का पुत्र है। काष्टांगार ने बहुत ज़ुल्म किया जो इसके पिता को बिला वजे क़तल कर दिया। मैं इसे अपनी जान से प्यारा

रखूंगा, उसकी क्या मजाल जो इसकी तरफ़ आंख उठाकर भी देख सके। मैं अपनी स्त्री से भी यही जाकर कहूँगा कि यह तेरा पुत्र मरा नहीं वल्कि ज़िन्दा है।

सिद्धार्थी—हां उसे भी यह वात ज़ाहिर नहीं होनी चाहिये।

गन्धोत्कट—अच्छा देवी, लो मैं जाता हूँ।

विजियासुन्दरी—ज़रा ठहरो, मैं अगने पुत्र को अंगूठी तो पहना दूं।

(रानी का वच्चे को अपनी गोद में लेकर अंगूठी पहनाना। वच्चे के मुंहको वार वार चूमना और फिर सेठ की गोद में दे देना और कहना कि इसका नाम जीवंधर रखा जावे)।

विजयासुन्दरी—(पुत्र को सेठ की गोदी में देते हुए) लीजिए सेठ जी, इस मेरे पुत्र का नाम जीवंधर रख देना।

गन्धोत्कट—वहुत अच्छा महारानी जी (प्रणाम करके अपने घर की ओर चला जाता है।)

सिद्धार्थी—लो रानी पुत्र तो तुम्हारा सेठ गन्धोत्कट के हां पलता ही रहेगा, अव तुम वताओ कहाँ जाना चाहती हो ? तुम कहो तो तुम्हारे भाई गोविन्दराज जी जो तिलक नगर के राजा हैं उनके पास छोड़ आऊं।

विजियासुन्दरी—(गाना)

(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

१. कहाँ जाऊं, किधर जाऊं, उधर जाऊं, इधर जाऊं।
अजब उलझन में जां आई यही बेहतर है मर जाऊं ॥

२. इधर देखूं तो कुवां है उधर देखूं तो खाई है।
समझ में कुछ नहीं आता भला किस थान पर जाऊं ॥

३. जकड़ रक्खा है रंजोग़म की ज़ंजीरों ने मेरे को।
कोई तदबीर बतलाओ रिहाई इन से कर जाऊं।

४. न कोई मेरा साथी है संगाती है न नाती है।
फ़क़त मैं हूँ मेरी क़िस्मत जिधर जाए उधर जाऊं ॥

५. ये माना भाई जी मेरे तिलक नगरी के हैं राजा।
शरम आती है इन हालात में उनपे अगर जाऊं ॥

६. मुझे तो राह मुक्ति का बता दीजेगा अय देवी।
करम को काट कर संसार सागर से जो तर जाऊं ॥

७. कृपा कर के मुझे तो आप दण्डक वन में पहुँचा दो।
तपस्या कर मुक्त की राह में शायद उतर जाऊं ॥

सिद्धार्थी—रानी तुम्हें धन्य है जो ऐसी मुसीबत आने पर भी अपने भाई के पास नहीं जाना चाहतीं। ऐसी देवियां संसार में बहुत कम मिलती हैं जो मरते दम तक अपने पति की शान पर धब्बा तक लगने नहीं देतीं। अच्छा चलिये तुम्हें दण्डक वन में तापसनियों के आश्रम में छोड़ आती हूँ।

(दोनों का चल पड़ना) (पर्दे का गिरना)

(सेठ गन्धोत्कट के महल का पर्दा)

सिठानी सुनिन्दा का अफसोस में बैठे हुए नज़र आना। सेठ गन्धोत्कट का जीवित पुत्र को गोद में लिए हुए प्रवेश करना। रानी का चौंकना।

सुनन्दा—(पुत्र को जीवित देखकर) हैं क्या मेरा पुत्र जीवित है ?

(खुश होना)

गन्धोत्कट—बेवकूफ तो क्या तुमने इसको मरा हुआ जान लिया है। (बच्चे को सेठानी की गोद में दे देता है।)

सुनन्दा—(बच्चे को छाती से लगा लेती है और मुंह चूमती है) पति देव क्षमा कीजिए हमारी भूल हुई।

सेठ—(गुस्से में) तुम्हारी इस भूल के कारण न जाने कितने बच्चे भूमि में दबा दिये जाते होंगे।

सुनन्दा—महाराज ऐसा न कहिये, क्या मां जान बूझ कर अपने प्यारे बच्चे को जो जीवित हो मरा हुआ जान सकती है।

सेठ—प्रिये ! तुम नहीं जानती, जिस समय बच्चा पैदा होता है बच्चे को बहुत तकलीफ होती है इससे वह बेहोश हो जाता है, कुछ देर बेहोश रहने के बाद फिर होश

में आ जाता है। इसी वेहोशी को हम लोग समझते हैं कि बच्चा मरा हुवा पैदा हुआ है।

सेठानी—महाराज क्षमा कीजिये, फिर कभी ऐसी भूल न होगी। (परदे का गिरना)

सीन ८
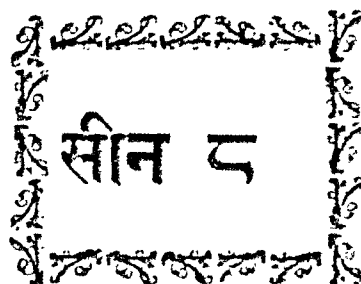
राजा काष्टांगार के दरबार खास में महफिल का परदा

काष्टांगार और भूपाल आदि मंत्रियों का बैठे हुवे नज़र आना, आपस में बात-चीत करना।

काष्टांगार—(अपने मंत्री से) भूपाल हमने यह गढ़ तो फते कर लिया, राजा सत्यंधर को तो मार ही दिया, परन्तु उसकी रानी कहां गई ?

भूपाल—अजी आपने रानी की भी खूब फिकर की, खौफ तो राजा सत्यंधर ही का था, सो उसको आपने मौत के घाट उतार ही दिया है। वह औरत जात आपका क्या बिगाड़ सकती है, जब उसका पति ही मर गया तो वह क्या जिन्दा रह सकती है, वह तो खुद ही पति वियोग में मर गई होगी।

काष्टांगार—यह भी ठीक है, अच्छा हमें तो इतना अवश्य पता लगाना चाहिये कि हमारे इस काम से नगर

में कौन खुश है, कौन नाखुश है।

भूपाल--अच्छा इस बात का भी मैं अभी पता लगा देता हूँ। (भूपाल का कोतवाल को आवाज देना)

कोतवाल (प्रणाम करके) जी हजूर।

भूपाल--तुम शहर में अभी जाओ और इस वात का पता फौरन लगा कर वापिस आओ कि राजा सत्यंधर के मारे जाने से शहर में कौन खुश है, कौन नाखुश है।

कोतवाल--जो हुक्म (चला जाना)

कष्टांगार-भूपाल तुम्हारा क्या ख्याल है क्या शहर के लोग मेरे से नाराज़ होंगे।

भूपाल--नहीं महाराज, आप से कौन नाराज़ हो सकता है, कहीं एक आदमी के मारे जाने से सारा शहर नाराज़ हुवा करता है।

काष्टांगार-परन्तु वह रानी कहां गई ?

भूपाल--अजी रानी से आपका क्या मतलब है।

काष्टांगार-भूपाल तुम नहीं जानते। यह राज के मुआमले वड़े टेढ़े होते हैं। कहीं वह अपने भाई गोविंद-राज जो तिलक नगर का राजा है उसके पास न चली गई हो, इस से मुमकिन हैउ सका भाई क्रोध में आकर हम पर चढ़ाई करे, इस लिये

हमें भी जंग के लिए तय्यार रहना चाहिए ।

भूपाल--जी हां यह बात तो सत्य है, अब तो कुछ मेरे ध्यान में भी आई ।

(कोतवाल का वापिस आना)

कोतवाल--(प्रणाम करके) हजूर सारा शहर राजा सत्यंधर की मौत पर आँसू बहा रहा है और अफसोस कर रहा है। सब दुकानें बन्द हैं। शहर में पूरी हड़ताल है । परन्तु एक सेठ गन्धोत्कट के मकान पर जरूर रौनक हो रही है। नौबत खाने बज रहे हैं और भूखों को अन्न बांटा जा रहा है ।

काष्टांगार--भूपाल हमारे यह बात समझ में नहीं आई कि जब सारे शहर में राजा सत्यंधर की मौत पर अफसोस किया जा रहा है तो क्या वजह जो सेठ गन्धोत्कट के हाँ खुशी मनाई जा रही है ।

भूपाल-हाँ महाराज यह बात तो मेरी समझ में भी नहीं आई।

काष्टांगार-(कोतवाल से) अच्छा तुम सेठ गन्धोत्कट को दरबार में बुला लाओ ।

कोतवाल--जो हुक्म (चला जाना)।

काष्टांगार-भूपाल अब सब भेद खुल जाएगा । अच्छा किसी गाने वाली को तो बुलाओ ।

भूपाल–जो हुक्म (आवाज देना–कोई गाने वाली है ?)

(देवदत्ता वैश्या का आना)

देवदत्ता–(प्रणाम करके) **गाना** (चाल) वीर तेरी क्या निराली शान है।

१ क्या ही महफिल की निराली शान है।
चश्मे तर भी देख कर हैरान है॥

२ चारों तरफों है खुशी छाई हुई।
ऐशो इशरत का यहां सामान है॥

३ चल रही ठंडी हवाएँ ज़ोर से।
देखिये क्या आई जां में जान है॥

४ काली काली है घटा छाई हुई।
ये भी महफिल पै तेरी कुरबान है॥

५ है गुलिस्तां में बहार आई हुई।
क्या सुरीला पत्तीयों का गान है॥

६ राजा रानी भी खुशी में चूर हैं।
खुश हरइक महफिल का साहेबान है॥

७ खिलखिला कर हंस रहे हैं फूल भी।
भीनी भीनी आ रही महकान है॥

८ फस ज़हे क़िस्मत वही इंसान है।
जो भी महफिल का तेरी महमान है॥

(कोतवाल का सेठ गंधोत्कट को साथ लिये हुवे आना)

कोतवाल–(प्रणाम करके) महाराज सेठ गंधोत्कट हाज़िर है।

सेठ गंधोत्कट- (प्रणाम करके) फरमाइये महाराज, आज कैसे याद फरमाया ?

काष्टांगार-आइये सेठ जी तशरीफ रखिये । हमने आपको इसलिये तकलीफ दी कि हमने सुना है कि आज आपके हाँ बड़े नौवत खाने वज रहे हैं और भूखों को अन्न बांटा जा रहा है, इसकी क्या वजह है ?

सेठ गंधोत्कट-महाराज मेरे लिये ऐसा दिन कब कब आयेगा कि आपको राज गद्दी मिले और मेरे हां लड़का पैदा हो ।

काष्टांगार-अब समझा, सेठ जी के हां लड़का पैदा हुवा है, बड़ी खुशी की बात है । अच्छा सेठ जी यह तो बताओ कि तुम मेरे राजा होने से खुश हो ना ?

सेठ-क्यों नहीं महाराज मुझे आपके राजा होने से बड़ी भारी खुशी हासिल हुई है ऐसा दिन कब कब आयेगा कि आप को राज मिले और मेरे हां लड़का पैदा हो ।

काष्टांगार-अच्छा सेठ जी हम भी आप से बहुत खुश हैं । मांगो क्या मांगते हो ।

सेठ-महाराज आप की कृपा से मेरे पास किस बात की कमी है, हां अगर आप थोड़ी सी तकलीफ गवारा करें तो मैं अर्ज करूँ ।

काष्टांगार-हां हां सेठ जी फरमाइये।

सेठ—महाराज मैं अपने पुत्र के जन्म दिन के उत्सव में एक गुरुकुल खोलना चाहता हूं जिसमें मुझे अच्छे कुल के ५०० बच्चों की आवश्यकता है, जो इसी गुरुकुल में तालीम पाते रहेंगे, उनके रहने सहने का भी गुरुकुल में ही प्रवन्ध होगा।

राजा-यह तुम्हारा वहुत अच्छा विचार है, मैं इसका प्रबन्ध अभी किये देता हूँ।

राजा- (भूपाल मन्त्री से) मंत्री जी तुम सेठ जी के साथ जाओ और शहर में जितने अच्छे २ खानदानी बच्चे हों पाँच सौ बच्चे इकट्ठे करके सेठ जी के हाँ पहुँचा दो।

भूपाल-बहुत अच्छा महाराज मैं अभी जाता हूँ।

(भूपाल और सेठ जी का चला जाना)

(परदे का गिरना)

सीन ६
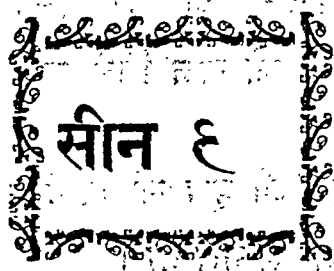
(दंडकवन के जंगल का परदा)

(एक दिन दंडकवन में रानी विजियासुन्दरी का अकेली बैठे हुए नज़र आना, अपने पुत्र जीवंधर की याद करना और भगवान से स्तुति करना।)

विजियासुन्दरी-अय भगवान ! मेरा पुत्र जीवंधर चार वर्ष

का होगया होगा, क्या मैं अपने जीवंधर को अपनी ज़िन्दगी में कभी देख सकूंगी ? क्या मेरे पुत्र का कभी मेरे से मिलाप होगा ? मुझे अपने पुत्र को देखने की बड़ी अभिलाषा रहती है। क्या मैं अपने पति का बदला उस पापी काष्टांगार से अपने पुत्र के द्वारा ले सकूंगी ? क्या मेरा पुत्र जीवंधर मेरे जीते जी अपने पिता की राजगद्दी पर बैठ सकेगा ? (विलाप करना)

(चाल) आजा पहलू में मेरी जान खतर किसका है।

१ आजा गोदी में मेरे लाल बिठालूं तुझ को।
अपनी छाती से लगा कर के सुलालूं तुझ को ॥
२ हर समय याद सताती है तेरी जीवंधर।
दिल में आती है कि आंखों में छिपालूं तुझको ॥
३ मैं कहीं तू कहीं किस तौर से देखूं बेटा।
कोई जाता भी नहीं साथ बुलालूं तुझ को ॥
४ हाय किस्मत ने मुझे खूब रुला कर मारा।
कोई सूरत नहीं किस तौर से पालूं तुझ को ॥
५ अब अगर तू मुझे मिल जाये किसी सूरत से।
गोद में ग़ैर की हरगिज़ भी न डालूं तुझको ॥
६ जाने किस हाल में हैं मेरे जिगर के टुकड़े।
पास गर हो तो मैं रोने को हंसालूं तुझको ॥

७ स्वप्न में ही तू मुझे शकल दिखादे आकर ।
इक दफा देखके छाती से लगालूं तुझ को ॥

(देव मई आवाज़) अय तपस्नी तू कोई चिन्ता न कर । तेरे पुत्र का तेरे से इकबार ज़रूर मिलाप होगा और तेरे देखते ही देखते वह अपने पिता का बदला उस काष्टांगार से जरूर लेगा और अपने पिता की राजगद्दी पर बैठेगा ।

विजियासुन्दरी-(चौंक कर) यह आवाज देव मई है, अवश्य यह कोई आकाश वाणी है । मेरे पुत्र का अवश्य मेरे से मिलाप होगा । देवताओं की आवाज़ कभी अकार्थ नहीं जाती मुझे पूरी आशा है कि मेरा पुत्र जीवंधर मेरे से इकबार ज़रूर मिलेगा ।

(परदे का गिरना)

सेठ गंधोत्कट के महल का परदा
सुनंदा सेठानी का आँगन में बैठे हुवे नज़र आना । आर्जनंद मुनि का आंगन में प्रवेश करना ।

आर्जनंद-सेठानी आहार दोगी ?

सुनंदा-हां महाराज पधारिये मैं अभी आपके लिये भोजन

लाती हूँ।

(आर्जनंद मुनि का बैठ जाना)

सुनंदा-(हाथ जोड़ कर) लीजीये महाराज यह मालपूड़े खाइये।

आर्जनंद-(सब पूड़े खाने के बाद) सेठानी पूड़े तो बहुत स्वादिष्ट बने हुवे हैं।

सुनंदा-महाराज मैं अभी और लाती हूं (एक थाल और आगे लाकर रख देती है)

आर्जनन्द-(इस थाल को भी खा चुकने के बाद) सेठानी इन पूड़ों से तो मेरा पेट ही नहीं भरा।

सुनंदा-(हैरान होकर) महाराज मैं अभी और लाती हूँ
(एक थाल रोटियों का भर कर आगे रख देती है)

आर्जनंद-(सब रोटियां खाने के बाद) सेठानी और रोटियां लाओगी ?

सुनंदा-हां महाराज मैं अभी और लाती हूँ (एक थाल भर कर और लाना)
(जीवंधर का आंगन में प्रवेश करना)

जीवंधर-(अपनी माता से) माता यह कौन है ?

सुनंदा- बेटा यह आर्जनंद मुनि हैं, यह कई रोज से भूखे हैं, मैंने इन्हें चार थाल परोस कर लादिये अब भी भूख ही भूख पुकार रहे हैं।

जीवंधर-माता अब की बार मैं खाना लाऊंगा।

सुनंदा-अच्छा बेटा तुम ले आना ।

आर्जनंद-सेठानी बस या और लाओगी ?

सुनंदा-महाराज आप खूब खाएं, अब तुम्हारा पुत्र जीवंधर थाली परोस कर आयेगा ।

जीवंधर का उठ कर थाली लेने जाना और फिर वापिस एक फुलका थाली में रखकर लौट आना ।

जीवंधर-(आर्जनंद मुनि से) महाराज अब मैं अपने हाथ से आप को खाना खिलाऊंगा ।

आर्जनंद-अच्छा बेटा तुम खिलादो ।

जीवंधर-(उस रोटी में से एक टुकड़ा तोड़ कर) लीजिए महाराज यह ग्रास खाएं ।

आर्जनंद-(एक ग्रास जीवंधर के हाथ से खाने के वाद) बस बेटा अब मेरी भूख शांत हो गई है ।

जीवंधर-नहीं महाराज अभी तो और खाएँ ।

अर्जनंद-बेटा तुझे धन्य है, तूने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मुझे काफ़ी दिनों से यह भस्म रोग लगा हुआ था, आज तूने मुझे इस रोग से मुक्त किया है, बेटा मैं तेरा अहसान कभी नहीं भूल सकता, जीवंधर ज़रा तुम अपने पिता जी को तो बुला लाओ ।

(जीवंधर का अपने पिता सेठ गंधोत्कट को बुलाने के लिये जाना)

आर्जनंद-सेठानी यह तेरा पुत्र बड़ा भाग्यशाली है, देखो तुम ने मुझे कितने थाल भर भर कर खाना खिलाया परन्तु मेरी भूख शांत न हुई। इस तुम्हारे पुत्र के एक ग्रास देने से ही मेरा भस्म रोग दूर हो गया है।

सेठानी-महाराज यह सब आपकी कृपा है।

(जीवंधर का अपने पिता गंधोत्कट को साथ लिये हुए आना)

गंधोत्कट--(प्रणाम करके) कहिये महाराज क्या आज्ञा है ?

आर्जनंद-सेठ जी यह तुम्हारा पुत्र बड़ा भाग्यशाली है, इस ने मेरा भस्म रोग दूर किया है, इस रोग ने मुझे बहुत अरसे से तंग बना रक्खा था। मुझे आपके जीवंधर से बहुत प्रेम हो गया है। दिल चाहता है कि इसे सब विद्याओं में निपुण बनाऊं और अपना फर्ज अदा करदूं।

गंधोत्कट-महाराज कौन कौनसी विद्याएँ सिखाई जायेंगी ?

आर्जनंद-सेठ जी मैं इसे सब विद्याओं का अभ्यास करा दूंगा, मसलन बीन बजाना, तीर चलाना, घोड़े की सवारी करना, तलवार चलाना, कुश्ती लड़ना, इसके इलावा नीति भी सिखाऊंगा और शास्त्र ज्ञान भी दूंगा।

गंधोत्कट-अच्छा महाराज यों कीजिए, मैंने एक गुरुकुल

खोल रक्खा है जिस में ५०० बच्चे विद्याध्ययन कर रहे हैं, जीवंधर भी उन्हीं लड़कों में खेला कूदा करता है सो आप कृपा करके गुरुकुल के सभी बच्चों को शिक्षा दे दीजिए, मैं आप का बहुत कृतज्ञ होऊंगा।

आर्जनंद-तथा अस्तुः।

(मुनि आर्जनंद का जीवंधर को साथ लेकर गुरुकुल की ओर जाना)
(परदे का गिरना)

सीन ११
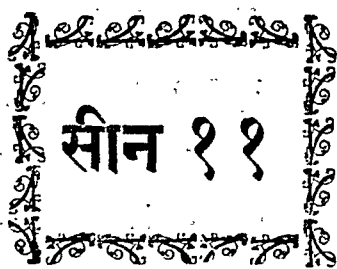
राजा काष्टांगार के दरवार का परदा

राजा काष्टांगार और भूपाल आदि मंत्रियों का और सेनापति का दरवार में वैठे हुए नज़र आना। देवदत्ता वैश्या का नाचते हुए आना और गाना गाना।

(चाल) भगवान तुम्हारे चरणों का नित रहता हमें सहारा है।

१ तु क्या ही शौकत वाला है, सारी दुनियां से आला है।
कोई भी नहीं सानी तेरा, तू आफ़त का परकाला है॥
२ लाखों पे तेरी हकूमत है, किस को न तेरी ज़रूरत है।
मोहन सी तेरी मूरत है, तू हुसन में सव से वाला है॥
३ महफिल की शान निराली है, चारों तरफीं हरयाली है।
छा रही घटा भी काली है, आई वहार दोवाला है॥

४ क्या ही छत्र तेरी न्यारी है, रय्यत भी तुझ पे वारी है।
मंत्री भी आज्ञाकारी है, तू सब से हिम्मत वाला है॥
५ तेरा जग में उजियाला है, सूरज का मुंह भी काला है।
मुतियन की गल में माला है, तू सब से ही मतवाला है॥

(देवदत्ता का चला जाना)

दरवान-महाराज बहुत से ग्वाले बाहर खड़े हैं, आप से मिलना चाहते हैं।

काष्टांगार-आने दो।

(नंदगोप ग्वाले का बहुत से ग्वालों को साथ लिये हुए दरबार में आना)

सब ग्वाले मिलकर-दुहाई है महाराज की दुहाई है।

काष्टांगार-बोलो, बोलो, क्या कष्ट है।

नंदगोप-महाराज हमें भीलों ने तंग कर रक्खा है, हमारी सब गऊएं चुरा ले गये, महाराज हमारी रक्षा करो।

काष्टांगार-सेनापति !

सेनापति-जी हां (खड़ा हो जाता है)

काष्टांगार-तुम फौज लेकर इनके साथ जाओ, और भीलों से युद्ध करके ग्वालों की गऊएं वापिस दिलाओ।

सेनापति-जो हुक्म (सेनापति का सब ग्वालों को साथ लेकर चला जाना)

(पर्दे का गिरना)

सीन १२

भीलों के गांव का परदा

सेनापति का फौज लेकर भीलों पर चढ़ाई करना भीलों का एक जगह इकट्ठे हुवे नजर आना।

सेनापति-(ललकार कर) अरे भीलो ! इस नंद गोप ग्वाले की गउएं किसने चुराई हैं ?

एक भील-महाराज हमने तो चुराई नाईं, माहरे सरदार कुरंग ने चुराई हों तो मेह बेरा नाईं।

दूसरा भील-मेह बताऊं, इसदी गउऐं महारे सरदार कुरंग ने चुराई छः।

सेनापपि-देखो या तो इसकी गउऐं वापिस कर दो वरना हम लड़ाई करके इसकी सब गउऐं अभी छीन लेंगे।

(कुरंग सरदार का आना)

कुरंग-कौन सः रे ?

सेनापति-मैं राजा काष्टांगार का सेनापति हूं।

कुरंग-थारो के मतलब छः।

सेनापति-मैं कहता हूँ नंद गोप ग्वाले की सब गउएं लौटा दो।

कुरंग-महाराज मेह गउएं कांई देसां, महारो तो काम ही

चोरी करना छः। चोरी करी चीज वापिस ना करसां।
थारे में जोर सः तो लड़ाई करके ले जाऊ।

सेनापति—अच्छा जंग के लिये तय्यार हो जाओ।

(सेनापति का फौज को लड़ाई करने का हुक्म देना। फौज का बहुत देर तक भीलो के साथ युद्ध करना। राजा की फौज का घायल होकर भूमि पर गिर जाना। सेनापति का घोड़े पर चढ़ कर वापिस भाग जाना)।

(परदे का गिरना

सीन १३

राजा काष्टांगार के दरबार का परदा
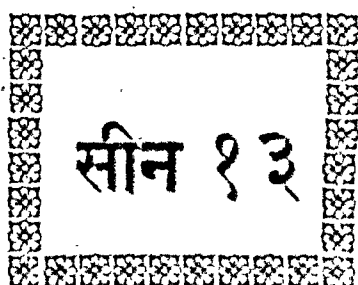
राजा काष्टांगार का दरबार में बैठे हुए नजर आना। सेनापति का नंदगोप ग्वाले को साथ लिये हुवे आना।

सेनापति—(प्रणाम करके) महाराज अनर्थ हो गया, तमाम फौज भीलों के तीरों से घायल हो गई अब आप जो हुक्म दें किया जावे।

राजा—क्या भीलों ने तमाम फौज को घायल कर दिया?

सेनापति—जी हजूर, मैं और नन्द गोप ग्वाला भी बड़ी मुशकिल से बच कर आये हैं।

नंदगोप—महाराज मेरा तो सर्वनाश ही होगया, मेरा तो गउओं पर ही गुजारा था, अब गउएं ही नहीं रही तो हम ही जिन्दा रह कर क्या करेंगे।

काष्टांगार-नंदगोप तुम घबराओ नहीं, शहर में मुनादी करदो कि जो भी आदमी उन भीलों को जीत कर सब गउएं छुड़ा कर आयेगा, वह शाही खज़ाने से मुंह मांगा इनाम पाएगा।

नंदगोप-महाराज इतना ही नहीं जो मेरी सब गउएं छुड़ा कर लायेगा मैं अपनी पुत्री गोविंदा की शादी भी उसी के साथ कर दूंगा।

काष्टांगार-जाओ और शहर में जल्द घोषणा करदो।

नंदगोप-जो आज्ञा मैं अभी जाता हूँ (नन्द गोप का चला जाना)

(परदे का गिरना)

सीन १४
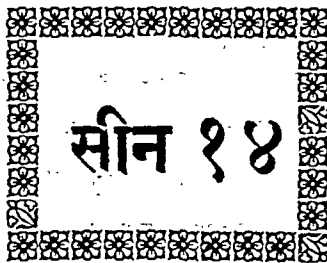
बाजार का परदा

नंद गोप ग्वाला मुनादी करने वाले को साथ लिये हुवे सेठ गंधोत्कट के गुरुकुल के सामने आता है जहाँ जीवंधर भी विद्याध्ययन कर रहा है।

जीवंधर-(मुनादी करने वाले की आवाज़ सुनकर) क्यों भाई किस बात की मुनादी है?

मुनादी वाला-महाराज नंदगोप ग्वाले की गउएं भील चुरा कर ले गये हैं, जो भी उन भीलों को जीत गउएं छुड़ा कर लायेगा वह शाही खज़ाने से मुंह मांगा इनाम पाएगा और नंदगोप ग्वाला अपनी पुत्री गोविंदा

भी उसी के साथ परणायेगा।

जीवंधर—नंदगोप कहाँ है ?

नंदगोप—महाराज मेरा ही नाम नंद गोप है।

जीवंधर—क्या भील तुम्हारी गउएं चुरा ले गये ?

नंदगोप—जी हां।

जीवंधर—अच्छा हम तुम्हारी सहायता करेंगे, तुम हमारे साथ आओ।

(नंद गोप और जीवंधर का गुरुकुल में पहुँचना)

जीवंधर— (अपने ५०० भाइयों से) देखो भाइयो नंदगोप ग्वाले की सब गउएं भील चुरा कर भाग गये हैं, हमें इस की मदद करनी चाहिये और इसकी सब गउएं वापिस दिलानी चाहियें।

५०० भाई—हम सब इसकी मदद करने के लिये तय्यार हैं।

(नन्द गोप ग्वाले का खुश होना)

जीवंधर—अच्छा भाई चलो—(सब का चल पड़ना) (परदे का गिरना)
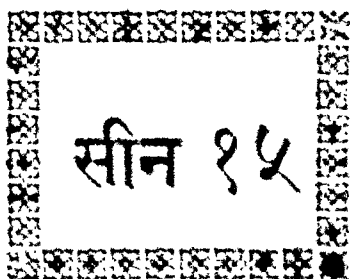
सीन १५

(भीलों के गांव का परदा)

जीवंधर का नंदगोप ग्वाले को और अपने ५०० भाइयों को साथ लिये हुए और रण का बाजा बजाते हुए भीलों के गांव में पहुंचना।

जीवंधर-(कुछ भीलों को सामने खड़ा देख कर) (ललकार कर) अरे इस नंदगोप ग्वाले की गउएं किस ने चुराई हैं ?

भील-महाराज हमन तो चुराई नाई। म्हारे सरदार कुरंगने चराईं हों तो के बेरा छः।

जीवंधर-अच्छा तुम्हारे सरदार कुरंग को जल्द बुलाओ।

(भीलों का अपने सरदार कुरंग को बुलाने के लिये भागना, कुरंग का अपनी फौज को लिये हुए मैदान में आना)

कुरंग-मुझे किस ने बुलाया है ?

जीवंधर-तेरी मौत ने, क्या इस नंदगोप ग्वाले की गउएं तूने चुराई हैं ?

कुरंग-जीहां।

जीवंधर-देखो अगर तुम अपनी खैर चाहते हो तो इसकी गउएं फौरन लौटा दो।

कुरंग-अरे दूध मुहे बच्चे ज़रा होश से बात कर, अभी दांत तो पूरे तौर से तेरे मुंह में निकले भी नहीं हैं और बातें इतनी बढ़ चढ़ कर कर रहा है, क्या तुझे मालूम नहीं कि राजा का सेनापति भी कल हमसे मूँ की खाकर चला गया है। तू तो अभी बच्चा ही है वेहतर है अपनी माँ की गोद में मुंह छिपा कर सोजा।

जीवंधर- ज्यादा वक वक मत करे अगर तुझे अपनी

ताक़त पर ज़्यादा घमण्ड है तो मेरे मुकाबले में खड़ा होजा।

(जीवंधर का म्यान से तलवार निकालना, भीलों का भी जंग के लिए आगे बढ़ना दोनों का घोर संग्राम होना। भीलों की फौज का पीछे हट जाना, सैंकड़ों भीलों का घायल होकर ज़मीन पर पड़ना, भीलों के सरदार कुरंग का अपनी फौज को भागते हुए देखकर खुद लड़ने के लिए आगे बढ़ना, काफी देर तक युद्ध होना, भीलों के सरदार कुरंग का लड़ते लड़ते थक जाना और बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ना। जीवंधर की फ़ौज का जय जय कार के नारे लगाना। कुरंग सरदार को गिरफ्तार करके जीवंधर के पास लाना)

कुरंग—(जीवंधर के पांव में गिरकर) महाराज मुझे क्षमा कीजिये मैं तो आपका दास हूँ। आप जो हुक्म दें मैं बजा लाने के लिए तय्यार हूँ।

जीवंधर—(हाथ पकड़ कर उठाता है और हथकड़ी खोल देता है)।

कुरंग—महाराज की जय हो, मैं आप से खुद शर्मसार हूँ जो मैंने युद्ध किया। आप बड़े बलवान और धनुषधारी हो। आपने मुझपर बड़ा एहसान किया है जो रहम करके छोड़ दिया है, मैं आपका यह अहसान कभी नहीं भूलूंगा।

जीवंधर—कुरंग, इस नन्दगोप गवाले की गउएं शाम से पहले पहले इसके गांव में पहुँचा दो, हम भी वहीं चलते हैं।

कुरंग--जो हुक्म (चला जाता है) (परदे का गिरना)
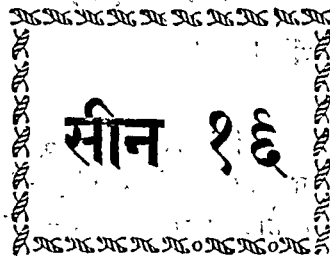
सीन १६

गन्धोत्कट सेठ के महल का परदा

गन्धोत्कट सेठ और उसके मुनीम का कोठी में बैठे हुए नज़र आना, दोनों का बातचीत करना।

गन्धोत्कट--मुनीम जी जीवंधर को भीलों की लड़ाई में गये हुए कई रोज़ हो गए, परन्तु अभी तक कोई समाचार नहीं आया क्या बात है, उसकी ओर का हमें बड़ा फिकर रहता है क्योंकि आप जानते हो कि हमारे हां केवल एक पुत्र जवंधर ही है।

मुनीम-सेठ जी आप कोई चिंता न करें आपका पुत्र बड़ा बलवान और धनुषधारी है, किस की मजाल है जो उसकी ओर आंख उठाकर भी देख सके, और इसके इलावा उसके ५०० भाई भी तो उसके साथ हैं, उन के होते हुवे जीवंधर को क्या फिकर है, बच्चे हैं यूंही सैर सपाटा करते हुवे दो चार रोज़ में लौट आएंगे।

बांदी-सेठ जी मुबारिक हो आपके हां लड़का पैदा हुवा है।

गंधोत्कट--बड़ी खुशी की बात है, मुनीम जी ज़रा ज्योतिषी

जी को आवाज़ देना ।

मुनीम-(बाहर जाकर) अजी ज्योतिषी जी ।

ज्योतिषी-(अन्दर से ही) हां मुनीम जी ।

मुनीम-अजी आपको सेठ जी याद फरमा रहे हैं ।

ज्योतिषी-(अभी आया कहते हुवे सेठ जी के कमरे में दाखिल होता है)

गंधोत्कट-(ज्योतिषी जी को देखकर) आइये ज्योतिषी जी ऊपर तशरीफ ले आइये ।

(ज्योतिषी जी का ऊपर गद्दी पर बैठ जाना)

ज्योतिषी-कहो सेठ जी आज कैसे याद फरमाया ?

गंधोत्कट-अजी आपको मालूम नहीं मेरे हां लड़का पैदा हुवा है ।

ज्यतिषी-कब ?

गंधोत्कट-अभी अभी बाँदी ने आकर खबर दी है ।

ज्योतिषी-बड़ी खुशी की बात है । (पोथी खोल कर देखते हैं) (कुछ सोच कर) सेठ जी लड़का तो आपके बड़ा भाग्य शाली पैदा हुवा है इसकी जन्म कुण्डली भी आपके पहले पुत्र जीवंधर से बिलकुल मिलती जुलती है और इसकी शक्ल भी हू बहू जीवंधर से ही मिलती जुलती हुई होनी चाहिये ।

गंधोत्कट-अच्छा तो इसका नाम फिर क्या रक्खा जावे ?

ज्योतिषी-(फिर पोथी को खोल कर और कुछ उंगलियों पे हिसाब लगाकर)

इसके नाम में पहले 'न' शब्द होना चाहिये, इसलिये मेरे ख्याल में इसका नाम नंद रखा जाये तो अच्छा रहेगा।

गंधोत्कट-बड़ी अच्छी बात है, मुनीम जी महल में कह दो कि पुत्र का नाम नंद रखा जावे।

मुनीम-बहुत अच्छा (चला जाता है)

ज्योतिषी-अच्छा सेठ जी लो मुझे आज्ञा हो।

(गंधोत्कट का रुपयों का थाल ज्योतिषी जी के हाथ में देना और कहना कि इसकी जन्म पत्रिका भी शीघ्र तय्यार कर दें)।

(ज्योतिषी जी का चला जाना) (परदे का गिरना)

सीन १७
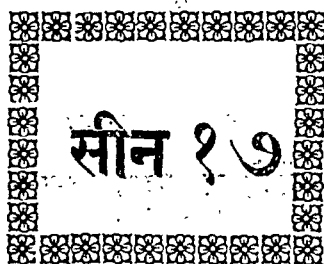
नंदगोप ग्वाले के मकान का परदा

जीवंधर का नंदगोप ग्वाले के मकान में बैठे हुवे नजर आना। बहुत से ग्वालों का इकट्ठे हुवे हुवे दिखाई देना और सबका जीवंधर की जय जयकार के नारे लगाना। जीवंधर के गले में फूलों की माला पहनाना। नंदगोप गवाले का अपनी पुत्री गोविंदा को साथ लिये हुवे आना।

नंदगोप-(जीवंधर से) लो महाराज मैं अपनी पुत्री गोविंदा को आपकी भेंट करता हूँ।

जीवंधर-नहीं भाई यह मेरा हक नहीं है आप अपनी पुत्री की शादी मेरे भाई पदमदास से कर दो, कारण कि

पदमदास अगर हमारी सहायता न करता तो यह बेल मांढ़े ही नहीं चढ़ती ।

(नंदगोप ग्वाले का अपनी पुत्री गोविंदा का हाथ पदमदास के हाथ में पकड़ाना। पदमदास का शरमाते हुवे मुंह नीचा करके खड़ा हो जाना सब भाइयों का पदमदास को मुबारिकबाद देना दोनों की शादी होना। और गोविंदा की सहेलियों का गाना (चाल) इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

१. खुशी का आज है मौका खुशी क्यों न मनाएं हम ।
है गोविंदा की शादी क्यों न नाचे और गाएं हम ॥

२. प्रीतम क्या ही सुन्दर है भंवर गुंजार करते हैं ।
चमन का गुल हजारा है इसे क्योंकर न चाहें हम ॥

३. मिली है देखिये जोड़ी भी क्या अय देखने वालो ।
कि सीता राम हों जैसे न क्यों मस्तक झुकाएं हम ॥

४. भील राजा को जीता और सब गउएं छुड़ा लाये ।
अपूर्व इनकी शक्ति है न क्यों बलिहार जाएं हम ॥

५ बहिन कर लो ठिठोली फिर न ये दिन रोज आयेगा ।
चलो आगे बढ़ो हम भी हँसें इनको हँसायें हम ॥

६ गोविंदा भूलियो मत तू हमें सुसराल में जा कर ।
कभी तो याद कर लीजो अगरचे याद आयें हम ।

(दोनों की शादी होना)

(कुरंग सरदार का गउएं लिए हुए आना)

कुरंग—(प्रणाम करके) महाराज सब गउएं हाजिर हैं ।

(सोने चांदी के थाल श्रीधर के सामने रखना)

जीवंधर--कुरंग तुम आ गये ?

कुरंग--जी हज़ूर।

जीवंधर--इन थालों में क्या है ?

कुरंग--महाराज, सोने चांदी के ज़ेवरात हैं।

जीवंधर--यह तुमने क्यों तकलीफ की।

कुरंग--महाराज, यह तो हमारे हां रिवाज ही है।

जीवंधर-अच्छा कुरंग देखो अब तुम हमारे ग्वालों को कभी तंग न करना।

कुरंग-महाराज, मैं अब कभी गउएं नहीं चुराऊंगा, मैंने तो चोरी का नियम ही कर लिया है।

जीवंधर-बहुत अच्छा किया, चोरी करना महा पाप है, तुम्हारा तो खेतीबाड़ी ही करना कर्म है।

कुरंग-अच्छा महाराज, अब मुझे आज्ञा हो, कभी आवश्यकता हो तो मुझे याद कर लेना।

जीवंधर-अच्छा कुरंग तुम जा सकते हो।

(कुरंग का प्रणाम करके चला जाना)

(परदे का गिरना)

सीन १८

(सेठ गन्धोत्कट के महल का परदा)

सेठ गन्धोत्कट और सेठानी सुनन्दा का पुत्र को गोदी में लिए हुए बैठे नजर आना और आपस में बातचीत करना।

सुनन्दा—पतिदेव, जीवंधर भीलों की लड़ाई से कब वापिस आजाएगा।

गन्धोत्कट—प्रिय सुना है आज ही कल में आने वाला है।

सुनन्दा—स्वामी तुमने एक बात भी देखी ?

गन्धोत्कट—नहीं प्यारी वह क्या ?

सुनन्दा—देखो नंद की शकल जीवंधर से बिल्कुल मिलती जुलती है।

गन्धोत्कट—(पुत्र को देखकर) हां यह तो बड़े आश्चर्य की बात है ज्योतिषी जी ने कहा तो मेरे से भी था कि यह तुम्हारा पुत्र जीवंधर की ही शकल का पैदा हुआ है, परन्तु मैं तो इसे मजाक ही समझा था।

सुनन्दा—जब नन्द बड़ा हो जाएगा तो तुम इन दोनों में जांच भी नहीं कर सकोगे कि इनमें नन्द कौनसा है और जीवंधर कौनसा है।

(जीवंधर का महल में प्रवेश करना)

गन्धोत्कट—(जीवंधर को देखकर) लो तुम्हारा पुत्र जीवंधर भी आगया (आगे बढ़कर जीवंधर को छाती से लगा लेता है।)
बेटा तुमने इतने दिन कहां लगाये ?

जीवंधर—पिता जी पहले तो भीलों के साथ लड़ाई की और

नन्दगोप ग्वाले की सब गउएं वापिस दिलवाईं। इस के बाद नन्दगोप ग्वाले ने अपनी पुत्री की शादी जो मेरे साथ करना चाहता था, मेरे इन्कार करने के बाद भाई पदमदास के साथ कर दी, अब नन्दगोप ग्वाले के गांव से सीधे आ रहे है। (अपनी माता से प्रणाम करता है)

सुनन्दा—चिरंजीव रहो बेटा।

जीवंधर—माता यह बच्चा कौन है?

सुनन्दा—बेटा यह तुम्हारे भाई हुआ है।

जीवंधर—(जीवंधर का नन्द को गोदी में लेकर प्यार करना) माता यह तो मुझे बहुत प्यारा लगता है। इसकी शिकल मेरे से मिलती जुलती है।

सुनन्दा—क्यों नहीं मिले बेटा, भाई भी तो तेरा ही है।

जीवंधर—अच्छा माता लो (बच्चे को मां की गोद में दे देता है) मैं अभी आता हूँ। (चला जाता है)

(परदे का गिरना)

सीन १९

मण्डप का परदा

इसी राजपुरी में एक सेठ श्रीदत्त रहता था। इसके मित्र राजा जितशत्रु विद्याधर ने अपनी पुत्री गन्धर्वदत्ता को श्रीदत्त के पास स्वयंवर रचाकर शादी करने

के लिये भेजा है। लड़की वीणाकला में बहुत निपुण है। सेठ श्रीदत्त ने स्वयंवर रचा है कि जो भी इस लड़की को वीणा बजा कर जीतेगा मैं उनके साथ इस लड़की का विवाह कर दूंगा। सब जगह के राजकुमार स्वयंवर मण्डप में आकर बैठे हुवे हैं, राजा काष्टांगार भी और राजाओं के साथ स्वयंवर मंडप में बैठा हुआ है। जीवंधर भी अपने ५०० भाईयों को साथ लेकर स्वयंवर देखने के लिये वहां आ जाता है। गंधर्वदत्ता अपने योग्य स्थान पर बैठी हुई है।

सेठ श्रीदत्त (खड़ा होकर सब राजकुमारों से) अब स्वयंवर का कार्यक्रम प्रारम्भ होता है। वीणा मेज़ पर रखी हुई है। प्रत्येक राजकंवार वारी वारी आएँ और वीणा बजाएँ, जो भी वीणा बजाकर राजकंवारी गंधर्वदत्ता को प्रसन्न करेगा मैं उसी के साथ गंधर्वदत्ता की शादी कर दूँगा।

(प्रत्येक राजकँवारों का वारी वारी वीण बजाने जाना और वापिस आकर अपने अपने स्थानों पर बैठ जाना।

सेठ श्रीदत्त-क्यों पुत्री तुम्हें इनमें से कोई वर पसन्द है ?

गंधर्वदत्ता-पिताजी इनको तो वीणा हाथ में पकड़नी भी नहीं आती।

काष्टांगार-राजकंवारी ठीक कहती है। मैं वीणा को नियम पूर्वक उठाऊंगा। मैं आशा करता हूँ कि गंधर्वदत्ता मेरे ही से शादी करायेगी।

(काष्टांगार का वीणा को उठाकर बजाना और फिर अपने स्थान पर वापिस आकर बैठ जाना।

श्रीदत्त--पुत्री यह राजपुरी के राजा काष्टांगार हैं. क्या तुम्हें यह वर पसन्द है ?

गंधर्वदत्ता—पिता जी इन्होंने बीणा ग़लत स्वर में बजाई है ?

श्रीदत्त—मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि क्या आज भारतवर्ष में कोई भी ऐसा रागी नहीं रहा जो बीणा कला में निपुण हो।

जीवंधर—(अपने भाइयों में से बाहर निकलकर) सेठ जी ऐसा न कहिये कि कोई रागी ही नहीं रहा, भारतवर्ष में अब भी एक से एक बढ़ चढ़कर राग विद्या में निपुण आपको मिल सकते हैं, हां आप यह कह सकते हैं कि इन राजकंवारों में कोई भी राजकंवार ऐसा नहीं जो बीणा कला में निपुण हो।

श्रीदत्त—अच्छा अगर यही बात है तो मैं सबको ललकार कर कहता हूँ कि जो भी इस स्वयंबर मण्डप में बीणा बजाकर गंधर्वदत्ता को प्रसन्न करेगा मैं उसी के साथ गंधर्वदत्ता की शादी करदूंगा।

(जीवंधर का आगे बढ़ना और बीणा उठाकर बजाना। बीणा का नाद दूर दूर सुनाई देना। मण्डप का गूंज उठना। राजकंवारों का एक दूसरे का मुंह ताकना। गंधर्वदत्ता का खुश होना और गाना—

(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है।

१. मेरा मन मोह लिया तुमने दिखा करके ये छब न्यारी।
कि मैं भी तन व मन धन से हुई हूँ तुमपे बलिहारी॥

२. दिलो जां से मैं मोहित हूँ तुम्हारी देखकर सूरत।
दिवानी हो गई सुनकर मधुर बीणा की गत प्यारी॥

३ सिवा तेरे नहीं कोई बसा है इस मेरे दिल में।
कि तुम स्वामी हो मेरे और मैं चेरी हूं तुम्हारी ॥
४ मैं खुश हूं तुमसे वर माला तुम्हारे गल्ल में डालूंगी।
परीक्षा में स्वयम्वर की तुम्हीं जीते हो मैं हारी ॥
५ न जाने क्या भला जादू किया है तुमने मेरे पे।
कि अपने तन बदन की भी मैं खो बैठी हूँ सुध सारी ॥
६ हुई आसक्त मैं तुमपे तुम्हें प्रीतम बनाऊंगी।
किया है तुमने घर दिल में दिखाकरके अदा प्यारी ॥

(गंधर्वदत्ता का वर माला जीवंधर के गले में डालना)

काष्टाँगार—अरे राजकंवारो तुम्हें शरम नहीं आती कि एक वनिक पुत्र राजपुत्री को शादी करके ले जा रहा है।

एक राजकंवार—(जोश में आकर) ठैरो ठैरो राजपुत्री कभी वनिक पुत्र से नहीं ब्याही जायगी।

जीवंधर—(अपने ५०० भाइयों से चुपके से कहता है कि तुम जाओ और अपने तीर कमान आदि सब शस्त्र पोशीदा लिबास में छिपाकर आजाओ. यहां मुआमला कुछ और ही नज़र आता है)।

राजकँवार—(चाल) राधा स्वामी

१ अय जीवंधर छोड़ दे कन्या को इस ठौर।
जान बचाकर भाग जा अपने घर की ओर ॥
ये राजा की पुत्री है और राजपुत्र को ब्याहेगी।
तुझ बनिये के बेल से हरगिज़ नहीं ब्याही जायेगी ॥

जीवंधर २- मैंने जीता है इसे वीणा बजा कर यार।
तुम काहे को करते हो मुझ से यूं तकरार॥
जां में जां जब तक बाकी है हरगिज नहीं जाने पायेगी।
जीते जी तुम से देखूं कैसे यह व्याह कराएगी॥

राजकंवार ३-फिर समझाता हूं तुझे सुनले करके ग़ौर।
अब भी घर को लौट जा मौका दूं हूँ और॥
वरना तेरी लाश ज़मीं पे पड़ी पड़ी पछतायेगी।
फिर पछताये होत है क्या जब चिड़ी खेत चुग जाएगी॥

जीवंधर ४-मैं न छोड़ूंगा इसे सुनले मेरी बात।
मत जियादा गुफतार कर मेरे से बद्ज़ात॥
शर्त स्वयंबर की पूरी जिस नर से भी की जाएगी।
किसी ज़ात का हो शहज़ादी वर माला पहनाएगी॥

राजकंवार ५-अच्छा गर माने नहीं करले दो दो हाथ।
देखूं तो मैं भी तेरा कौन देयगा साथ॥
तेरी करनी अय जीवंधर आगे ही आजायेगी।
एक तीर लगते ही तेरी जान कफ्स हो जाएगी॥

जीवंधर ६-गरजे सो बरसे नहीं मस्ल है ये मशहूर।
तू है पुतला ख़ाक का मत ना करे ग़रूर॥
मुझमें वो शक्ति है क़यामत इकदम से आजागी।
आसमान थर्रा उठेगा और ज़मीं चकराएगी॥

गाना—(चाल) मेरी इमदाद को अय बांसरी वाले आजा।

१ मैं अगर चाहूँ तो दुनिया को हिलादूं पल में।
दिल में आजाये तो मैं आग लगादूं जल में॥

२ मेरी शक्ति में हैं मौजूद हजारों शक्ति।
आग लग जाएगी सारे आकाश मण्डल में॥

३ जां बचा कर तुम्हें हो जाएगा जाना मुशकिल।
एक भूंचाल सा आजायेगा जल में थल में॥

४ देख लो मान लो कहना कि चले जाओ तुम।
शेर सोता न जगाओ न आयेगा वल में॥

(जीवंधर के पांच सौ भाईयों का पोशीदा लिबास में ढाल तलवार आदि लिए हुए आना। जीवंधर का अपने भाईयों के पास जाकर खड़ा हो जाना।

राजकंवार-जीवंधर अच्छा, इस हजूम से बाहर निकल।

जीवंधर-यह हजूम नहीं मेरे भाई हैं वेअक़ल।

(पांच सौ भाईयों का धनुषबाण आदि हाथ में लेकर जंग के लिए तय्यार होना)

सब राजकंवार-हैं यह क्या माजरा है।

जीवंधर-तुम्हारा पाप कांप रहा है।

(सब राजकुमारों का एक दूसरे का मुंह तकना और कहना कि यह जीवंधर कोई साधारण व्यक्ति नहीं है यह तो अपने साथ फौज भी लाया है [illegible])

एक राजकुमार-घबराते क्यों हो, जरा इनका पराक्रम तो देखो।

दूसरा राजकुमार-हां यह भी ठीक है, जीवंधर जरा आप अपना वार तो करो।

जीवंधर—मुझे वार करने की क्या आवश्यकता है, मैं तो रास्ती पर हूँ। पहले वार आप ही करें।

एक राजकुमार—अच्छा लो पहले मैं ही वार करता हूं। लो यह मेरा तीर आता है।

जीवंधर—(तीर को बीच में ही काट देता है)

राजकुमार—(हैरान होकर) हैं यह तो कोई क्षत्री पुरुष प्रतीत होता है, देखो इसने मेरा तीर बीच में ही काट दिया है।

जीवंधर—(अपने भाईयों से) देखो तुम्हारी तरफ से अभी कोई वार न हो।

राजकुमार—(शैर) १-जीवंधर मेरा तीर यह खाली न जाएगा।
लगते ही मुंह में मौत के तुझको पठायेगा॥

२ छोड़ा था पहला तीर तो परीक्षा के वास्ते।
अब दूसरा तू देख ले क्या रंग लायेगा॥

३ कहता हूँ फिर भी मान ले कहना मेरा ज़रा।
इस तीर से हरगिज भी तू बचने न पाएगा॥

४ आता है न जाने क्यों रहम मुझको तेरे पे।
किस बात की ख़ातिर तू भला जां गंवायेगा॥

५ माने नहीं तो रोक मेरा तीर दूसरा।
लगते ही जमीं पे तुझे यकदम सुलायेगा॥

(दूसरा तीर छोड़ना)

(जीवंधर का फिर बीच में ही काट देना)

जीवंधर—(शेर) १ तेरा तो वार हो चुका मेरा भी देखले ।
इक मेरे वार से क्या विगड़ तेरा जायेगा ॥
२ तूने तो वार दो किये, मैं एक करूंगा ।
वह एक ही तू देखले क्या रंग लायेगा ॥

(राजकंवारों के पांव उखड़ जाते हैं और भागने की तय्यारी करते हैं)

जीवंधर—ठहरो ठहरो भाग कर कोई न जाये, ज़रा मेरा वार भी तो देखलो ।

राजकंवार—चलो भाई चलो यह तो कोई विद्याधर मालूम देता है जो इस तरह मैदान में डटा खड़ा है वणिक पुत्र में इतनी ताव कहां जो इस तरह से खड़ा रह सके । सेठ श्रीदत्त ने हमें मरवाने के लिये यह स्वयंवर रचा है । अब यहां पर ठहरना अपने आप को मौत के मूंह में फंसाना है । देखो हमने दो वार किये और जीवंधर ने हमारे दोनों वार बीच में ही काट दिये । यह तो शुक्र है कि उसने हम पर कोई वार नहीं किया वरना घर लेना ही मुशकिल हो जाता ।

(राज पुत्रों का भाग पड़ना।

काष्टांगार—ठैरो कायरो ! तुम एक वणिक पुत्र से डर कर भाग रहे हो, तुम्हें शरम नहीं आती, तुम जैसों ने ही तो क्षत्री कुल का नाश कर दिया है ।

सब राजकंवार—अजी वह तो संख्या में हम से बहुत अधिक हैं, हम मुट्ठी भर राजकंवार उनका कैसे

मुकाबला कर सकते हैं।

काष्टांगार--अच्छा में अपनी फौज तुम्हें लड़ने के लिये देता हूँ फिर तो लड़ोगे ?

सब राजकंवार-हां फिर तो हम लड़ने के लिये तय्यार हैं।

एक राजकंवार-भाइयो मेरी राय तो यह है कि किसी तरह अपने घर राजी खुशी लौट जाओ, वरना यहां लेने के देने पड़जायेंगे।

काष्टाँगार--(दिल ही दिल में) (यह जीवंधर बहुत बलवान् मालूम होता है, भील राजा को भी यही जीत कर आया है। बेहतर है कि इसे युद्ध करके अभी मरवा दिया जाये, वरना मुझे डर है कि कहीं मेरे राज पर भी काबू न पा ले।)

(सेनापति का फौज लिये हुवे आना, रण का बाजा बजना। राजकंवरों का भी फौज के साथ साथ आना। जीवंधर का भी अपने पांच सौ भाइयों के साथ जंग के लिये तय्यार होना और दोनों तरफ से घोर संग्राम होना। जीवंधर का अग्न बाण छोड़ना शहर में आग लग जाना और हा हाकार मच जाना। काष्टांगार की फौज का घायल होकर ज़मीन पर गिर जाना। गंधर्वदत्ता का आग बुझाने के लिये जीवंधर से अर्दास करना (चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया।

१ दया कीजियेगा दया कीजियेगा।
पति देव इनको क्षमा कीजियेगा॥

२ अग्नि बाण तुमने क्यों छोड़ा स्वामी।
रहम कीजियेगा, रहम कीजियेगा॥

३ हज़ारों भसम आग में जीव होंगे।
न तुम जीव हिंसा ज़रा कीजियेगा॥

४ यूं जल जल मरेंगे हज़ारों प्राणी ।
क़यामत न इतनी बपा कीजियेगा ।

५ कि जलबाण जल्दी से अब छोड़ दीजे ।
ज़रा फ़र्ज़ अपना अदा कीजियेगा ॥

६ वो खुद अपनी करनी पे पछता रहे हैं ।
यही फिकर उनको है क्या कीजियेगा ॥

७ उन्हें तेरी शक्ति अयां हो गई है ।
हो जैसे भी उनका भला कीजियेगा ॥

८ वो अहसान हरगिज़ न भूलेंगे तेरा ।
सभी मुआफ उनकी ख़ता कीजियेगा ॥

९ मैं चर्णों में तेरे झुकाती हूं सरको ।
ग़रीबों के हक़ में दुआ कीजियेगा ॥

जीवंधर—सच है इस फ़ौजने मेरा क्या विगाड़ा है, जो मैंने इसे घायल कर ड़ाला, यह तो बेचारे हुक्म के ताबे हैं, तनख़्वा इसी बात की पाते हैं, नगर के लोगों ने मेरा क्या विगाड़ा है जो मैंने इन्हें घोर आफ़त में ड़ाला । बेचारे हा हाकार करते घरों से भाग रहे हैं । जीवंधर यह तूने बहुत बुरा किया जो अग्न बाण छोड़ा, तेरा विगाड़ तो राजपुत्रों से था, तूने यह क्या किया ।

(जीवंधर का जलबाण छोड़ना । आकाश से वर्षा का होना और [illegible]

बुझना। काष्टांगार का अपनी फौज को घायल देखकर पश्चाताप करना)

काष्टांगार--(राजकंवारों से) बस बस लड़ाई बन्द करो, जीवंधर मेरे सेठ का लड़का है, इससे लड़ना उचित नहीं है।

(कुछ वच्चे खुचे राजकुमारों का वापिस अपने घरों को लौट जाना इस प्रकार जीवंधर की पहली शादी गंधर्वदत्ता के साथ होती है।)

(परदे का गिरना)

सीन २०
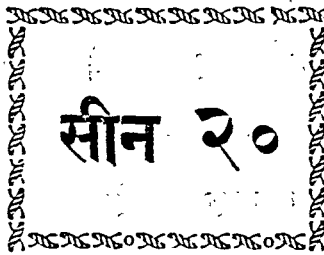
राजा काष्टांगार के दरवार खास का परदा

राजा काष्टांगार का और भूपाल आदि वज़ीरों का और सेनापति का वैठे हुए नज़र आना

काष्टांगार-ग़ज़व हो गया जो उस दूधमुवे वच्चे ने सारे नगर में उपद्रव मचादिया। सव राजकँवारों को नाकों चने चवुवा दिये।

सेनापति-हाँ महाराज इसमें तो क्या शक है।

भूपाल--महाराज मैंने तो यह भी ज़िक्र सुना है कि उस में किसी देवी का वल है।

काष्टांगार-यह सव वकवास है, कुछ देवी दावी का वल नहीं, हम ने खुद अपने पांव पे आप कुल्हाड़ी मारी है जो सेठ गंधोत्कट को पांचसौ वच्चे गुरुकुल के लिये दिए।

(शैर) सांप के मुंह में ज़हर था मुझे मालूम न था।
सेठ के दिल में शरर था मुझे मालूम न था॥

दरबान—महराज बाग़ का माली बाहर खड़ा है।

काष्टांगार—आने दो।

माली का हाथ में डाली लिये हुवे आना

माली—(प्रणाम करके) डाली आगे रख देता है।

गाना—(चाल) खुदा खुदा न सही राम राम कहलेंगे।

१. तुम्हारे बाग़ में राजा बहार आई है।
ऋतु वसंत ने अपनी छटा दिखाई है॥
२. कहीं गुलाब कहीं खिल रही चमेली है॥
अजीब शान तेरे बाग़ की बनाई है॥
३. कहीं पे जूही कहीं केवड़ा, कहीं चंपा।
कमल खिला है कहीं सेवती खिलाई है॥
४. कहीं अंजीर, कहीं फालसे कहीं नीबू।
कहीं पे आँवला कदली कहीं पे छाई है॥
५. कहीं पे कोकिला और हंस शब्द करते हैं।
कि मोतिया की सुगंधी कहीं पे आई है॥

काष्टांगार—अच्छा माली जाओ, इनाम खज़ाने से लेने जाओ, हम आज ही आकर बाग़ की बहार देखेंगे।

माली—जो हुकम (चला जाता है)।

काष्टांगार—भूपाल तुम भी जाओ और शहर में सुनादो

करवादो कि सब नगर बासी बसंत ऋतु की बहार देखने जंगल में पहुंच जायें। राजा खुद भी जाएंगे।

भूपाल--जो हुक्म (चला जाता है)

(परदे का गिरना)

सीन २१
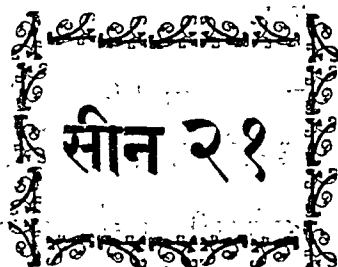
जंगल का परदा

जीवंधर का भी बसंत ऋतु की बहार देखने के लिए वन में जाना, कुछ ब्राह्मणों का एक कुत्ते को मारते हुए दिखाई देना।

जीवंधर--(कुत्ते को मारते देख कर) क्यों भाई तुम इस कुत्ते को क्यों मार रहे हो?

ब्राह्मण--महाराज इस ने हमारी यज्ञ सामग्री को अपवित्र कर दिया है इस लिए हम इसे जरूर मारेंगे।

जीवंधर--देखो भाई इस ने कोई जान बूझ कर यह काम नहीं किया है, इस का तो ऐसा स्वभाव ही होता है। इस में भी तुम्हारी ही तरह जान मौजूद है, इंसान और हैवान में यही तो अन्तर होता है, इंसान जो काम करता है वह सोच विचार कर करता है और समझता है कि मुझे इस काम के करने में क्या हानी होगी और क्या लाभ होगा। हैवान में विचारने की शक्ति नहीं होती। वह जो भी कर्म

करता है अपने स्वभाव से ही करता है, यह नहीं सोच सकता कि इसका परिणाम क्या होगा, परन्तु इसमें भी जान तुम्हारी ही तरह से होती है, तुम्हें जीव हिंसा नहीं करनी चाहिये। जीव हिंसा करना महा पाप है।

ब्राह्मण—महाराज अगर हम इसे न मारेंगे तो हमारा देवता हम से नाराज़ हो जायेगा।

(इतना कह कर ब्राह्मण कुत्ते के पेट में छुरा घोंप देते हैं, कुत्ता चीख मारता है।)

(जीवंधर का कुत्ते को ससकते हुए देखना और पश्चाताप करना)

जीवंधर—(शैर)

१ जीवंधर तेरे जीते जी मरा बे मौत ये कुत्ता।
ये बेहतर था कि तू जग में नहीं पैदा हुआ होता॥

२ ज़ुलम करते हैं जो जीवों का यूँ संहार करते हैं।
है जाँ इन में भी हम जैसी नहीं इनको पता होता॥

३ पशु हैं ये विचारे ज्ञान क्या है इनको दुनिया का।
अगर ये ज्ञान होता तो ये कुत्ता क्यों मरा होता॥

४ ज़रा इसी बात की ख़ातिर ये इसकी जान ले बैठे।
इन्हों को देवता नाराज़ गर होता तो क्या होता॥

५ मुझे मालूम गर होता तो फिर ऐसा नहीं होता।
न आती आंच कुत्ते पे ये सर बेशक जुदा होता॥

६ ये नामुमकिन था फिर भी जान कुत्ते की बचा देते।
अहिंसा मंत्र का उपदेश गर इनको दिया होता॥

७. मगर इन ज़ालिमों ने एक पल की न करी देरी।
दया और धर्म का न भाव कुछ इनमें जरा होता॥

जीवंधर अब अफसोस करने से क्या फायदा है, जो होना था हो चुका, अब पछताए क्या होत जब चिड़ियां चुग गई खेत। अब तो कोई सांस इसमें बाकी है, मुझे चाहिये कि इसके कान में नवकार मँत्र पढ़दूं, संभव है इसे कोई अच्छी गति मिल जावे।

(जीवंधर का कुत्ते के कान में नवकार मंत्र पढ़ना, कुत्ते का प्राण त्याग करना)
(जीवंधर का वन की शोभा देखते हुए आगे चलना। सामने से एक देवता का आते हुए दिखाई देना। देवता का जीवधर को प्रणाम करना।)

जीवंधर—क्यों भाई तुम कौन हो ?

देवता—मैं उसी कुत्ते का जीव हूँ जिसको आपने मरते समय नवकार मंत्र सुनाया था, उसी मंत्र के प्रभाव से मुझे यह देव गति प्राप्त हुई है। मुझे यह अवधज्ञान से मालूम हुआ है कि वह नवकार मंत्र आपने ही सुनाया था, इसलिए मैं मिलने की गर्ज से आपके पास आया हूं, मैं आपका अति कृतज्ञ हूँ, आपने मेरे पे बहुत अहसान किया है जो मुझे कुत्ते की जूनी से निकाल कर देवता की जूनी प्रदान की है। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूल सकता।

गाना—(चाल) आजा पहलू में मेरी जान खतर किस का है।

१. मरते मरते को मुझे आन जिलाया तुम ने।
पढ़के नवकार धर्म ध्यान दिलाया तुम ने॥

२. वरना मुझको तो भटकना था इसी दुनिया में ।
मरने जीने से मुझे मुक्त कराया तुम ने ॥

३. ये कहां थी मेरी किसमत जो देवता होता ।
स्वर्ग जाने का मुझे राह बताया तुम ने ॥

४. आपका अहसान हरगिज मैं नहीं भूलूंगा ।
जाम अमृत का मुझे आज पिलाया तुम ने ॥

५. तेरे अहसान का बदला मैं चुकाऊँ क्योंकर ।
डूबती नाव को है पार लगाया तुम ने ॥

६. मुझ को सँसार के सागर से तिराया तुम ने ।
नर्क से लाके स्वर्ग धाम दिलाया तुम ने ॥

७. इस से बढ़ करके नहीं दान कोई दुनिया में ।
एक कुत्ते को जो है देव बनाया तुमने ॥

जीवंधर आपने मुझपर बड़ा उपकार किया है, मैं आपका अहसान हरगिज़ हरगिज़ नहीं भूल सकता ।

जीवँधर—भाई मैंने तुम पर कोई भारी अहसान नहीं किया, तुम मेरी तारीफ के क्यों पुल बांध रहे हो, मरते को नवकार मन्त्र सुनाना तो प्रत्येक मनुष्य मात्र का कर्तव्य है ।

देवता—महान पुरुषों की यही बात होती है कि वह उपकार करके भी उसे उपकार नहीं समझते । ऐसी आत्माएं

संसार में बहुत कम मिलती हैं, जीवंधर मैं आप का दास हूँ। मैं आपसे दूर नहीं हूँ, जब कभी भी मेरे योग्य कोई काम हो ज़रूर मुझे याद कर लेना, अव्वल तो मैं ही तुम्हारा सब हाल अवधज्ञान से मालूम करता रहूँगा। अच्छा लो अब मैं जाता हूँ क्योंकि उन ब्राह्मणों को भी ज़रा ठीक करना है।

(जीवंधर का आगे चल पड़ना) (देवता का चला जाना)

इसी राजपुरी शहर में एक सेठ कुबेरमित्र रहता है, इसकी स्त्री का नाम विनय माला है और उसकी पुत्री का नाम गुणमाला है, दूसरा सेठ ऋषभदास है उसकी स्त्री का नाम शीलवती है और पुत्री का नाम सुरमंजरी है। गुणमाला और सुरमंजरी दोनों आपस में सहेलियां हैं। यह भी अपनी अपनी बांदियों को साथ लेकर वसंत ऋतु की बहार देखने वन में आई हुई हैं, इन दोनों सहेलियों का आपस में वाद-विवाद हो गया है, गुणमाला कहती है मेरा चूर्ण अच्छा है सुरमंजरी कहती है मेरा चूर्ण अच्छा है।

सुरमंजरी-(शैर)

१ तेरे चूर्ण से गुणमाला मेरा चूर्ण आला है।
काला नून मिरच भी ड़ाला ड़ाला गरम मसाला है॥
२ पीपरमैंट और हींग भी ड़ाली नींबू का सत डाला है।
तेरे चूर्ण से मेरा लाखों ही दरजे आला है॥

गुणमाला—

१ तेरे चूर्ण में क्या रक्खा, मेरा चूर्ण आला है।
तरह तरह की खुशबु डालीं नींबू का सत डाला है॥
२ जो भी चखले चूर्ण मेरा हो जाता मतवाला है।
पीपरमैन्ट और हींग भी डाली नमक भी डाला काला है॥

सुरमंजरी—(गुणमाला के चूर्ण को चाखती है और थूक देती है)
(शेर) १ तेरे चूर्ण में बदबू है, मेरा चूर्ण आला है।
कूट छान कर लाई हूँ तू क्या जाने गुणमाला है॥
२ मेरे चूर्ण में खुशबू है तेरा बदबू वाला है।
मेरे चूर्ण आगे तेरे चूर्ण का मुंह काला है॥

गुणमाला—१ तेरा चूर्ण तो मिट्टी है आफत का परकाला है।
जरा सा चक्खा था मैंने पड़ गया मुंह में छाला है॥
२ कड़वा कड़वा है तेरा मेरा मनरंजन वाला है।
मैंने चूर्ण में अपने चटपटा मसाला डाला है॥

सुरमंजरी—बहिन मैंने ऐसे ऐसे मसाले डाले हैं कि कोई भी मेरा चूर्ण बुरा नहीं बता सकता।

गुणमाला—बहिन यह कौन कहता है कि तुम्हारा चूर्ण बुरा है, मैं तो यह कहती हूँ कि तुम्हारे चूर्ण से मेरा चूर्ण अधिक अच्छा है। मैंने कपूर और कस्तूरी भी डाली है।

सुरमंजरी—यह नहीं हो सकता मैंने भी ऐसे ऐसे मसाले डाले हैं जो तुम्हें स्वप्न में भी देखने नसीब नहीं हो सकते ।

जीवधर का टहलते टहलते सामने आते हुए दिखई देना)

सुरमंजरी--(जीवंधर को देखकर) लो हम तुम अपना अपना चूर्ण जीवंधर के पास भेज देती हैं, यह सेठ गंधोत्कट के पुत्र हैं, यह जिसका भी चूर्ण अच्छा बताएंगे वह जीती दूसरी हारी ।

गुणमाला—मुझे मंजूर है ।

(दोनों सखियां अपना अपना चूर्ण अपनी बांदियों को देती हैं और बांदियां जीवँधर के पास जाती हैं) ।

बांदी सुरमंजरी की(जीवंधर से) महाराज यह सुरमंजरी का चूर्ण है पहिले इसे चखिये ।

बाँदी गुणमाल की—नहीं महाराज पहिले गुणमाला का चूर्ण चखिये ।

जीवंधर—बाँदियो-पहिले मुझे यह बताओ यह मुआमला क्या है ?

बाँदी गुणमाला की--महाराज मैं गुणमाला की बाँदी हूँ और यह सुरमंजरी की, गुणमाला और सुरमंजरी का आपस में विवाद हो गया है गुणमाला कहती है मेरा चूर्ण अच्छा है, सुरमंजरी कहती है मेरा चूंर्ण अच्छा है, अब आप निर्णय कर दीजिये कि इन

दोनों में कौनसा चूर्ण अधिक अच्छा है, दोनों सहेलियों ने आपको ही पंच मुकर्रर किया है।

जीवंधर--वांदियो, गुणमाला और सुरमंजरी कहाँ हैं ?

वांदियां—महाराज वह देखो, वह दोनों उस वृक्ष की ओट में खड़ी हैं।

(जीवंधर का गुणमाला और सुरमंजरी दोनो की ओर देखना, जीवंधर का मोहित होना, गुणमाला और सुरमँजरी का भी जीवधर पर आसक्त होना)

जीवंधर--(मन ही मन में) यह तो दोनों ही वड़ी मन सोहनी हैं, मेरा मन न जाने क्यों इनकी ओर आकर्षित हुआ जा रहा है, जीवंधर इन्होंने अपना अपना चूर्ण तेरे पास परीक्षा के लिये भेजा है, अब तू क्या जवाव देगा, किसका अच्छा और किसका बुरा वताएगा, यह तो वड़ी उलझन में जान फंसी

(कुछ सोच कर)

जीवंधर-वांदियो, इस का निर्णय तुम किसी और ही से करा लो।

वांदियां—क्यों महाराज ?

जीवंधर-वह इसलिये कि मैं जिस का चूर्ण खराब वताऊंगा वह मुझ से नाराज हो जायेगी और बुरा भला कहेगी।

वांदी गुणमाला—नहीं महाराज ऐसी बात कदापि न होगी, जब दोनों ने आपको अपना पंच स्वीकार किया है,

तो वह कदापि आपके फैसले को अनुचित नहीं बता सकती, इस बात की आप कोई चिंता न करें।

जीवंधर–(मन ही मन में) अजीब उलझन है, एक ओर चूर्ण की परीक्षा का सवाल है, दूसरी ओर इनकी मन मोहनी सूरत मुझे दीवाना बना रही है। (कुछ सोच कर)

जीवंधर–अच्छा बांदियो। तुम अपना अपना चूर्ण मुझे दो

(दोनों बांदियों का चूर्ण जीवँधर को देना) (जीवंधर का वारी वारी चूर्ण चखना)

जीवंधर–मुझे तो यह गुणमाला का चूर्ण अधिक स्वादिष्ट प्रतीत होता है। सुरमंजरी से कहना कि इस में नाराज़ होने की कोई बात नहीं है।

बांदी सुरमंजरी–अजी तुम क्या चूर्ण के स्वाद को जानो, तुम्हें तो चूर्ण की जांच ही नहीं है कि चूर्ण कहते किसे हैं

जीवंधर–यह देखो, मैं तो पहले ही कहता था, कि एक तो मेरे से ज़रूर नाराज़ होगी, अभी तो बांदी ही नाराज़ हुई है, जब सुरमंजरी को पता लगेगा तो न जाने वह क्या पत्थर ढ़ायेगी, बांदी तू ऐसा मत कह, मैं तुझे भी निश्चय करा सकता हूँ, कि गुणमाला का चूर्ण सुरमंजरी के चूर्ण से कहीं ज्यादा अच्छा है। लाओ तुम अपना अपना चूर्ण फिर दो।

दोनों बांदियां अपना अपना चूर्ण जीवंधर को दे देती हैं। जीवंधर

(सुरमँजरी के चूर्ण को आकाश की ओर फेंकना है।)

जीवंधर-देखो सुरमंजरी के चूर्ण पर एक भी भंवरा गुंजार नहीं करता। बांदियो अच्छी तरह देख लो।

बांदियां-हां महाराज ठीक है।

जीवंधर-(गुणमाला के चूर्ण की पुड़िया आकाश में फेंक कर) यह देखो गुणमाला के चूर्ण पर कितने भंवरे गुंजार रहे हैं।

बाँदी गुणमाला-हां महाराज यह तो परीक्षा बहुत ठीक रही।

(दोनों बांदियों का भाग कर गुणमाला और सुरमंजरी के पास जाना)

बांदी गुणमाला-(खुश होते हुये) गुणमाला तुम्हारा चूर्ण अच्छा बताया है (गुणमाला खुश होती है)

बांदी सुरमंजरी-(दुखी होकर) सुरमंजरी वह कहते हैं, तुम्हारा चूर्ण खराब है।

सुरमंजरी-(नाराज़ होकर) मेरा नाम भी सुरमंजरी नहीं अगर मैंने भी जीवंधर से शादी न कराई तो।

(बांदी को साथ लेकर घर की ओर चल पड़ती है)

गुणमाला- सुरमंजरी ठहरो मैं भी आती हूँ।

सुरमंजरी-बस बहिन मैं तो चलती हूँ तुम आती रहना।

(चली जाती है)

(काष्टांगार और भूपाल मंत्री का आते हुये दिखाई देना)

काष्टांगार-(भूपाल मंत्री से) भूपाल आज तो जीवंधर भी बन की शोभा देखने के लिये आ गया है।

भूपाल-जी हां, वह क्यों नहीं आता।

काष्टांगार-वज़ीर तुम कोई ऐसी तदबीर बताओ जिससे जीवंधर को मौत के घाट उतार दिया जावे।

भूपाल-महाराज मेरी तो यह राय है कि आप अपना मस्त हाथी आज बन में छोड़ दें, जब हाथी उपद्रव मचायेगा तो जीवंधर उसे ज़रूर क़ाबू में लाने की कोशिश करेगा, इस प्रकार वह हाथी अवश्य जीवंधर को अपने पांव से रौंद देगा।

काष्टांगार--ठीक है, यह तदवीर मेरी भी समझ में आगई, मस्त हाथी शीघ्र छोड़ दिया जावे, शायद है हमारी उम्मीद बर आये।

काष्टांगार का मस्त हाथी को छोड़ना, हाथी का उपद्रव मचाना. वृक्षों को उखाड़ कर फैंकना, वहुत से बच्चों को पांव के नीचे रौंदना, बन में हा हा कार मचना, हाथी का उपद्रव मचाते हुए गुणमाला की ओर आना।)

गुणमाला--(अपनी बांदी से) बांदी यह हाथी मेरी ओर आ रहा है मुझे तो भय लगता है।

बांदी-डरो मत, लो मैं आगे आगे हो जाती हूँ, तुम मेरे पीछे पीछे आ जाओ।

गुणमाला-लो यह आ ही गया अब मैं और तुम कोई भी ज़िंदा घर को नहीं जा सकतीं।

(दोनों का थर थर कांपना)

जीवंधर का हाथी को गुणमाला की ओर जाते देख, मैदान में आ धमकना और हाथी पर मुक्कों की वारिश करना, हाथी का व्याकुल होकर चुपचाप खड़ा हो जाना)।

गुणमाला-(अपनी बांदी से) देखो यह जीवंधर कितना बलवान है, मुक्के मार मार कर हाथी को व्याकुल कर दिया है। इसने आज हमारी जान बचाई है वरना हाथी हम दोनों का पीचरा ही निकाल देता।

बाँदी-हाँ इसमें तो क्या झूठ है, जब हाथी हमारी ओर दौड़ कर आया तो मैंने तो अपने को मरा ही जान लिया था। यह तो जीवंधर की ही हिम्मत है जो हाथी को हम तक न पहुंचने दिया।

(गुणमाला जीवंधर पर आसक्त हो जाती है और टिकटीकी बांधकर जीवंधर की ओर देखने लगती है)

बाँदी-आओ गुणमाला शाम हो गई घर लौट चलें।

(गुणमाला, जीवंधर की ओर देखती हुई अपने घर की ओर चल पड़ती है, जीवंधर भी अपने घर की ओर चला जाता है)।

(परदे का गिरना)

(गुणमाला के मकान का परदा)
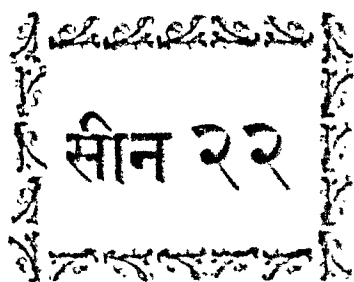
(गुणमाला की माता विनयमाला का गुणमाला की राह देखते हुए नज़र आना)

विनयमाला-(गुणमाला को बांदी के साथ आती देखकर) बेटी गुणमाला आज तुम ने इतनी देर कहाँ लगाई, मुझे तो तुम्हारी राह देखते घंटों हो होगए।

गुणमाला-माता । आज तो मैं मौत के मुंह से बचकर आई हूँ ।

विनयमाला--हैं बेटी, यह तुम क्या कह रही हो ?

(भौंचक्की सी रह जाना)

गुणमाला--माता जी मत पूछिये, मैं कुछ नहीं बता सकती ।

विनयमाला--बेटी, घबराओ नहीं आखिर बात क्या है ?

गुणमाला--माता जी आज तो मैं राजा के मस्त हाथी से बाल बाल बच गई, आज अगर गन्धोत्कट का पुत्र जीवंधर उस समय न होता, तो बस मैं, तुझे अब ज़िंदा ही न मिलती ।

(विनयमाला, गुणमाला को छाती से लगाती है और घर में ले जाती है)

विनयमाला--बेटी गुणमाला, लो खाना तो खालो ।

गुणमाला--मां, मुझे खाना पीना कुछ नहीं सुहाता, मुझे तो हाथी का सहम चढ़ रहा है ।

(गुणमाला भूखी ही रात को सो जाती है)

(दूसरे दिन)

गुणमाला---(अपने पढ़ाये हुवे तोते से) अरे तोते क्या तुम एक पत्र मेरा जीवंधर को दे आओगे ।

तोता--क्यों नहीं ।

गुणमाला--तो लो इसका जवाव भी लेते आना, देखना किसी को इस बात का पता तक न हो ।

तोता—नहीं गुणमाला, यह बात कहीं कहने की हुवा करती है ।

(गुणमाला चिट्ठी लिखती है)

प्यारे जीवंधर–गाना(चाल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मु०

१. दिखाकर शकल क्यों भोली मुझे विरहन बनाया है ।
मेरा मन हर लिया तुमने ये क्या जादू चलाया है ॥

२. तेरी चाहत में जीवंधर न इक पल चैन आती है ।
ग़मे फ़ुरक़त ने तेरी क्या मुझे व्याकुल बनाया है ॥

३. गुज़ारी रात तो गिन गिन के तारे अब मेरे प्यारे ।
कि मैं ही जानती हूँ किस तरह से दिन बिताया है ॥

४. मेरी आंखों में आजाओ ज़रा दीदार हो जाये ।
सिवाये आपके कोई नहीं दिल में समाया है ॥

५. बचाया किस लिये था तुमने मुझको मस्त हाथी से ।
मरी को क्यों जिला करके मुहोबत में फँसाया है ॥

६. ये बहतर था कि मर जाती मैं हाथी से कुचल करके ।
न तेरा दीद होता जिसने दीवाना बनाया है ॥

७. यकीं करले मैं अपनी जां गवादूंगी तेरी ख़ातिर ।
तेरी फ़ुरक़त में मैंने कल से खाना भी न खाया है ॥

८. मेरे इस पत्र का उत्तर मेरे तोते को दे देना ।
तेरी उलफत ने जीवंधर जनूं मेरे पे छाया है ॥

(गुणमाला का यह पत्र तोते को देना और कहना कि जीवंधर से इस का जवाब भी लेता आवे । तोते का पत्र को लेकर उड़ जाना ॥)

(परदे का गिरना)

(जँगल का परदा)

(जीवंधर का नदी पर अश्नान करते हुवे नजर आना, तोते का जीवंधर के पास पहुँचना।)

तोता—(जीवँधर को देखकर) लो महाराज यह पत्र गुणमाला ने आप के पास भेजा है।

(जीवंधर का खुश होना, पत्र को खोल कर पढ़ना और उसका उत्तर लिखना)

प्रिय गुणमाला। (गाना) (चाल) अय ज़मी मुझको छिपाले मैं गुन्हेगारों में हूँ।

१ मैं भी तेरी ही तरह से हो रहा बीमार हूँ।
बस नहीं चलता मगर इस बात से लाचार हूँ॥
२ मैं ने भी खाना नहीं खाया तुम्हारी याद में।
तेरी ही चाहत में मैं भी हो रहा बेज़ार हूँ॥
३ जब से देखा है तुझे कुरबान हूँ दिल जान से।
तेरी ख़ातिर जान भी देने को मैं तय्यार हूँ॥
४ फैसला मैंने भी अपने दिल में पुख़ता कर लिया।
मैं भी जां देदूंगा तेरा गर नहीं भरतार हूँ॥
५ तेरा मिलना अब तो लेकिन सख़त मुशकिल हो गया।
नहीं तू आज़ाद है नहीं मैं ख़ुद मुख़तियार हूँ॥
६ देखते हैं यह जुदाई रँग क्या क्या लायेगी।
तू उधर चाहे इधर मैं तालिबे दीदार हूँ॥

७ क्या करूं इस से ज़्यादा अपनी चाहत का बयां।
अपनी उलफ़त का सभी में कर चुका इज़हार हूँ॥
८ हां मगर इस काम में जल्दी न करनी चाहिये।
दिल ही दिल में तू मेरी और मैं तेरा दिलदार हूं॥
९ प्रेम का उलफ़त का होता है जुदाई में मज़ा।
इंतज़ारे यार तू, मैं, इंतज़ारे यार हूँ॥

जीवंधर—लो मियां तोते यह गुणमाला के पत्र का उत्तर लेते जाओ।

(तोते का पत्र अपनी चोंच में लेकर उड़ जाना)

सीन २४
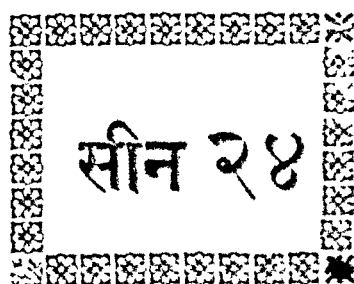
गुणमाला का अकेली तोते की इंतज़ार में बैठे हुवे नज़र आना। तोते का पत्र चोंच में लिये हुवे आना, गुणमाला का खुश होना। पत्र का पढ़ना, गुणमाला की सखी का दबे पांव कमरे में प्रवेश करना, गुणमाला का अपनी सखी को देखकर पत्र छिपा लेना।

सखी-गुणमाला यह पत्र किसका आया है ?

गुणमाला-कैसा पत्र (पीठ की ओर छिपा लेती है)

सखी—यह तुम अभी, पढ़ क्या रही थीं ?

गुणमाला-यह पत्र नहीं था।

सखी-(शेर) अपनी सखी से भेद छिपाना नहीं अच्छा।
दिल में ना रखे बात सताना नहीं अच्छा॥

गुणमाला-यों भेद अपने दिलका बताना नहीं अच्छा।
कमरे में मेरे आपका आना नहीं अच्छा॥
सखी—सब जानती हूँ बात, बहाना नहीं अच्छा।
फोटू किसी का दिल में बसाना नहीं अच्छा॥
गुणमाला-दुखिया के दिल को और दुखाना नहीं अच्छा।
रोती हुई को और रुलाना नहीं अच्छा॥
सखी-चूर्ण बुरा किसी का बताना नहीं अच्छा।
सुरमंजरी से राढ़ बढ़ाना नहीं अच्छा॥
गुणमाला-देखो सखी, यूं मुझको सताना नहीं अच्छा।
मालूम है गर भेद, चिड़ाना नहीं अच्छा॥
सखी-चूर्ण किसी को अपना चखाना नहीं अच्छा।
तोते को इस तरह से पढ़ाना नहीं अच्छा॥
गुणमाला-मालूम है गर राज़ तो गाना नहीं अच्छा।
मेरे को इस तरह से लजाना नहीं अच्छा॥

(गुणमाला की माता विनयमाला का आना)

विनयमाला-गुणमाला! चल, अब तो खाना खा ले।
गुणमाला-माता! मेरे से खाने पीने का नाम न लो।
विनयमाला-अच्छा बेटी तेरी मरज़ी है।

(विनयमाला और गुणमाला की सखी का कमरे से बाहर चले जाना)

विनयमाला-(गुणमाला की सखी से) क्यों री, तुझे कुछ मालूम हो इस गुणमाला के कल से क्या हो गया है? न खाना खाती है, न पानी पीती है।

सखी-माता जी ! बात तो मैं बता दूं, परन्तु गुणमाला नाराज़ न हो जाये ।

विनयमाला-तुम बताओ तो सही, मैं गुणमाला को ख़बर भी न होने दूंगी ।

सखी-माता, जी मैं ने गुणमाला की सारी बात जान ली है, वह सेठ गंधोत्कट के पुत्र जीवंधर पर आसक्त है ।

(गुणमाला के पिता सेठ कुबेरमित्र का घर में प्रवेश करना, सखी का बाहर चला जाना)

कुबेरमित्र-(अपनी स्त्री से) क्या गुणमाला ने खाना खा लिया है ?

विनयमाला-वह तो कहती है मेरे सामने खाने का नाम भी न लो ।

कुबेरमित्र-आख़िर बात क्या है ?

विनयमाला-मैं ने सुना है वह सेठ गंधोत्कट के पुत्र जीवंधर से शादी कराना चाहती है ।

कुबेरमित्र—तो इस में बात भी क्या है, मैं अभी दो आदमी सेठ गंधोत्कट के हां भेज देता हूँ जो अभी जाकर रिश्ता पक्का कर आएँगे

(कुबेरमित्र का दो आदमी सेठ गंधोत्कट के पास भेजना)

(परदे का गिरना)

सीन २५

(सेठ गंधोत्कट के मकान का परदा)
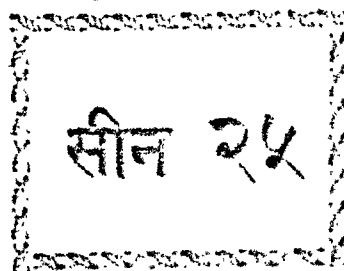
(सेठ गंधोत्कट का बैठे हुए नज़र आना। सेठ कुवेरमित्र के दोनों आदमियों का पहुँचना। गंधोत्कट का दोनों को सम्मान से बैठाना। (वार्तालाप)

गंधोत्कट--कहिये आज कैसे आना हुआ ?

एक आदमी--महाराज हमें सेठ कुवेर मित्र ने भेजा है। सेठ कुवेर मित्र के एक पुत्री गुणमाला है जिसको आपके पुत्र ने कल ही राजा के मस्त हाथी के पाँव के नीचे से आते आते बचाया है, गुणमाला चाहती है कि मेरी शादी जीवंधर से ही होनी चाहिए इसलिये सेठ कुवेरमित्र ने हम दोनों को गुणमाला का रिशता पक्का करने के लिये भेजा है, सुना है आपके जीवंधर को भी गुणमाला से अनुराग है।

गंधोत्कट--अगर जीवंधर को भी उससे प्रेम है तो मुझे रिशता करने में क्या उज़र हो सकता है।

(दोनों आदमियों का रिशता पक्का करके सेठ कुवेरमित्र को खबर देना। कुवेरमित्र का खुश होना और विवाह की तय्यारी करना। शुभ लगन देखकर विवाह का दिन निश्चत होना। सेठ गंधोत्कट का बरात लेकर सेठ कुवेरमित्र के मकान पर पहुँचना और धूम धाम से शादी होना। गुणमाला का बरमाला जीवंधर के गले में पहनाना। सेठ कुवेरमित्र का अपनी पुत्री गुणमाला का हाथ जीवंधर को पकड़ाना। बाजे बजना, सखियों का गाना।)

(चाल) जिन धर्म का डंका आलम में बजवा दिया केवल ज्ञानी ने।

१. मन माना पति बनाए लिया गुणमाला ने जीवंधर को
अपना प्रीतम बतलाए दिया गुणमाला ने जीवंधर को

२. ऐसी ही शादी में है मज़ा, जिस में दोनों की होय रज़ा
खुद ढूंड़ा अपने आप पिया, गुणमाला ने जीवंधर को

३. गुणमाला है किसमत वाली, जीवंधर पे है मतवाली।
आंखों आँखों में प्यार किया गुणमाला ने जीवंधर को ॥

(इस प्रकार जीवंधर की दूसरी शादी गुणमाला के साथ होती है)

(परदे का गिरना)

सीन २६
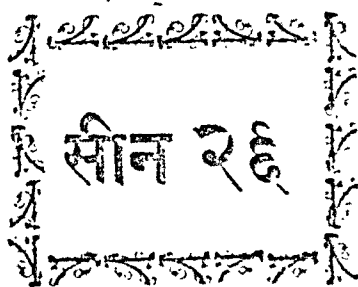
काष्टांगार के दरबार का परदा

(राजा काष्टांगार और भूपाल आदि मंत्रियों का व सेनापति का दरबार में बैठे हुए नज़र आना)

दरबान-महाराज महावत बाहर खड़ा है।

काष्टांगार-अन्दर आने दो।

(महावत का आना)

महावत-(प्रणाम करके) महाराज आप का हाथी सख्त बीमार है, दो चार सांस बाकी हैं मरने को तय्यार है। जब से जीवंधर ने उसे मुक्कों से मारा है, तब से न उसने खाना खाया है न रात को सोया है।

काष्टांगार-अच्छा महावत तुम जाओ, और हाथी की दवा दारू करो, मैं जीवंधर को अभी बुलाता हूँ और सज़ाए मौत का हुक्म सुनाता हूँ

(महावत का प्रणाम करके चला जाना)

काष्टांगार-सेनापति।

सेनापति—जी हज़ूर (खड़ा हो जाता है)

काष्टांगार-तुम जाओ और जीवंधर को फौरन गिरफतार करके दरबार में हाज़िर करो।

सेनापति—जो हुकम (चला जाता है)

काष्टांगार-भूपाल किसी गाने वाली को लो बुलाओ।

भूपाल मंत्री का गाने वाली को आवाज़ देना, सुरदत्ता वैश्या का नाचते हुए आना और गाना।)

(चाल) अड़गई अड़गई हो हो जिन्दड़ी अड़गई नाल कृष्ण दे।

फिरगई फिरगई हो हो पछवा फिर गई देख जगत में। (टेक)

१ द्वेष करे भाई से भाई, बात बात में करे लड़ाई,
भूट कपट चोरी चतुराई, फूट अटरिया चढ़ गई हो॥ प.

२ कलजुग खोटा पहरा आया, क्रोध लोभ हृदय में छाया,
हिंसा करम सभी मन भाया, नाव भंवरया पड़ गई हो॥ प.

३ विद्या हीन भये नर नारी, बन गये सारे पापाचारी,
कौन करे भाई रखवारी, खेत को चिड़िया चुग गई हो॥ प.

४ नियामत दया धर्म नहीं जाने, गुरु बचन चेला नहीं माने,
ना कोई पंडित ना कोई सयाने, भांग कुवें में पड़ गई हो॥प

(सेनापति का जीवंधर को गिरफ़्तार करके ज़ाना, सेठ गंधोत्कट का भी साथ आना)

सेनापति—महाराज जीवंधर हाज़िर है।

काष्टांगार—मैं इस का मुंह देखना नहीं चाहता, इस को फांसी की सज़ा दी जाती है, फौरन जल्लादों के हवाले कर दिया जाये।

सेठ गंधोत्कट– शेर) महाराज गुस्सा न कीजिये ज़रा ।
सज़ावार हो इस को दीजे सज़ा ॥
मगर दीजियेगा मुझे भी बता ।
किया इसने अपराध क्या आपका ॥

काष्टांगार–(शेर) बड़ा बेशरम है ये बेटा तेरा ।
नहीं खौफ़ खाता मेरा भी जरा ॥
मेरा मस्त हाथी इसी ने हता ।
न क्यों इसको दूं मैं हुक्म मौत का ॥

जीवंधर–(शेर) १ न गाली से तू इस तरह पेश आ ।
अभी खैंच लूंगा मैं तेरी ज़ुबाँ ॥
मुझे तो ज़रा खौफ़ है तात का ।
न हो जाए मुझ से कहीं बदग़ुमां ॥

२ वगरना है तू कौन हसती भला ।
तुझे क्या नहीं मेरी शक्ति अयां ॥
स्वयंवर में सर तेरा नीचा किया ।
वही हूँ तू क्यों भूल मुझको गया ॥

३ मेरे तात ने रोक मुझको दिया ।
वगरना मैं हरगिज़ न आता यहां ॥
थी हिम्मत किसी की जो लाता यहां ।
तेरी फौज को मैं सुलाता वहां ॥

४ पिता के हुक्म से हूँ इस दम बंधा ।

है लाज़िम पिता का हुकम मानना ॥
ग़लत है ये बिल्कुल ही कहना तेरा ।
तेरे मस्त हाथी को मैंने हता ॥

५ तेरे मस्त हाथी ने मस्ती में आ ।
उधम सारे बन में दिया था मचा ॥
लगे लोग भी भागने जा बजा ।
दिया रोंद उसने जो आगे मिला ॥

६ मेरी तरफ भी रुख जो उसने किया ।
तो मेरे से भी बस रहा न गया ॥
यूं सर अपने आती जो देखी बला ।
तो बे मौत मुझ से मरा न गया ॥

७ न कोई मेरे पास हथियार था ।
न कोई मेरा साथ में यार था ॥
न कोई मेरा वाँ मददगार था ।
किया मैंने मुक्के का ही वार था ॥

८ भला मेरे मुक्के की हस्ती है क्या ।
कि इस मेरे मुक्के में शक्ति है क्या ॥
कहाँ मेरा मुक्का कहां वो बला ।
ग़लत है कि मुक्के से हाथी मरा ॥

९ ज़रा कोई भी तो करे फैसला ।
कि मुक्के से हाथी मरे किस तरा ॥

कहो यूं मेरे से तुझे ख़ार था।
मेरी जिन्दगी से तू बेज़ार था॥
१० मेरी जान लेने को तय्यार था।
न मौक़ा मिला इस से लाचार था॥
बहाना ये हाथी का जो मिलगया।
ये मौक़े सज़ा आपको मिल गया॥
१५ खुशी से मुझे दीजियेगा सज़ा।
मुझे भी है मंज़ूर अपनी क़ज़ा॥
मैं राज़ी हूँ जिसमें है तेरी रज़ा।
मुझे मारके देख ले तू मज़ा॥
१२ नतीजा मगर जल्द मिल जायेगा।
नहीं चैन तू भी कभी पायेगा॥
तू खुद अपनी करनी पे पछताएगा।
कि रोयेगा, चिल्लाए, शरमाएगा॥

काष्टांगार—ख़ामोश हो जा, जियादा बकवास न कर।

(काष्टांगार का जल्लादों को हुक्म देना कि जीवंधर को फ़ौरन जंगल में लेजाकर फांसी दे दो। जीवंधर का अपने पिता गंधोत्कट के पांव में गिरना। गंधोत्कट का उठा कर प्यार करना। गंधोत्कट का रोते हुए अपने घर की ओर चलना। जल्लादों का जीवंधर को हथकड़ी लगाये हुये फांसी देने के लिये ले जाना।)

(पर्दे का गिरना)
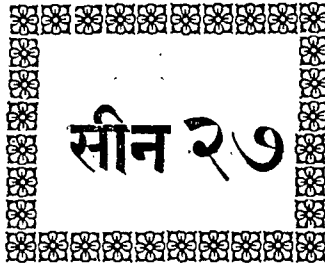
(जंगल का परदा)

जल्लादों का जीवंधर को फांसी पर लटकाना। जीवंधर का नवकार मँत्र पढ़ना। देवता का आकाश से आना और जीवंधर को फांसी के तख्ते पर से ऊपर की ऊपर उठा कर ले जाना। जल्लादों का हैरान होना और आपस में बात चीत करना।

एक जल्लाद–हैं यह क्या हुआ जीवंधर कहां गया ?

दूसरा ज़ल्लाद–(ऊपर की तरफ देखकर) वह देखो उसे कोई आकश में लिये हुए जा रहा है।

पहला जल्लाद–भाई मैं तो पहले ही जानता था कि इस में देवमई शक्ति है, अब हमें क्या करना चाहिये, काष्टाँगार तो अब हमें भी जिन्दा न छोड़ेगा।

दूसरा जल्लाद–हुई तो आश्चर्य की बात है, ज़रा सी आहट भी तो नहीं सुनाई दी, वरना हम उसे हरगिज़ न ले जाने देते।

पहला जल्लाद–अच्छा तो अब हमें अपने बचाओ का क्या प्रवन्ध करना चाहिये ?

दूसरा जल्लाद–भाई मेरी राय में तो हमें काष्टांगार से साफ साफ कह देना चाहिये कि उसे तो कोई फाँसी के तख्ते पर से ऊपर की ऊपर उड़ाकर ले गया, शायद

है, सच्च बोलने से काष्टांगार हमें बख्श दे।

पहला जल्लाद—नहीं भाई ऐसा कहना तो हमारे लिए बहुत मंहगा पड़ेगा, काष्टांगार हमें हरगिज जिंदा न छोड़ेगा कारण कि हमारे पास कोई सबूत तो है ही नहीं, दूसरे यह बात वैसे भी यक़ीन आने वाली नहीं है। राजा यह समझेगा कि यह झूठ बोल रहे हैं।

दूसरा जल्लाद—तो फिर क्या करना चाहिये ?

पहला जल्लाद—भाई मेरी राय तो यह है कि इस समय हम झूठ ही बोल दें, हमें जाकर यही कहना चाहिए कि हम जीवंधर को फांसी दे आये हैं और सबूत के लिए किसी जानवर का खून साथ ले जाना चाहिए।

दूसरा जल्लाद—हां भाई यह राय तुमने ठीक दी।

(दोनों का चला जाना)

(देवता का जीवंधर को चन्द्रोदय पहाड़ पर ले जाकर छोड़ना। इस पहाड़ पर बड़े बड़े मन्दिर हैं। जीवंधर का खुश होना। यह देवता उसी कुत्ते का जीव है जिसे जीवंधर नें मरते समय नवकार मन्त्र सुनाया था।)

जीवंधर—देव। तुमने मुझ पर बड़ा उपकार किया है जो मुझे मौत के मुंह से निकाल कर लाये हो। मैं आपका निहायत मशकूर हूं।

देवता—इसमें मशकूरी की कौन सी बात है, क्या आपने मुझ पर कम उपकार किया था जो मुझे कुत्ते की जूनी से निकालकर देवता का पद प्राप्त हुआ।

जीवंधर—देव यहाँ तो बड़े बड़े शिखरबन्द मन्दिर हैं तुमने मुझे बड़े रमणीक स्थान पर छोड़ दिया है, क्या मैं इन मन्दिरों के दर्शन कर आऊं ?

देवता—क्यों नहीं, तुम इन सब मन्दिरों के दर्शन करो, मैं भी अब स्वर्ग को जाता हूँ। लो यह तीन विद्याएं तुम्हें देता हूँ जो समय समय पर तुम्हारी सहायता करती रहेंगी।

(देवता का तीन विद्याएं जीवंधर को देना। पहली बहुरूपिणी, दूसरी बंधमोचनी, तीसरी विष मोचनी। यह तीन विद्याएं मैं तुम्हें देता हूँ। अब तुम्हारा बुरा वक्त टल चुका है। जल्द ही तुम अपने पिता की राजगद्दी पर बैठोगे।

(देवता का प्रणाम करके चले जाना)

जीवंधर का आगे चलना। (ड्राप सीन)

इति नियामतसिंह रचित विजया सुन्दरी नाटक का पहला ऐक्ट समाप्तम् शुभम्।

सती

विजिया सुन्दरी नाटक

जीवंधर का अपनी छः शादियां और करना। राजा काष्टांगार को मारना और अपने पिता की राजगद्दी पर बैठना। सती विजिया सुन्दरी का अपना उद्देश्य पूरा करके दण्डक वन को वापिस लौट जाना।

चंदर प्रभा पुरी के राज दरबार का परदा

जीवंधर का मन्दिरों के दर्शन करते हुए चंद्रप्रभा पुरी में पहुंचना, इस नगरी के राजा का नाम धनपाल है और इसकी रानी का नाम तिलोत्मा है और इस के पुत्र का नाम लोकपाल है इसके एक पुत्री है, जिसका नाम पदमावती है। पदमावती बड़ी रूपवती और गुणवान है। एक दिन पदमावती भगवान के दर्शन के लिये जारही थी जूंही कि इस ने भगवान पे चढ़ाने के लिये फूलों पर हाथ डाला सर्प ने इसे तत्काल ही डस लिया, पदमावती बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गई। पदमावती की बांदी का भाग कर राजा धनपाल को खबर देना।

सखी–(राजा को दरबार में देख कर) **महाराज आप की पुत्री पदमावती को सर्प ने डस लिया है।**

धनपाल–**हैं! यह क्या हुआ।**

(राजा धनपाल का इक दम सिंहासन से उठना और बांदी को साथ लेकर मँदिर की ओर चलना। दरबारियों का भी साथ साथ पीछे पीछे चलना, और भी बहुत से लोगों का साथ साथ हो लेना। जीवंधर का भी इनके साथ २ हो लेना। राजा धनपाल का अपनी पुत्री पदमावती के पास पहुंचना, पुत्री को बेहोश देखकर

धनपाल(ज़ोर से चिल्लाकर) **क्या इस जनता में कोई ऐसा पुरुष है जो मेरी पुत्री का ज़हर उतार सके?**

(कई वैद्यों का ज़हर उतारने के लिये आना परन्तु असमर्थ रहना। राजा लोकपाल और उसके कुटंबियों का हा हाकार मचाना। रानी तिलोत्मा का अपनी पुत्री को गोद में लेकर विलाप करना।)

गाना–(चाल) वीर क्या तेरी निराली शान है।

१. सर्प ने पुत्री को मेरी डस लिया।
अय विधाता क्या गज़ब तूने किया ॥

२. एक ही पद्मा थी बेटी गुलबदान।
हाय उस को भी जुदा हम से किया ॥

३. इस से बेहतर साँप डस लेता मुझे।
मैं ने तो सुख जिंदगी का भर लिया ॥

४. क्या करम इसका उदय में आ गया।
जिंदगी का सुख नहीं लेने दिया ॥

५. थी अभी शादी के ये लायक हुई।
ऐन मौके पे है खूं इसका किया ॥

६. है मसीहा कौन अब तेरे पिया।
तूने मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया ॥

७. मेरी पद्मा को भी अब ज़िन्दा करो।
वियोग में इसके मेरा तड़पे जिया ॥

भगवान अब तेरे सिवा कोई नहीं।

(शैर) १. तुम्हीं ने दर्द दिया है तुमही दवा देना।
कि मेरी पद्मा को जैसे भी हो बचा लेना ॥

२. मैं तेरा अहसान ता ज़िन्दगी न भूलूंगी।
हो जिस तरह मेरी बेटी को तुम जिला देना ॥

(जीवंधर का रानी को रोती हुई देख कर दिल भर [illegible])

जीवंधर– (राजा से) महाराज इस कन्या को क्या हुआ ?

धनपाल–महाराज इसे सर्प ने डस लिया है।

जीवंधर--इस का जहर शीघ्र उतारना चाहिये।

धनपाल--क्या बताएं, हमने तो सब वैद्यों को दिखा लिया है कोई भी वैद्य इस का जहर उतारने को समथ न हुवा।

जीवंधर--अच्छा महाराज, में प्रयत्न करता हूँ।

(जीवंधर का विषापहार मंत्र पढ़ना और ज़हर का आहिस्ता आहिस्ता उतरना। पदमावती का होश में आना, धनपाल का खुश होना। पदमावती का जीवंधर की ओर देखना और मोहित होना।)

गाना – सोया हुवा था चैन से किसने मुझे जगा दिया।

१ मुझको डसा था साँप ने किसने मुझे जिला दिया।
दिल जान से हूँ मैं फिदा जिसने मुझे जगा दिया॥
२ बेहोश थी मैं हो रही जीने की आश भी न थी।
मेरा ज़हर उतार के अमृत मुझे पिला दिया॥
३ है कौनसा वो दिलरुबा, है जिसके हाथ में शफ़ा।
मैं भी देखलूं ज़रा, किस ने जहर हटा दिया॥
४ जिसने मेरा भला किया, है बस वही मेरा पिया।
मैंने भी उसके वास्ते तन मन व धन लुटा दिया।
५ पद्मा ने अपनी मात से जीवन को देख यूं कहा।
शादी इसी से हो मेरी इसने मुझे बचा दिया॥

(रानी तिलोत्तमा का राजा धनपाल से ज़िक्र करना)

तिलोत्तमा--प्राणनाथ, पद्मावती जीवंधर से शादी करवाना चाहती है, कहती है कि जिसने मेरा जहर उतारा है, मैं शादी उस ही से करवाऊंगी।

धनपाल-बड़ी अच्छी बात है मैं जीवंधर से अभी पता लेता हूँ कि वह किस जाति का है और कहां का रहने वाला है।

(धनपाल का जीवंधर के पास जाना और बात चीत करना)

धनपाल--जीवँधर तुमने मेरी पुत्री पर बड़ा उपकार किया है, मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी पुत्री की शादी तुमसे ही करदूं, कृपा करके तुम यह बताओ कि कहां के रहने वाले हो और किस जाति के हो।

जीवंधर-- गाना (चाल) अजब दुनिया की हालत है अजब है नाज़रा देखा।

१ बताऊं क्या तुम्हें राजा मैं घर अपना शहर अपना।
थे जब थे अब तो कोई भी न दर अपना नगर अपना॥
२. लो तुमने पूछ ही मुझ से लिया तो मैं बताता हूँ।
जीवंधर नाम है मेरा सत्यंधर है पिदर अपना॥
३ पिता राजा थे और था काष्टांगार पास में नौकर।
पिता को मार कर नौकर ने रक्खा ताज सर अपना॥
४ मुझे भी लाख कोशिश मारने की उसने की लेकिन।
मैं क़िसमत से हूँ बच आया गवां कर मालोज़र अपना॥
५ मगर अब दिल में है मैं उस से लड़कर राज लेलूंगा।
चखाऊंगा मज़ा सीधा मुक़द्दर हो अगर अपना॥
६ कहां तक मैं सुनाऊं दिल जली है दास्तां मेरी।
कलेजा मुंह को आता है सुनाते भी जिकर अपना॥

धनपाल-जीवंधर तुम राजपाट जाने की कोई चिन्ता न

करो। मैं तुम्हें अपना आधा राज्य देता हूँ, और अपनी पुत्री पदमावती की भी तुम से शादी करता हूँ तुम यहीं रहो और ऐशो आराम से अपनी ज़िन्दगी बसर करो।

जीवंधर--गाना (चाल) अजब दुनिया की हालत है अजब ये माजरा देखा।

१. तुम्हारे राज की राजा नहीं मुझ को जरूरत है।
नज़र जो दूसरे के माल पे रक्खे वो धूर्त है॥

२. पिता का राज को लेने को मुझ में आप शक्ति है।
मेरे आगे नहीं हो काष्टांगार कोई हस्ती है॥

३. मैं उसको मार कर अपने पिता का राज ले लूंगा।
मैं हूं मशकूर जो नज़रे इनायत अपने की है॥

४. मगर अब ज़िक्र न करना मेरे को राज देने का।
राज के नाम से राजा वदन में आग लगती है॥

धनपाल--जीवंधर मुझे क्षमा करो। मेरी भूल हुई जो मैं ने तुम्हें राज़ देने को कहा, तुम बिलाशक राजपुत्र हो, तुम ने अपना क्षत्रीपन साबित कर दिया है, मैं अपनी पुत्री पदमावती की शादी तुम से करता हूं कृपा करके आप इसे ग्रहण करें।

(जीवंधर का नीचे को सर करके खड़ा हो जाना। धनपाल का खुश होना। गाजे बाजे बजना। मण्डप रचाना सारे शहर में रोशनी होना। जीवंधर का मण्डप में ऐक ऊंचे स्थान पर बैठे हुए नज़र आना पदमावती का अपनी सहेलियों को लेकर वर माला पहनाने के लिये जीवंधर के पास आना। बरमाला जीवंधर के गले

में डालना । धनपाल का अपनी पुत्री पद्मावती का हाथ जीवंधर के हाथ में पकड़ाना और शादी करना ।)

(पद्मावती की सखियों का गाना)

क्या ही सुन्दर वर मिला है आज ये पद्मावती को (टेक)

१ पहले इसने जहर उतारा । कामरूप इसने फिर धारा ॥
काम बाण ज्यूं ही कि मारा । पद्मा को मोहित कर डारा ॥

२ लगता है सबको ही प्यारा । कौन नहीं जाये बलिहारा ॥
शोभित है मण्डप भी सारा । जादू सा इसने कर डारा ॥

जीवंधर--प्यारी पद्मावती अब मुझे बहुत दिन तुम्हारी नगरी

(इस प्रकार तीसरी शादी जीवंधर की पद्मावती के साथ हो जाती है)

(परदे का गिरना)

सीन २६

जीवंधर के महल का परदा

कुछ दिन जीवंधर चन्द्रप्रभा पुरी में अपनी स्त्री पद्मावती के पास सुख भोगता रहा एक दिन रात को जीवंधर के मन में अपने देश जाने का विचार उत्पन्न होना और पद्मावती से अपने दिल का हाल कहना)

जीवंधर--प्यारी पद्मावती अब मुझे बहुत दिन तुम्हारी नगरी में रहते हुए हो गए हैं, अब मेरा विचार अपने देश को वापिस जाने का है कारण कि मुझे उस पापी काष्टांगार से लड़कर अपने पिता का राज्य वापिस लेना है, इस लिए तुम मुझे खुशी से जाने की आज्ञा दे दो, राज मिलने पर मैं तुम्हें वापिस आकर

पद्मावती--प्राणनाथ, मैं आपके बगैर एक पल भी अकेली नहीं रह सकती, जहां तुम हो वहीं मैं रहूँगी, जहाँ तुम जाओगे वहीं मैं भी साथ चलूंगी, क्या चाँदनी कभी चंदा से दूर हो सकती है ?

(शैर)

१. पिया बिन मेरा इस दुनियाँ में रहना सख़्त मुशकिल है।
जुदाई का यों ग़म मेरे से सहना सख्त मुशकिल है॥
२. न जाने का ज़िकर कीजे मैं अपनी जां गंवादूंगी।
चले जाओ जुबां अपनी से कहना सख्त मुशकिल है॥

जीवंधर--प्यारी इतना न घबराओ, अभी कौनसा मैं चला गया। मैंने तो अपना विचार ही प्रगट किया था।

पद्मवती--स्वामी मेरे से फिर कभी जाने का नाम न लेना अगर जाओ तो मुझे साथ लेकर जाना (सो जाती है)।

जीवंधर--(दिल ही दिल में) बस यह ठीक है मैं इसे सोती ही छोड़ कर चला जाता हूँ, वरना यह मुझे कदापि न जाने देगी (चल पड़ता है)

(पदमावती का सुबह उठना, जीवंधर को न पाकर चौंकना और विलाप करना)

पद्मावती--(हैरान होकर) हैं, क्या प्रीतम मुझे सोती को छोड़कर चल दिये। ग़ज़ब हो गया, सितम हो गया, मेरा मुकद्दर बिलकुल सो गया (बेहोश होकर ज़मीन पर गिर जाती है, बांदियां तसल्ली देती हैं, पदमा कुछ होश में आती है और विलाप करती है।)

गाना-पिया बिन है सूना संसार, पिया है जीवन का आधार॥

१ पी बिन इक पल चैन न आवे, दिया विरह में डार ॥ पि.
२ पी बिन तरसत दोऊ नैना । किस विध हो दीदार ॥ पि.
३ पी बिन घर खाने को आवे । छोड़ चला मझधार ॥ पि.
४ पी बिन मेरा जी ना लागे । जीना है धिक्कार ॥ पि.
५ पी बिन मोको कुछ ना सुहावे । अब कैसा शृंगार ॥ पि.
६ पी बिन नय्या डगमग डोले । कौन लगावे पार ॥ पि.
७ पी बिन कौन करे अब बतियां । गल में बय्याँ डार ॥ पि.
८ पी बिन कैसे रैन कटेंगी । कौन करेगा प्यार ॥ पि.

(बेहोश होकर फिर ज़मीन पर गिर जाती है, बांदियां तसल्ली देती हैं।)

(परदे का गिरना)

सीन ३०
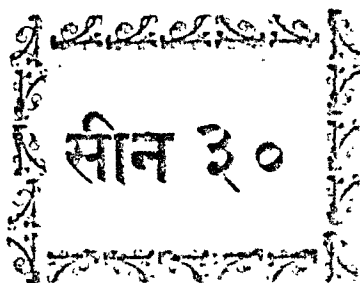
क्षेमापुरी नगरी के मंदिर का परदा

जीवंधर का दक्षिण देश की ओर चल पड़ना. चलते चलते क्षेमापुरी नगरी में पहुँचना। इस नगरी में श्री विमान नामा एक जैन मन्दिर है जिसके किवाड़ हमेशा बन्द रहते हैं, आज तक कोई भी इन किवाड़ों को खोलने के लिये समर्थ न हुआ। जीवंधर इस मन्दिर के दर्शन करने के लिये आता है परन्तु किवाड़ मन्दिर के बन्द देखकर बहुत हैरान होता है। किवाड़ खोलने के लिये भगवान से प्रार्थना करता है और बंधमोचनी मन्त्र पढ़ता है।

जीवंधर—गाना (चाल) जिन धर्म का डंका आलम में [illegible]

पट खोलो मन्दिर के स्वामी मुझको दर्शन करने दीजे ॥(टेक)॥
१ मैं दूर देश से आया हूँ। तेरे दर्शन का प्यासा हूँ।

चरणों में सर धरने दीजे ॥ मुझको दर्शन ॥

२ बीच भंवर में नय्या है, बस तू ही एक खिवैया है।
भवसागर से तरने दीजे ॥ मुझको दर्शन ॥

३ लाखों को पार उतारा है। किसको न तेरा सहारा है।
मेरा कारज सरने दीजी ॥ मुझ को दर्शन ॥

४ जो तेरे दर पर आता हैं। खाली नहीं जाने पाता है।
जामे अमृत भरने दीजे ॥ मुझको दर्शन ॥

५ जो तेरे दर्शन पाता है। करमों का नाश हो जाता है।
करमन की गत टरने दीजे ॥ मुझको दर्शन ॥

६ मुद्दतसे दिल में आशा थी। दर्शनकी तेरे अभिलाषा थी।
आशा पूर्ण करने दीजे ॥ मुझ को दर्शन ॥

(जीवंधर का बंधमोचनी मन्त्र पढ़ना और मन्दिर के किवाड़ आहिस्ता आहिस्ता खुलना, जीवंधर का मन्दिर में प्रवेश करना और भगवान की स्तुति करना)।

गाना—(चाल) इस जहां में अब हमारा कौन है।

१ वीर तेरी क्या निराली शान है।
चश्मे तर भी देखकर हैरान है ॥

२ जो भी आया है आपके दरबार में।
उसको मुंह मांगा दिया बरदान है ॥

३ जिसने जो हसरत तुम्हें जाहिर करी।
तुमने पूरा कर दिया अरमान है ॥

४ काम धेनु सी है ज्योति आपकी।
वो ही शक्ति आपको परदान है ॥

५ जीव हिंसा को हटाया आपने ।
सारे जीवों पे किया अहसान है ॥
६ रास्ता मुक्ति का बतलाया हमें ।
तेरा ममनूं सारा हिन्दुस्थान है ॥
७ हो जीवंधर पे इनायत की नज़र ।
तेरे चरणों में पड़ा नादान है ॥

(जीवंधर का दर्शन करके मन्दिर से बाहर आना। एक गुणभद्र नामी आदमी का जीवंधर के पास आना और प्रणाम करना।)

जीवंधर—(गुणभद्र को देखकर) भाई, तुम कौन हो और मेरी इतनी विनय क्यों कर रहे हो ?

गुणभद्र—महाराज, मैं इसी क्षेमपुरी नगरी का रहने वाला हूं, मेरा नाम गुणभद्र है। इस नगरी के राजा का नाम देवराज है, रानी का नाम देवदत्ता है। सुभद्र नाम का सेठ राजा का महामंत्री है। सेठ सुभद्र को ज्ञानचंद्र मुनि ने बताया था कि तुम्हारी पुत्री का विवाह उन्ही के साथ होगा जो इस मन्दिर के किवाड़ खोल देगा। उसी दिन से मुझे सेठ ने यहां छोड़ रखा है और कह रखा है कि जो भी इस मन्दिर के किवाड़ खोले उसे हमारे पास विनय पूर्वक ले आओ।

जीवंधर—अच्छा भाई, चलो मैं तुम्हारे साथ चलने को तय्यार हूँ।

(दोनों का चल पड़ना)

(सेठ सुभद्र का कमरे में बैठे हुवे नज़र आना। गुणभद्र का जीवंधर को साथ लिये हुवे सेठ जी के पास पहुंचना)।

गुणभद्र--(सेठ सुभद्र को देखकर) सेठ जी आज मन्दिर के किवाड़ खुल गये हैं।

सुभद्र सेठ--बड़ी खुशी की बात है (जीवंधर को देखकर) आइये महाराज, ऊपर तशरीफ ले आइये।

(जीवंधर प्रणाम करके सेठ जी के पास जा बैठता है)

सुभद्र--आपको बड़ी तकलीफ़ दी।

जीवंधर--नहीं सेठ जी इसमें तकलीफ़ की कौनसी बात है।

सुभद्र--मैं अपनी पुत्री क्षेमश्री की शादी आपके साथ करना चाहता हूँ, मुझे मुनि महाराज ने बताया था कि जो भी इस मन्दिर के किवाड़ खोलेगा वही मेरी पुत्री क्षेमश्री का स्वामी होगा।

(जीवंधर अपना मुंह नीचे की ओर कर लेता है)

(विवाह का मण्डप रचना, जीवंधर का बैठे हुए नज़र आना। बाजे बजना। राजा देवराज का भी जीवंधर से मिलने के लिये आना। क्षेमश्री का बरमाला हाथ में लिये हुए अपनी सखियों के साथ आना। बरमाला जीवंधर के गले में डालना। सुभद्र सेठ का अपनी पुत्री क्षेमश्री का हाथ जीवंधर के हाथ में पकड़ाना। दोनों की धूम धाम से शादी होना। क्षेमश्री की सखियों का गीत गाना।)

गाना--(चाल) सावण की ऋतु आई री सखियो सावण की ऋतु आई है।

१ देखो सखियो क्षेमश्री को फूली नहीं समाई है।
क्यों न फूले जीवंधर की रानी आज कहाई है॥

२ आज खुले हैं पट मंदिर के आज बजी शहनाई है।

क्षेमश्री ने जीवंधर को वरमाला पहनाई है ॥

३ सेठ सेठानी खुश हैं दोनों क्षेमपुरी हरषाई है।

क्यों न खुश हों ब्याह लग्न की आज घड़ी शुभ आई है ॥

४ वह देखो रानी भी आई आज बधाई लाई है।

क्षेमश्री की शादी की सबने ही खुशी मनाई है ॥

(इस प्रकार जीवंधर की चौथी शादी क्षेमश्री के साथ होती है। कुछ दिन जीवंधर क्षेमश्री के पास सुख भोगता है एक दिन अर्द्ध रात्री के समय इसे भी सोती हुई छोड़कर जंगल की ओर चला जाता है।
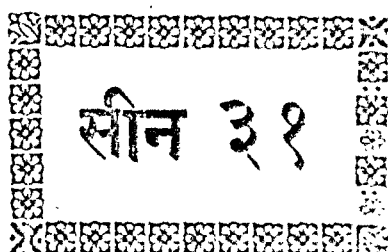
सीन ३१

(जंगल का परदा)

जीवंधर का जंगल में जाते हुए नजर आना, एक ब्राह्मण किसान का सामने आते हुए दिखाई देना, जीवंधर का ब्राह्मण को दुखी देखकर उसका हाल पूछना।)

जीवँधर-(ब्राह्मण किसान को देखकर) क्यों भाई तुम कौन हो, तुमने फटे पुराने कपड़े क्यों पहने हुये हैं और इतने दुखी क्यों प्रतीत होते हो ?

ब्राह्मण-महाराज, मैंने इस जन्म में कभी सुख नहीं भोगा, न ही मुझे यह मालूम है कि सुख कहते किसे हैं, लकड़ी बेचकर दो पैसे लाता हूं। दो पैसे से पेट ही नहीं भरता। मैं और मेरी स्त्री भूखे ही सो जाते हैं।

जीवंधर-भाई मुझे तुम पर बड़ी दया आती है, मैं भी

अपने ज़ेवर तुम्हें देता हूँ, इन्हें बेचकर अपना काम चलाओ, व्योपार करो और धर्म पूर्वक द्रव्य कमाकर पेट भरो।

ब्राह्मण–महाराज धर्म किसे कहते हैं ?

जीवंधर–भाई, धर्म अपना फ़र्ज़ अदा करने को कहते हैं। तुम्हारा फ़र्ज़ है कि द्रव्य कमाकर अपनी स्त्री और बच्चों का पेट भरो, अब सवाल यह है कि द्रव्य कमाया किस प्रकार जाता है, लो सुनो, द्रव्य कमाने के लिए व्योपार करना अत्यन्त आवश्यक है। व्योपार अपनी इच्छा के अनुसार करना चाहिए, जैसे सोना, चांदी कपड़ा, गल्ला आदि जैसा भी कोई पसन्द करे। व्योपार करने में इन इन बातों का ध्यान रखना चाहिये।

१ झूठ कभी न बोलो।

२ चोरी कभी न करो।

३ जूवा कभी न खेलो।

४ किसी को कम मत तोलो।

५ मुनाफा प्रमाण से रखो जैसे एक आना या दो आने फी रुपया।

६ शराब कभी न पीओ इसके साथ सब नशों की चीज़ें आ जाती हैं।

७ मांस न खाओ।

८ परस्त्री को अपनी माता व बहिन के समान समझो।

वस इसी का नाम धर्म है, वैसे तो धर्म की व्याख्या बहुत लम्बी है, परन्तु तुम्हारे काम में आने वाली यही बातें हैं, अपने शुभ विचार रखना, किसी की बढ़ती को देखकर दुःखी न होना । किसी का बुरा चिन्तन न करना सुवह-शाम अपने इष्ट देव की पूजा करना इसी का नाम ग्रहस्थ धर्म है, अगर तुम मेरी इन बातों पर चलोगे तो तुम्हें परम आनन्द प्राप्त होगा और तुम्हारे पास द्रव्य भी खूब हो जाएगा, इससे तुम्हारा सब दुःख दूर हो जाएगा ।

ब्राह्मण--महाराज आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है जो मुझे धर्म उपदेश दिया, मैं तो दुःख सागर में डूब रहा था, आज आपने मुझे उपदेश देकर बाहर निकाला । मैं आपका अहसान उमर भर न भूलूँगा ।

जीवंधर--अच्छा ब्राह्मण, अब तुम जाओ, मुझे भी अब आगे जाना है, देखना जो भी बातें मैंने तुम्हें बताई हैं उनको अच्छी तरह याद रखना, भूल न जाना ।

ब्राह्मण--बहुत अच्छा महाराज ।

(ब्राह्मण जीवंधर को प्रणाम करके चला जाता है, जीवंधर भी आगे चल पड़ता है)

(परदे का गिरना)

सीन ३२

पहाड़ का दृश्य

भवदत्त नाम विद्याधर का [illegible]
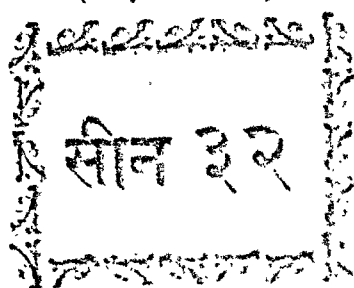
के लिए आना। अनंगतिलका का दूर ही से जीवंधर को आते हुए देखना और उस पर आसक्त होना। अनंगतिलका का अपने पति को प्यास का वहाना करके पानी लाने के लिए दूर भेज देना।

अनंगतिलका--(जीवंधर को आते देखकर) पतिदेव मुझे तो प्यास वहुत लग रही है, प्यास से कण्ठ सूखा जा रहा है। एक क़दमभी आगे नहीं चला जाता (वहाना करके वैठ जाती है)

भवदत्त--चिन्ता न करो प्यारी, मैं अभी तुम्हारे लिए जल लाता हूं। (चला जाना)

(अनंगतिलका का जीवंधर के पास जाना और शादी के लिए अरदास करना)

गाना--(चाल) विपत में सनम के संभाली कमलिया।

१ मुझे अपनी दासी बना लीजिएगा।
मेरे साथ शादी रचा लीजिएगा।

२ मेरी नाव मझधार में आ पड़ी है।
मुझे डूवती को वचा लीजिएगा॥

३ अकेली मैं वन वन में फिरती फिरूं हूँ।
ज़रा साथ अपने लिवा लीजियेगा॥

४ मैं रूप और जोवन में हूँ क्या ही सुन्दर।
नज़र से नज़र तो मिला लीजिएगा॥

५ मेरे हाल पे तुम दया कीजिएगा।
मरी जा रही हूँ जिला लीजिगा॥

६ वना कर मुझे अपने चरणों की चेरी।
ज़रा ज़िन्दगी का मज़ा लीजियेगा॥

७ न भूलूंगी अहसान हरगिज़ तुम्हारा।
मेरे साथ शादी करा लीजिएगा ॥

जीवंधर—देवी तुम कौन हो और क्या बातें कर रही हो ?

अनंगतिलका—महाराज मैं विद्याधर की लड़की हूं। मैं अपने पिता के साथ पहाड़ों की शोभा देखने आई थी, एक बदमाश मेरे रूप पर मोहित होकर मुझे आकाश में ले उड़ा। उसकी स्त्री ने जब उसे मेरे साथ देखा तो वह उसपर बड़ी नाराज़ हुई, उस बदमाश ने मुझे अकेली ही वन में छोड़ दिया, अब मैं इधर उधर भ्रमती फिर रही हूँ कृपा करके आप मुझ से शादी करलें और अपने साथ ले चलें।

जीवंधर—अय लड़की ! मैं तुम्हारे साथ शादी नहीं कर सकता।

अनंगतिलका—क्यों महाराज, क्या मैं खूबसूरत नहीं ?

जीवंधर—माना तुम खूबसूरत हो परन्तु मुझे तो नियम है कि मैं उस वक्त तक किसी भी लड़की से शादी नहीं कराऊंगा, जब तक कि लड़की के माता-पिता खुद अपनी लड़की का पानीग्रहण आप न करायें।

(जीवंधर के यह वचन सुनकर अनंगतिलका निराश होकर चल देती है। जीवंधर भी चलता है और भवदत्त विद्याधर को इधर उधर ढूंढते और विलाप करते देखता है।

भवदत्त—हैं, क्या मैं रास्ता तो नहीं भूल गया, मैं अपनी स्त्री को यहां छोड़ कर गया था, नहीं नहीं जगह

वही है पर वह कहां गई, वय। उसे कोई उठाकर तो नहीं ले गया, या किसी जंगली जानवर ने उसे अपना शिकार तो नहीं बना लिया। (विलाप करता है।)

कोई तो बता दो मुझको मेरी प्यारी ॥टेक॥

१ जंगल ढूंढा, पहाड़ ढूंढा, ढूंढी पृथ्वी सारी।
तेरा पता कहीं न पाया जाने कहाँ सिधारी ॥

२ पूर्व, पश्चिम, उत्तर देखा दक्षिण की है बारी।
फिर ढूंढू पाताल लोक भी मैंने यही विचारी ॥

३ तो बिन मोको चैन न आवे पल पल हो गया भारी।
तेरे कारण खो बैठा हूं तन मन की सुध सारी ॥ को०

४ शेर यहाँ पर धाड़ रहे हैं जंगल है भयकारी।
शेरों से तो नर भी कांपें तू है जिसमें नारी ॥ को०

५ कहाँ कहाँ ढूंढूं मैं तुझको अय प्राणों से प्यारी।
दिल में आती है मर जाऊं खाकर अभी कटारी ॥ को०

६ अये वृक्षो तुम ही बतलाओ तुम हो पर उपकारी।
तुमने देखी हो साये में बैठी थी बेचारी ॥ को०

७ सोंप गया था तुम्हें समझ करके अपना हितकारी।
अब तुम ही बतलाओ मुझको वरना दूंगा गारी ॥ को०

(जीवंधर का सामने से आते हुए दिखाई देना।)

भवदत्त—(जीवंधर से) क्यों भाई तुम ने मेरी पतिव्रता स्त्री को कहीं देखा? मैं उसे यहां छोड़कर पानी लेने गया था, वापिस आकर देखा तो कहीं नहीं मिली।

जीवंधर—भाई यह तुम्हारी भूल है जो अपनी स्त्री को पतिवर्ता बतलाते हो। अगर तुम्हारी स्त्री पतिवर्ता होती तो वह तुम्हें यहीं बैठी मिलती। पतिवर्ता स्त्री तो विरला ही होती हैं।

भवदत्त—महाराज मैं तो आप से यह पूछता हूँ कि आपने कहीं मेरी स्त्री को देखा हो, आपने तो मुझे उपदेश ही देना आरम्भ कर दिया, मुझे इस समय कोई उपदेश नहीं सुहाता, मैं अपनी स्त्री के वियोग में पागल हो रहा हूं। कृपा करके आपने कहीं उसे देखा हो तो मुझे बता दें ?

जीवंधर—(हंसते हुए) अच्छा भाई तुम इसे हंसी समझते हो तो मैं इसकी क्षमा चाहता हूँ, वह देखो निसंदेह वह तुम्हारी ही स्त्री होगी। (दूर इशारा करता है)

भवदत्त—हां महाराज वही है आपने मुझ पर बड़ी कृपा की।

भवदत्त भाग कर अपनी स्त्री के पास जाता है और उसे विमान में बिठाकर आकाश की ओर चल देता है। जीवंधर भी आगे चल पड़ता है)

(परदे का गिरना)

परगट पुरी के जंगल का [illegible]
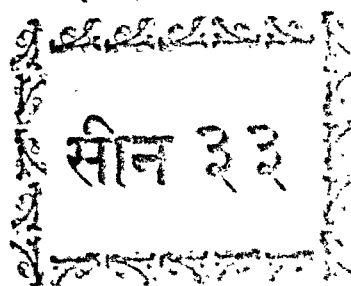
एक जंगल में एक बड़ा भारी वृक्ष है, इसके [illegible]

पुत्र तोड़ना चाहते हैं, परन्तु किसी का भी तीर ठीक निशाने पर नहीं बैठता। जीवंधर भी चलते चलते उसी जंगल में आता है और इनका तमाशा देखता है।

पहला पुत्र--वह मारा, ज़रा सी कसर रह गई।

दूसरा पुत्र--तुम पीछे हटो मुझे निशाना लगाने दो। (तीर चला कर) ओहो, बाल बाल बच गया।

तीसरा पुत्र--(आगे बढ़कर) ज़रा मुझे भी निशाना लगाने दो, मैं इस फल को अभी भूमि पर गिराता हूँ (तीर चलाता है) तीर का पत्तों को लगना और पत्तों का झड़कर भूमि पे गिरना।

चौथा पुत्र--ज़रा मुझे दो मैं निशाना लगाता हूं, देखूं वह फल कैसे नहीं टूटेगा (तीर चलाना) एक कच्चे फल का टूटकर भूमि पे गिरना।

पांचवां पुत्र--तुम सब तो अनाड़ी हो, मुझे तीर चलाने दो (निशाना बांध कर तीर चलाता है) तीर वृक्ष में से होकर दूसरी ओर जा पड़ता है।

छठा पुत्र--मैं इस फल को तोड़ तो दूंगा परन्तु यह तो पत्तों में छिप रहा है (तीर चलाना) वो मारा ओ ज़रा सा बच गया (दूसरा तीर कमान पर चढ़ाता है)

सातवां पुत्र--बस रहने दो, तुम्हारा नम्बर आ चुका, अब तीर मैं चलाऊंगा (अपने भाई को पीछे की ओर हटा देता है) (तीर चलाना, तीर का खाली जाना)

जीवंधर---क्यों भाई, तुम किस चीज़ के निशाना लगा रहे हो?

पहला पुत्र--क्यों, आप भी कोई धनुषधारी हो क्या?
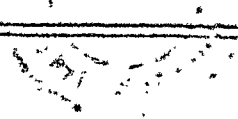
जीवंधर—नहीं भाई, धनुषधारी होना तो बहुत कठिन है, परन्तु (चुप हो जाता है)

दूसरा पुत्र—परन्तु क्या, आप भी अपनी किस्मत आज़मा सकते हो। वह देखो उस पके हुए फल को निशाना मार कर गिराना होगा।

पहिला पुत्र—अजी रहने भी दो, क्यों इन्हें तकलीफ देते हो।

दूसरा भाई—चलो भाई हमारा इससें हरज भी क्या है।

जीवंधर का कमान पर तीर चढ़ाना और निशाना बांध कर फल की ओर छोड़ना। फल का टूटकर भूमि पर गिरना। राजा के पुत्रों का हैरान होना और एक-दूसरे का मुंह तकना। जीवंधर का भाग कर फल को उठाकर लाना और राजपुत्रों को देना। राजपुत्रों का खुश होना और जीवंधर से घर चलने के लिए प्रार्थना करना।

गाना—(चाल) हकन हम को पिता जी का खजाना ही मुनासिब है।

१ धनुषधारी हो तुम ये हो गया हमको यकीं पूरा।
निशाना खूब उस फल के दिखाया है लगाकरके॥

२ बहुत मशकूर हैं हम आपकी नज़रे इनायत के।
जो फल हमने बताया तुमने दिखलाया गिराकरके॥

३ इलावा इसके ये नज़रे इनायत आपने की है।
उठाकर खुदही उस फल को दिया है हमको ला करके॥

४ करेंगे आपकी खातिर तवाज़े घर पे ले जा कर।
धनुष विद्या भी सीखेंगे गुरु तुमको बनाकरके॥

५ पिता राजा हैं उनको भी तुम्हें चलकर मिलाएंगे।
वो मालो-माल भी कर देंगे खातिर दिल से करके

६ चलो अब किस लिए करते हो देरी आप चलने में।
तुम्हें भोजन कराएंगे हम अपने घर पे जाकर के॥
७ ज़हे क़िस्मत हैं हम दर्शन दिये हैं आपने आकर !
खुशी हम को हुई है आप जैसा यार पाकर के॥

पहिला पुत्र—जीवंधर आओ हमारे नगर में चलो, कुछ रोज़ वहां ठहरना।

जीवंधर—भाई, मुझे जाने दो, मेरे को अपने देश जाना है, घर से निकले हुए बहुत दिन हो गए हैं।

पहिला पुत्र—अरे भाई, एक बार तो हमारे नगर में चलना ही पड़ेगा।

जीवंधर-अच्छा भाई तुम्हारी मरज़ी है मैं चलने कोतय्यार हूँ।

(सब का चल पड़ना) (परदे का गिरना)

सीन ३४

दरबार का परदा

राजा दृढ़मित्र का दरबार में बैठे हुए नजर आना। सातों पुत्रों का जीवंधर को साथ लिए हुए आना। सबका प्रणाम करके योग्य स्थान पर बैठना। जीवंधर का भी राजपुत्रों के पास बैठ जाना।)

दृढ़मित्र—पुत्रो तुम्हारे साथ यह कौन हैं ?

पहिला पुत्र—पिता जी हम तीर अन्दाज़ी सीखने वन में गये थे, हम सबने एक वृक्ष फल को निशाना बनाकर

चारी चारी तीर चलाया परन्तु कोई भी सफल न हो सका, यह जीवंधर भी हमें तीर चलाते हुए देख कर वहां आ गया, इसने ज्योंही तीर चलाया वृक्ष फल तुरन्त ही भूमि पर गिर पड़ा, हमें यह देखकर बड़ी खुशी हुई और इसे अपने साथ यहां ले आये।

दृढ़मित्र—मुझको भी इनको देखकर बड़ी खुशी हुई है, हां इनका नाम क्या है?

जीवंधर—(खड़ा होकर) महाराज, मेरा नाम जीवंधर है।

दृढ़मित्र—बैठ जाओ, आप रहने वाले कहां के हैं?

जीवंधर—महाराज मैं राजपुरी नगरी के सेठ गन्धोत्कट का पुत्र हूँ।

दृढ़मित्र—बड़ी अच्छी बात है, मैंने तो तुम्हारे मुख से ही जान लिया था कि तुम अवश्य किसी बड़े घराने से तआलुक रखते हो। हम भी तुमसे बहुत खुश हैं, कृपा करके आप मेरे सातों पुत्रों को धनुष विद्या सिखा दें, मैं अपनी पुत्री कनकमाला की शादी भी तुम से ही कर दूंगा।

जीवंधर—बहुत अच्छा महाराज, मैं आपके सातों पुत्रों को धनुर्विद्या में निपुण कर दूंगा।

दृढ़मित्र—अच्छा पुत्रो, तुम सब जीवंधर के साथ जाओ और धनुर्विद्या सीखो।

(सातों पुत्रों का जीवंधर को साथ लेकर चला जाना) (पर्दे का गिरना)

सीन ३५

(विवाह मण्डप का परदा)

(राजा दृढ़मित्र का मण्डप में बैठे हुए दिखाई देना। राजादरबारियो का भी अपने नियत स्थान पर बैठे हुए नजर आना। सातों पुत्रों का जीवंधर को साथ लिए हुए धनुर्विद्या सीखकर वापिस आना।)

सातों पुत्र--(प्रणाम करके) पिता जी, हमें जीवंधर ने धनुर्विद्या में बिल्कुल निपुण बना दिया है।

दृढ़ मित्र--बड़ी खुशी की बात है (जीवंधर को अपने बराबर सिंहासन पर बैठा लेते हैं। सातों राजपुत्र भी अपनी अपनी जगह पर बैठ जाते हैं।)

(कनकमाला अपनी सहेलियों सहित वरमाला हाथ में लिए हुए विवाह मण्डप में आती है और वरमाला जीवंधर के गले में डाल देती है। राजा दृढ़मित्र सिंहासन से उठकर अपनी पुत्री का हाथ जीवंधर के हाथ में पकड़ा देता है। बाजे बजते हैं और धूम-धाम से शादी होती है। सहेलियां गाना गाती हैं।)

(चाल)—हुकम हमको पिता जी का बजाना ही मुनासिब है।

१ जीवंधर से कनकमाला तेरी शादी मुबारिक हो।
क्या सुन्दर वर मिला है तुझको शहजादी मुबारक हो॥

२ धनुर्विद्या में हैं यकता तेरे प्रीतम कनकमाला।
सिखाना भाईयों को तीर अंदाजी मुबारिक हो॥

३ कनकमाला भी सुन्दर है भंवर गुञ्जार करते हैं।
जीवंधर आपके घर की ये आबादी मुबारिक हो॥

४ खुशी का आज है मौका खुशी क्यों न मनाएं हम ।
मिली है आज ही भारत की आज़ादी मुबारिक हो ॥

(इस प्रकार जीवंधर की पांचवीं शादी कनकमाला के साथ होती है। राजा दृढमित्र एक कोठी बाग में इनको रहने के लिए दे देते हैं। जीवंधर और कनकमाला इस कोठी में सुख पूर्वक रहने लगते हैं।)

(परदे का गिरना)

सीन ३६
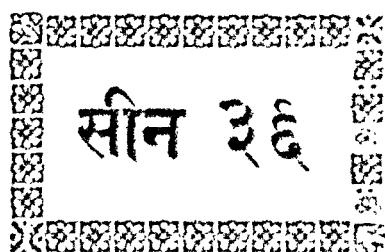
(राजपुरी में गन्धर्वदत्ता के महल का परदा)

(जीवंधर के भाई नन्द का एक दिन भाभी गंधर्वदत्ता के महल में जाना, भाभी को शृंगार किए हुए देखकर हैरान होना और इसका कारण पूछना ।)

नन्द—(भाभी को शृंगार किये हुए देखकर)

गाना—(चाल) पीर तेरी क्या निराली शान है ।

१ तुम ने भाबी क्यों किया शृंगार है ।
शर्म तक आती नहीं धिक्कार है ॥
२ क्या खबर तुमको नहीं इस बात की ।
चढ़ चुका फाँसी तेरा भरतार है ॥
३ सारी नगरी को है दुःख इस बात का ।
तू तो जीवंधर की जिसमें नार है ॥
४ है सदाए ग़म दरो दीवार है ।
हो रहा घर घर में हा हा कार है ॥
५ मुझ से यह सदमा सहा जाता नहीं ।

भाई बिन जीना मेरा दुश्वार है।
६ जब तेरा प्रीतम ही जग से चल दिया।
फिर तेरा श्रृंगार से क्या कार है॥
७ और मैं इस से ज़्यादा क्या कहूँ।
तू तो खुद हर बात में हुश्यार है॥

गन्धर्वदत्ता—(नन्द को सम्बोधन करते हुवे)

गाना—(चाल) वीर क्या तेरी निराली शान हैं।

१ नन्द यह कहना तेरा वेकार है।
कौन कहता है मरा भरतार है।
२ देवता उसको उठा कर ले गया॥
क्यों मचाया तू ने हा हा कार है।
३ वह मेरी नज़रों में रहता हैं सदा।
हर समय मेरे को करता प्यार है॥
४ उसको कोई मार सकता ही नहीं।
देवता भी उसका तावेदार है॥
५ दोष देता है मुझे तू किस लिए।
जवकि ज़िन्दा मेरा प्राणाधार है॥
६ तू भी गर चाहे मिला सकती हूँ मैं।
भाई से मिलना अगर दरकार है॥
७ चन्द करले अपनी आंखें ज़ोर से।
देख ले होता अभी दीदार है॥

नन्द—भावी क्षमा करो, मुझे मेरे भाई से मिला दो, मेरा जी

भाई से मिलने को कर रहा है।

(भाबी के पाँव में पड़ जाता है)

गंधर्वदत्ता–(नंद को हाथ से उठा कर) अच्छा तुम अपनी दोनों आंखें बन्द करो, मैं तुम्हें अभी तुम्हारे भाई के पास पहुँचा देती हूं।

(नंद का अपनी दोनों आंखें बन्द करना और गायब हो जाना)

(परदे का गिरना)

सीन ३७
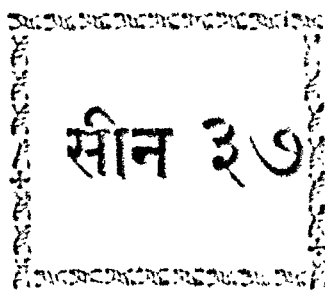
जीवंधर के बाग का परदा

(जीवंधर की स्त्री कनकमाला का बाग में सैर करने के लिये आना। नंद का बाग में टहलते हुए नजर आना।)

कनकमाला–(जीवंधर जैसी शकल के एक युवक को देखकर) हैं! यह क्या मामला है, मैं अभी जीवंधर को अपने महल में छोड़कर आई हूँ, यह इतनी जल्दी बाग में कैसे आ धमका, ओ मैं समझ गई अवश्य किसी विद्याधर ने जीवंधर का रूप धारण किया है। (वापिस महल में जाती है और जीवंधर को वहाँ भी बैठे देखती है) हैं, यह तो यहां भी बैठा हुवा है, कहीं मैं पागल तो नहीं हो गई हूं।

जीवंधर–प्रिय क्या बात है, तुम इतनी घबराई हुई सी क्यों दीख पड़ती हो?

कनकमाला–प्राणनाथ क्या बताऊं, मैं तो अजीब उलझन में फंस गई। मैं अभी आप को महल में छोड़ कर बाग़ की सैर करने गई थी, वहां जाकर क्या देखती हूं कि आप बाग़ में खड़े हुए हो, मैं बाग़ से झट महल में भाग कर आई तो आप को यहां बैठे हुए पाया। प्राणनाथ मुझे वड़ा आश्चर्य हो रहा है, कृपा करके मेरे दिल का संदेह दूर करो।

जीवंधर–प्रिय, कहीं मेरा भाई नंद तो नहीं आगया, उसकी शकल भी मेरे से विलकुल मिलती जुलती है, परन्तु वह यहाँ पर आ कैसे सकता था। खैर आओ ज़रा देखें तो सही। (दोनों का बाग़ की ओर चल पड़ना)

जीवंधर–(अपने भाई नंद को देख कर खुश होता है और गफ्फी डाल कर मिलता है।) भाई नंद तुम यहाँ किस तरह आगये, तुम्हे कैसे मालूम हुवा कि मैं यहां ठहरा हुआ हूँ?

नंद–भाई! आज मैं अपनी भावी गंधर्वदत्ता के महल में गया था, वहां जाकर मैंने देखा कि भावी श्रृंगार किये हुये वैठी है, मुझे यह देखकर वड़ा आश्चर्य हुवा। मैंने भावी जी से कहा कि तुम ने यह श्रृङ्गार क्यों किया है, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे भाई जीवंधर को फांसी हो गई है। इतना सुनकर भावी ने मुझे बताया कि नंद तुम्हारा भाई मरा नहीं वल्कि ज़िंदा हैं। मैंने कहा अगर भाई ज़िंदा हैं तो मुझे भी उनसे

मिला दो, तब भाबी जी ने मेरी दोनों आंखें बंद करवादीं और अपनी विद्या के बल से मुझे यहां भेज दिया ।

जीवंधर-बड़ी खुशी की बात है जो तुम यहाँ आगये मुझे तो तुम बहुत ही याद आते थे । आओ महल में चलें

(सब का चल पड़ना)

(परदे का गिरना)

सीन ३८
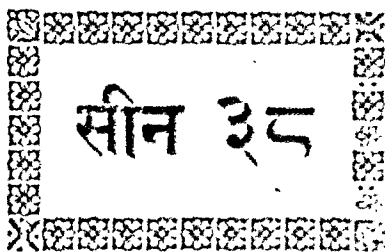
(गंधर्वदत्ता के महल का परदा)

(जीवंधर के भाई पद्मास्य का जो गुरुकुल में पढ़ता है, गंधर्वदत्ता के महल में जाना और नंद की बाबत पूछना कि वह कहां गया ।)

पद्मास्य-भाबी जी प्रणाम ।

गंधर्वदत्ता-चिरँजीव रहो पद्मास्य, आज तुम्हारा कैसे आना हुआ ?

पद्मास्य-भाबी जी क्या बताऊं, आज भाई नंद न जाने कहां चला गया, हमतो उसे ढूंड ढूंड कर थक गये हैं, भाई जीवंधर को तो फांसी हो ही गई थी, न जाने नंद भी हमें छोड़कर कहां चल दिया अब मुझे पता लगा है कि वह आपके महल में भी आया था, अगर कुछ आपको मालूम हो तो आप ही पता दें ।

गाना-(चाल) वीर क्या तेरी निराली शान है।

१. हो रहा है ये ही चर्चा जा बजा।
नंद न जाने कहां जाता रहा॥

२. है पता ये भी लगा कि आपने।
नंद को जादू से गायब कर दिया॥

३. है कहाँ तक ठीक ये बतलाइये।
क्या तुम्हें है नंद का कोई पता॥

४. तंग हम तो आगये हैं ढूंड़ कर।
भेद कोई भी नहीं पाता ज़रा॥

५. आप ही अब तो बता दीजे हमें।
अब कहाँ ढूंड़ें भला तेरे सिवा॥

गंधर्वदत्ता-गाना-(चाल) वीर तेरी क्या निराली शान है।

१ ठीक है जिसने दिया मेरा पता।
नंद को मैंने ही रक्खा है छिपा॥

२ नंद ने मेरे से आकर था कहा।
किस लिये श्रृंगार है भावी किया॥

३ जब के जीवंधर जहां से चल बसा।
फिर तेरा श्रृंगार से मतलब है क्या॥

४ सुनके मेरे दिल में दुख पैदा हुवा।
शर्म से, सर मेरा नीचा हो गया॥

५ नंद को सम्बोध कर मैंने कहा।
कौन कहता है जीवंधर मर गया॥

६ देवता उसको उठाकर ले गया।
जब हुकम फांसी का राजा ने दिया॥
७ नंद ने झट माँगली मुझ से जमा।
जोड़ करके हाथ यों कहने लगा॥
८ मुझको भी भाई से दीजेगा मिला।
मैं नहीं भूलूंगा अहसां आपका॥
९ सुनके मैंने उसपे जादू कर दिया।
वह तो अपने भाई से मिलने गया॥

पद्मास्य–भावी जी यह तुम क्या कर रही हो, तुमने तो मेरे पे भी जादू सा कर दिया है। क्या भाई जीवंधर ज़िंदा हैं ?

गंधर्वदत्ता–हां, इसमें क्या शक है।

पद्मास्य–तो क्या हमें भी भाई से मिला सकती हो ?

गंधर्वदत्ता–क्यों नहीं, तुम भी अपने भाई से मिल सकते हो।

पद्मास्य–कृपा करके मुझे भी बताएं कि भाई जीवंधर कहां हैं ?

गंधर्वदत्ता–तुम्हारा भाई इस समय प्रगटपुरी में निवास करता है।

पद्मास्य–अच्छा भावी, हम सब मिलकर आज भाई जीवंधर से मिलने के लिये प्रस्थान करते हैं।

(प्रस्थान करते [illegible])

सीन ३९

दंडक वन का परदा

जीवंधर के भाई पद्मास्य का अपने पांच सौ भाइयों को साथ लेकर जीवंधर से मिलने के लिये चल पड़ना। रास्ते में दंडक वन का आना। रमणीक स्थान देख कर सबका वहां डेरे डाल देना। जीवंधर की माता विजया सुन्दरी का आना और बात चीत करना।)

विजियासुन्दरी-(पांच सौ बच्चों को देखकर) क्यों भाई तुम कहां से आये हो और कहां जाना है ?

पद्मास्य-माता जी हम इस समय राजपुरी से आ रहे हैं और आगे प्रगटपुरी को जाने का विचार है।

विजियासुन्दरी-(खुश होती हुई) अच्छा भाई तुम राजपुरी के रहने वाले हो ?

पद्मास्य-जी माता जी।

विजियासुन्दरी-मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई, अच्छा भाई तुम प्रगटपुरी किस कार्य के लिये जा रहे हो ?

पद्मास्य-माता जी वहां हमारा भाई जीवंधर गया हुआ है, राजा कष्टांगार ने उसे फांसी का हुकम दिया था, तब एक देवता उसे आकाश में उड़ा ले गया और प्रगटपुरी में ले जाकर छोड़ दिया, अब हम उसी से मिलने के लिये जा रहे हैं।

[विजिया सुन्दरी का जीवंधर का नाम सुनने ही बेहोश हो जाना. पद्मास्य का ठंडा पानी छिड़कना। विजिया सुन्दरी का होश में आना और विलाप करना।]

[चाल] निर्बल के प्राण पुकार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे।

१. सुन करके बात तेरी बेटा,
मेरे मनको तो आता सबर ही नहीं।
जीवंधर है बेटा मेरा क्या तुझको इसकी खबर ही नहीं॥

२. मैं सत्यंधर की रानी हूँ जो राजपुरी का राजा था।
काष्टांगार ने ही मारा था क्या तूने सुना ज़िकर ही नहीं॥

३. मुझको भी मारे था मैंने छिप करके जान बचाई थी।
उसने तो अपनी करनी में बिलकुल भी रखी कसर ही नहीं॥

४. मैं जीवंधर को सौंप सेठ को दंडक वन में आई थी।
उसपे भी ज़ुल्म किये लाखों करुण का दिल में असर ही नहीं

५. अब जैसे भी हो बदला लो तुम उस अन्याई राजा से
उसके मारे बिन दुनिया में अब होगा गुज़र ही नहीं॥

६. मैं लूंगी अपना राज पति का जान बला से जायेगी।
या तो वो काष्टांगार नहीं या मेरा जीवंधर ही नहीं॥

पद्मास्य-[पांव में गिर कर] माता जी मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आप जीवंधर की माँ लगती हैं। आप कोई चिन्ता न करें हम अभी राजपुरी जाते हैं और भाई जीवंधर को साथ लेकर जल्द ही लौट आते हैं. हम आपका सब हाल भाई जीवंधर को सुना देंगे।

[सब भाइयों का राजपुरी की ओर चल पड़ना]

[परदे का गिरना]

सीन ४०

प्रगटपुरी में जीवंधर के बाग का परदा

जीवंधर का बाग में टहलते हुवे नज़र आना। पद्मास्य का आपने सब भाइयों को साथ में लिये हुवे जीवंधर के बाग में पहुचना।

जीवंधर—(पद्मास्य को अपने सब भाइयों के साथ आता देखर) आओ भाई पद्मास्य तुम तो बहुत दिनों में दिखाई दिये, कहो अच्छी तरह तो हो ?

पद्मास्य--हाँ भाई साहब आपकी कृपा है

(दोनों का गप्फी डालकर मिलना)

(जीवधर का वारी वारी अपने सब भाइयों से गप्फी डालकर मिलना और महल में ले जाकर सबकी आओ भगत करना। जीवंधर का अपने भाई पद्मास्य के साथ खाना खाते हुवे नज़र आना और वात चीत करना।)

जीवंधर--और सुनाओ भाई पद्मास्य तुम ने भी मुझे ढूंड़ ही लिया ना।

पद्मास्य--हां भाई ! जब नंद आपको ढूंड़ सकता है तो क्या हम नहीं ढूंड़ सकते ?

जीवंधर--क्यों नहीं, तुम ने बड़ा अच्छा किया जो मेरे पास चले आये, मेरा भी तुम्हारे बग़ैर जी ही नहीं लगता था

पद्मास्य--हां भाई जीवंधर मैं एक वात तो भूल ही गया, अब आते समय दंड़क वन में हमें आप की माता विजिया सुन्दरी मिली थीं, वह याद कर करके वड़ा

विलाप कर रही थी आप का नाम सुनकर वह बेहोश भी होगई, बड़ी मुश्किल से ठंडा पानी छिड़क कर उन को होश दिलाया। क्या आप अपनी माता से नहीं मिलोगे।

जीवंधर—भाई पद्मास्य मैं अपनी माता से अवश्य मिलूंगा मैं खूब जानता हूं कि राजा काष्टांगार ने हम पर बड़े जुलम किये हैं, हमारे पिता जी को उसी ने कतल किया, हमारी माता को दंडक वन में आकर रहना पड़ा। इधर मुझ को दर दर की खाक छाननी पड़ी, मुझे यह सब बातें देवता ने बता दी थीं, यह सब हमारे कर्मों का फल था, इसमें किसी का जोर भी क्या चलता है। मगर अब माता का कष्ट मुझ से नहीं देखा जाता, मैं अवश्य उस अन्याई राजा को मार कर अपने पिता की राजगद्दी पर बैठूंगा।

(शेर) कष्ट लाखों सह चुका हूँ अब सहा जाता नहीं।
इस तरह घर बैठ कर मुझ से रहा जाता नहीं॥
दिल में आती है उड़ादूं शीश उस बदकार का।
जब्त काफी कर चुका हूँ अब किया जाता नहीं॥

भाई पद्मास्य, मेरा खून उबल रहा है और जी चाहता है कि जितनी भी जल्दी हो सके उस पापी काष्टांगार को मौत की नींद सुलादूं।

पद्मास्य—भाई साहिब फिर देरी क्या है, आप हुक्म दें।

हम अभी जाकर उस बदकार का तख़्ता उलट देते हैं।

(सब का खड़ा हो जाना)

(जीवंधर का अपने सब भाइयों को साथ लेकर चल पड़ना)

(परदे का गिरना)

सीन ४१
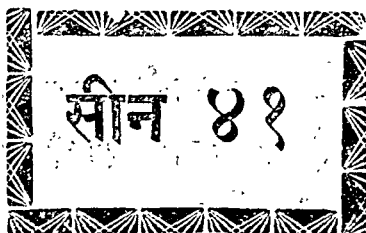
(दंडक वन का परदा)

सती विजया सुन्दरी का दंडक वन में बैठे हुवे नजर आना। जीवंधर का अपने ५०० भाइयों को साथ लिये हुये माता जी के पास पहुंचना। जीवंधर का माता के पांव पड़ना। विजया सुन्दरी का आशीर्वाद देना।)

जीवंधर--माता जी प्रणाम (पांव में गिर जाता है)

विजयासुन्दरी--चिरंजीव रहो बेटा (उठाकर गोदी में उठा लेती है मुख चूमती है और छातियों से दूध झरने लगता है. विजयासुन्दरी की आखों में आंसू आजाते हैं।)

जीवंधर--माता जी अब रोना धोना बन्द करो। मैं उस अन्याई राजा को अभी मौत की नींद सुलाता हूँ। अब आप कोई चिंता न करें। हमारे कष्ट के दिन व्यतीत हो चुके हैं।

विजयासुन्दरी--- बेटा इतनी जल्दी न करो, काष्टांगार ने अपनी शक्ति बहुत बढ़ाली होगी। तुम्हें अपने मामा गोविंद राजा की भी सहायता लेनी चाहिये। वह तुम्हारी इस समय अवश्य मदद करेंगे।

जीवंधर–अच्छा माता जी, आओ अब राजपुरी की ओर प्रस्थान करें। (सब का चल पड़ना)

(परदे का गिरना)
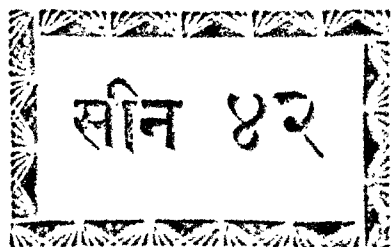
राजपुरी नगरी के जंगल का परदा

(जीवंधर का अपनी माता विजयासुन्दरी और सब भाइयों को साथ लेकर राजपुरी नगरी के निकट जंगल में पहुंचना।)

जीवंधर–(अपनी माता से) माता जी अब हम राजपुरी नगरी के निकट तो पहुँच ही गये हैं आप यहां विश्राम करें, मैं अगर आप की आज्ञा हो तो नगरी की सैर कर आऊं

विजयासुन्दरी–बेटे तुम्हारा अकेले नगरी में जाना ठीक नहीं है, अगर जाना ही चाहते हो तो अपने भाई नंद और पद्मास्य को भी साथ लेते जाओ।

जीवंधर–नहीं माता जी, मुझे किसी को साथ लेने की आवश्यकता नहीं है, क्या तुम ने मुझे बच्चा ही समझ लिया है, आप सब यहां ठहरें, मैं अभी लौट कर आ जाता हूं।

(जीवंधर का अकेले ही राजपुरी नगरी की ओर चल पड़ना)

(परदे का गिरना)

सीन ४३

(राजपुरी नगरी में सेठ सागरदत्त के महल का परदा)

जीवंधर का सागरदत्त सेठ के महल के पास से गुज़रते हुए नजर आना। एक गैंद का जीवंधर के पांव में आकर गिरना, जीवंधर का लपक कर गैंद को उठाना, सागरदत्त सेठ की पुत्री विमला का जीवंधर को गैंद उठा कर छिपाते हुवे देखना और अपनी सखियों से बात चीत करना।

विमला–देखो सखी उस युवक ने मेरी गैंद अभी अभी उठा कर छिपाई है।

एक सखी–हैं, यह युवक कौन है?

(सब सखियाँ जीवंधर की ओर देखती हैं)

दूसरी सखी–अजी यह गैंद तो हमारी विमला की है आप ने क्यों उठाई है।

जीवंधर–हम भी तो आपकी विमला ही के हैं, इसमें हरज भी क्या है।

पहली सखी–मान न मान मैं तेरा महमान, लो जी सुना भी यह क्या कह रहा है।

दूसरी सखी–ठीक तो है, इसने भी गैंद किसी मतलब से ही उठाई है। वह देखो विमला भी उस युवक की ओर किस प्रकार टिकटिकी बांध कर देख रही है।

पहली सखी–हां बहिन यह तो कुछ और ही गुल खिल गया, मैं अभी सेठ जी को जाकर सारी बात बताता हूँ।

दूसरी सखी—बहिन तुम्हें अवश्य जाना चाहिये।

(सेठ सागरदत्त खुद ही टहलते टहलते यहां आ जाते हैं)

दोनों सखियाँ—(एक आवाज़ होकर) देखो देखो सेठ जी विमला उस युवक की ओर किस प्रकार, देख रही है।

(इतना सुन कर विमला अन्दर भाग जाती है)

सागरदत्त—(जीवंधर की ओर देखकर) आओ बेटा तुम कौन हो?

जीवंधर—सेठ जी, मैं भी आप ही की नगरी के किसी सेठ का पुत्र हूँ, परन्तु इस समय में आप को अपना पूरा परिचय नहीं दे सकता, कारण (चुप हो जाता है)

सागरदत्त—(मन ही मन में) अवश्य यह किसी सेठ ही का पुत्र प्रतीत होता है, अगर मैं अपनी विमला की शादी इस से कर दूँ तो क्या हर्ज है. विमला और इस की जोड़ी भी ठीक ही रहेगी, (जीवंधर को पास बुलाकर) आओ बेटा मैं अपनी पुत्री विमला की शादी तुम से करता हूं। विमला को अन्दर से बुला कर उसका हाथ जीवंधर के हाथ में पकड़ा देता है।

सखियों का गाना। (चाल) हमें धीर स्वामी मेरा सहारा

१ प्रीतम का अपने चलोगी सहारा।
ससुर और सासु की आंखों का तारा॥
२ नया अब तो नाता जुड़ेगा तुम्हारा।
पिता और माता ने सौंपा किनारा।
३ नहीं इनसे चलना किसी का भी चारा।

चली आई है यूं ही दुनिया की धारा ॥

४ पति के ही घर अब तो होगा गुजारा ।
तुम्हें अब तो सुसराल होगा प्यारा ॥

५ बिछड़ने का दुख तो हमें है अपारा ।
मगर इसमें चलता नहीं बस हमारा ॥

६ रहो खुश यही हम सबों ने विचारा ।
हो व्यतीत जीवन ये सुखमय तुम्हारा ॥

(इस प्रकार जीवंधर की छटी शादी विमला के साथ होती है ।)
(परदे का गिरना)

सीन ४४

(राज़पुरी के सेठ ऋषभदास के महल का परदा)

(जीवंधर का टहलते टहलते सेठ ऋषभदास के महल के पास आना और महल से बाहर दो आदमियों का वातचीत करते नज़र आना ।)

पहला आदमी—(दूसरे आदमी से) (जीवंधर की ओर इशारा करके) लो जी यह युवक हैं, जिनसे सेठ सागरदत्त ने अपनी पुत्री यिमलावती की शादी की है ।

दूसरा आदमी—अच्छा यह हैं ! भाई, मैंने तो इन्हें अभी देखा, परन्तु मैं तो शादी कराना तव समझता जब यह सेठ ऋषभदास की पुत्री सुरमंजरी से शादी कराते, जिसने कि जीवंधर से शादी कराने का प्रण

किया हुआ है और पर पुरुष को तो वह आँख उठा कर भी नहीं देखती।

जीवंधर को याद आया कि यह लोग उसी सुरमंजरी का जिकर कर रहे हैं जिस का चूर्ण मैंने वसंत ऋतु में गुणमाला के चूर्ण का अपेक्षा खराब बताया था। सुरमंजरी ने उस रोज़ प्रण किया था कि मेरा नाम सुरमंजरी नहीं अगर मैं जीवंधर से शादी न कराऊं सो इतना सोचकर जीवंधर ने यह करनी मन्त्र पढ़ा और एक बूढ़े ब्राह्मण का भेष बना कर सुरमंजरी के महल के दरवाज़े पर पहुँचा।

जीवंधर-(बूढ़े ब्राह्मण के भेष में) क्या बाबा कोई रोटी देंगे?

सुरमंजरी-कौन है?

जीवंधर-बूढ़ा ब्राह्मण।

सुरमंजरी-क्या चाहिये बाबा?

जीवंधर-भूख लगी है।

(सुरमंजरी कुछ भोजन अन्दर से लाती है और बूढ़े ब्राह्मण को दे देती है। बूढ़ा ब्राह्मण वहीं बैठ कर भोजन करने लग जाता है।)

सुरमंजरी-क्यों बाबा क्या मैं एक बात आप से पूछ सकती हूँ।

बूढ़ा ब्राह्मण-क्यों नहीं देवी, जरूर पूछो।

सुरमंजरी-बाबा मैंने यह प्रण किया हुआ है कि मैं अपनी शादी जीवंधर से कराऊँगी, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि मेरा इच्छित वर मुझे कब मिलेगा?

बूढ़ा ब्राह्मण-देवी तुम्हारी शादी अवश्य जीवंधर के साथ होगी, परन्तु इसके लिये इतवार कामदेव के मन्दिर में पूजा करने के लिये जाना होगा। अगर तुम आज ही काम देव के मन्दिर में पूजा करने जाओ

जाओ तो शादी आज ही हो सकती है। (इतना कह कर बूढ़ा चल देता है)। (परदे का गिरना)

सीन ४५

कामदेव के महल का परदा

सुरमंजरी का अपने कुटम्ब सहित कामदेव के मंदिर में पूजा करने के लिये जाना, जीवंधर का अपने असली भेष में कामदेव की मूर्ति के पीछे पहिले ही छिप जाना। सुरमंजरी का अपने कुटम्बियों को बाहर छोड़ कर अकेले ही मन्दिर में प्रवेश करना, और अपने इच्छित वर के लिये प्रार्थना करना।

सुरमंजरी-(गाना। (चाल) भगवान तुम्हारे चरणोंका नित रहता हमें सहारा है

१ मैं देव तुम्हारे मन्दिर में दर्शन करने को आई हूँ।
अपने इच्छित वर की खातिर मैं तेरे दर पर ध्याई हूँ॥
२ था मैंने प्रण किया शादी जीवंधर से करवाऊंगी।
मेरी पूरी इच्छा कीजे मैं यही कामना लाई हूँ॥

जीवंधर--(कामदेव की मूर्ति के पीछे से) गाना।

(शैर) देवी मैं खुश हूँ तेरे से तू मेरे दर पर आई है।
तेरा इच्छित बर हाजिर है तू मेरे मन को भाई है॥

(इतना कह कर जीवंधर मूर्ति के पीछे से निकल कर बाहर आ जाता है। सुरमंजरी जीवंधर को देखकर नीचे को मुख करके खड़ी हो जाती है)।

जीवंधर--(शैर)

ऊपर को शीश करो अपना तुम क्यों मुझसे शरमाई हो।
वो ही तो जीवंधर हूँ मैं जिसपे कि आप लुभाई हो॥

(सुरमंजरी का जीवंधर के पांव में गिर पड़ना। सेठ कुबेरदत्त का मन्दिर में प्रवेश करना। जीवंधर को मन्दिर में खड़ा देखकर प्रसन्न होना और अपनी पुत्री सुरमंजरी का हाथ जीवंधर के हाथ में पकड़ाना और धूमधाम से शादी करना।)

सखियों का गाना।

(चाल) जिन धर्म का डंका आलम में बजवा दिया कमल रानी ने।

१ धन्य मंजरी तेरे को तू ने यह दिन दिखलाया है।
कामदेव के मन्दिर में अपना इच्छित वर पाया है॥
२ प्रण किया था जो तूने वो अच्छी तरह निभाया है।
सिवा जीवंधर के न कोई दिल में तेरे समाया है॥
३ बड़ी खुशी का मौका है क्या वक्त सुहाना आया है।
बहिन मंजरी को हमने जीवंधर से परणाया है॥

(इस प्रकार जीवंधर की मानवी शादी सुरमंजरी के साथ हो जाती है।)

(परदे का गिरना)

सीन ४६
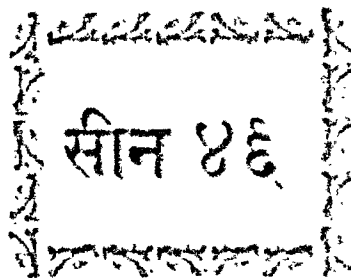
(सेठ गन्धोत्कट के महल का परदा)

जीवंधर का अपने पिता गन्धोत्कट के मकान पर जाना। अपने माता पिता और अपनी स्त्री गन्धर्वदत्ता से मिलना।

जीवंधर—(पिता जी को देखकर) पिता जी, प्रणाम!

सेठ गन्धोत्कट—आओ बेटा जीवंधर (सर पे हाथ फेरता है)

जीवंधर—(अपनी माता सुनन्दा को देखकर) माता जी प्रणाम!

सुनंदा—चिरंजीव रहो बेटा (छाती से लगा लेती है) तुम इतने [illegible]

कहां रहे। हम तो तुम्हें याद करते करते बूढ़े हो चले हैं।

जीवंधर--माता जी अब मैं कहीं न जाऊंगा, देश-देशान्तरों में खूब घूम फिर आया हूँ।

सुनन्दा--बेटा तुम अपनी स्त्री गन्धर्वदत्ता व गुणमाला से तो मिल लो वह बेचारी रात-दिन उदास रहती हैं (जीवंधर अच्छा माता जी कहते हुए अन्दर चला जाता है)

गन्धर्वदत्ता व गुणमाला--(अपने पति को आता देखकर) पति देव प्रणाम।

जीवंधर--प्रिय खुश रहो। (दोनों से गप्फी डालकर मिलता है)।

गंधर्वदत्ता--पति देव आप मुझे भूल तो नहीं गये?

जीवंधर--नहीं प्यारी, क्या कभी ऐसा हो सकता है, बाकी तुम मुझे भूलने भी कब दो थी, तुमने तो मेरे सारे ही भाइयों को अपनी याद दिलाने के लिए मेरे पास भेज दिया।

जीवंधर--अच्छा प्यारी अब मैं चलता हूँ, माता विजियासुन्दरी मेरी बाट निहार रही होंगी।

गुणमाला--लो जी आये को तो देर भी नहीं हुई, जाने का पहिले ही फिकर पड़ गया है। जब के बिछड़े तो अब मिले हो, न जाने अब के बिछड़े कब मिलोगे।

जीवंधर--गुणमाला! अब मुझे कहीं नहीं आना जाना।

अपनी माता से मिल कर शीघ्र ही लौट आता हूं।

गंधर्वदत्ता-क्या आप अभी जा रहे हैं, ज़रा तो ठहरो।

जीवंधर-नहीं प्रिय, अब ठहरने का समय नहीं है, मुझे जरूरी काम जाना है। तुम कोई चिंता न करो, मैं शीघ्र ही लौटूंगा। (चल पड़ता है)

(परदे का गिरना)

सीन ४७

(तिलक नगर के राजमहल का परदा)

जीवंधर का अपनी माता विजियासुन्दरी को साथ लेकर अपने मामा गोविंदराज के पास जाना जो तिलकनगर का राजा है।

जीवंधर-(राजा गोविंदराज को देखकर) मामा जी प्रणाम

गोविंदराज-चिरंजीव रहो (अपने पास बैठा लेता है)

विजयासुन्दरी-भाई साहिब प्रणाम।

गोविंदराज-विजयासुन्दरी आओ, खुश तो हो ?

विजयासुन्दरी-ईश्वर की कृपा है, मैं तो अपने भाई को तकलीफ देने आई हूं।

गोविंदराज-विजयासुन्दरी, मैं खूब जानता हूं कि काष्ठांगार ने तुम पर बड़े बड़े अत्याचार किये हैं और इस मासूम बच्चे को भी मरवाने के लिये उसने कोई कसर उठा न रखी। परन्तु ईश्वर की कृपा है कि

इतने जुलम सहने पर भी तुम और तुम्हारा बच्चा अब तक जीवित हो। मुझे राजा सत्यंधर का भी रह रह कर ख़याल आता है कि उस बदकार काष्टांगार ने उन्हों को बिला वजह मार डाला और राज्य पर काबिज़ हो गया। परन्तु घबराओ नहीं मैं अब उस काष्टांगार को ज़रूर इसका मज़ा चखाऊंगा, उस को जान से मार कर जीवंधर को राजगद्दी पर बिठाऊंगा। मैं अभी अपनी पुत्री लक्ष्मी देवी का स्वयंबर राजपुरी में रचाने की तय्यारी करता हूँ।

विजियासुन्दरी--भाई मुझे तुम से ऐसी ही उम्मीद थी।

(गोविंदराज का सब राजाओं को स्वयंबर की चिट्ठी डालना। एक पत्र काष्टांगार को भी लिखना कि मेरी पुत्री लक्ष्मी देवी के स्वयंबर का प्रबन्ध राजपुरी में करे।)

(परदे का गिरना)

सीन ४८

(राजपुरी में स्वयंवर मण्डप का परदा)

(सब राजाओं का स्वयंवर मण्डप में नजर आना, राजा काष्टांगार का भी स्वयंवर मण्डल में आना। राजा गोविन्दराज का खडे होकर सब राजाओं से निवेदन करना

गोविंदराज--सब राजाओं से प्रार्थना है कि बारी बारी अपना अपना पराक्रम दिखाएं। इस राधा-पुतली को जो

भी राजकुमार अपनी शक्ति द्वारा बींधेगा, मेरी पुत्री लक्ष्मी देवी उसी को वर माला पहनायेगी ।

(सब राजकंवारों का बारी बारी राधापुतली को बींधने के लिये आना मगर नाकाम रहना ।)

गोविंदराज-- (खड़ा हो कर) क्या यह पृथ्वी आज शूरवीरों से खाली हो गई है, क्या स्वयंवर मण्डप में कोई भी ऐसा राजकुमार नहीं जो इस राधापुतली को बींध सके ।

जीवंधर-ऐसा न कहिये, कि पृथ्वी पर कोई भी ऐसा राजकुमार न रहा आप हुक्म दें, मैं इस राधापुतली को अभी बींध सकता हूँ ।

गोविंदराज-बेशक तुम भी अपना पराक्रम दिखा सकते हो।

(जीवंधर का धनुषबाण उठाना और राधा पुतली को तुरन्त बींध देना । राजा गोविंदराज का खुश होना, लक्ष्मी देवी का वर माला जीवंधर के गले में डालना । जय जय कार के शब्दों से सारा स्वयंवर मण्डप गूंज उठना, राजा गोविंदराज का अपनी पुत्री लक्ष्मी देवी का हाथ जीवंधर के हाथमें पकड़ना । दोनों की शादी होना।)

एक राजकंवार-(राजा गोविंदराज से) क्या मैं यह दरियाफ्त कर सकता हूँ कि यह राजकंवार किस राजा के पुत्र हैं ?

गोविंदराज-क्यों नहीं, मैं आपको इनका परिचय अभी कराता हूँ । इनके पिता का नाम राजा सत्यंधर था जो इसी राजपुरी नगर के राजा थे । क्या आपको मालूम नहीं कि राजा काष्ठांगार ने इनके पिता को मार कर राज्य पर कब्जा कर लिया था, और इन्

मासूम बच्चे को भी फाँसी का हुकम दे दिया था, परन्तु यह क़िसमत से बच गया, अय राजाओ क्या तुम्हें इस मासूम बच्चे पर तरस नहीं आता, क्या आपका दिल यह नहीं चाहता कि इसके बाप का राज्य इसको दिलवाया जावे ?

सब राजा--(एक जुबान होकर) इसके बाप का राज्य इसको ज़रूर मिलना चाहिये।

राजा काष्टांगार--(दिल ही दिल में) हैं, यह मैं क्या सुन रहा हूं, क्या राजा सत्यंधर का पुत्र जीवंधर अभी तक जिंदा है। मैंने तो इसे फांसी का हुकम दे दिया था। अफसोस मैंने जल्लादों पर ऐतबार किया, यह मेरी ही भूल का नतीजा है जो मैंने इसे अपनी आंखों के सामने नहीं मरवाया।

भागने की कोशिश करता है।

(जीवंधर आगे बढ़कर तलवार खैंच खड़ा हो जाता है।)

जीवंधर--देखो भागने की कोशिश बिलकुल न करना, अभी काम तमाम कर दिया जावेगा। अगर मैं चाहूँ तो तुझे अभी मौत के घाट उतार सकता हूँ, परन्तु यह मेरा धर्म नहीं, मैं चत्री हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुझे निहत्ता समझ कर जान से मार दूं। जा तेरी फौज को तय्यार करके मैदान में ले आ, वहीं तेरा पराक्रम देखूंगा।

(रास्ता छोड़ देता है। राजा काष्टांगार भाग जाता है)

(इस प्रकार जीवंधर की आठवीं शादी लक्ष्मी देवी के साथ होती है)

(परदे का गिरना)

सीन ४९

लड़ाई के मैदान का परदा

एक ओर जीवंधर के पक्ष के राजाओं का अपनी अपनी फौजें साथ लिये हुये खड़े नजर आना। भीलों के सरदार कुरंग का भी जीवंधर की ओर से लड़ने के लिये अपनी फौज को साथ लेकर आना, पद्माख्य व नन्द आदि भाइयों का भी धनुषबाण हाथ में लिये हुये मैदान जंग में आना॥ दूसरी ओर राजा काष्टांगार का अपनी फौज को साथ लिये हुये जीवंधर की फौज के मुकाबिले खड़े नजर आना। जीवंधर का ललकार कर राजा काष्टांगार को समझाना।

जीवंधर—देखो काष्टांगार अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, बेहतर है हमारे पिता का राज्य हमें सौंप कर हमसे मुआफी मांगलो क्यों नाहक में अपनी फौज का खून बहाते हो ?

काष्टांगार—अरे छोकरे जरा सामने आ, क्यों ज़्यादा ज़ुबान चलाता है।

जीवंधर—अच्छा, तो तय्यार होजा (और [illegible] है)

दोनों ओर की फौजों का [illegible] होता है। [illegible] घायल होकर [illegible] लगती है। [illegible] के लिये हाथी पर [illegible] है)।

काष्टांगार—(शेर)

ज़रा ठैरजा अब देखूं तू कैसे बचकर जाएगा।
कौन सहाई तेरा जो आकर तुझे बचाएगा॥

जीवंधर-(शैर)

मेरी शक्ती तू क्या जाने देख अभी पछताएगा।
एक तीर लगते ही तू इस भूमि पर सो जाएगा॥

(जीवंधर का एक तीर राजा के हाथी पर छोड़ना। तीर का हाथी के लगना हाथी का वेसुध होकर भागना, काष्टांगार का हाथी से नीचे गिरना। हाथी का काष्टांगार की फौज को पांव तले रौंदते हुवे भागना। फौज में हाहाकार मचना)

काष्टांगार-(अपने कपड़ों को झाड़ते हुवे) जीवंधर होशियार हो जा, आज तू मेरे पंजे से बचकर नहीं जा सकता।

(काष्टांगार तीर चलाता है जीवंधर तीर को बीच में ही काट देता है)

जीवंधर-बस। अब तेरा वार हो चुका मेरा भी प्राक्रम देख ले।

(जीवंधर घोड़े पर चढ़ता है और एक तीर काष्टांगार की ओर छोड़ता है। तीर ठीक काष्टांगार के सीने में जाकर लगता है। काष्टांगार 'हा मरा' का शब्द मुँह से उचारर्ण करते हुवे हमेशा के लिए मीठी नींद सो जाता है)

(जीवंधर की फौज में खुशी की लहर दौड़ जाती है और जय जय कार के शब्दों से सारा भूमण्डल गूंज उठता है।

(परदे का गिरना)
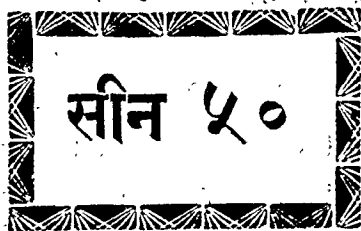
जीवंधर के राज दरबार का परदा

जीवंधर का राजसिंहासन पर वैठे हुए नज़र आना। जीवंधर की माता विजिया सुन्दरी तथा जीवंधर की आठ रानियों का भी दरबार में बैठे हुवे दिखाई

आना। सब राजाओं का और जीवंधर के धर्म भाई पद्माख्य आदि का भी अपने नियत स्थानों पर बैठे हुवे दिखाई देना। जीवंधर के मामा राजा गोविंदराज का खड़े होकर राजतिलक की रसम अदा करना।

गोविंदराज–(जीवंधर के सर पर ताज रखते हुवे) बेटा जीवंधर, अब इस सारे राज का भार तुम्हारे सर पर है, अब तुम्हें नीति पूर्वक राज करना है और अपने पिता की राजगद्दी को शोभायमान करना है।

(सब दरबारी झुक कर राजा जीवंधर को प्रणाम करते हैं, देवता आकाश से फूल बरसाते हैं। खुशी के बाजे बजते हैं।

(परियों का भगवान की स्तुति करना)

गाना (चाल) भगवान किनारे से लगादो मेरी नैया।

१. भगवान नहीं तेरे सिवा कोई सहारा।
जिसने भी तुझे याद किया पार उतारा॥

२. सीता ने अग्नि कुण्ड में था तुमको पुकारा।
इक दम से कमल रूप बना कुंड में सारा॥

३. सागर में श्रीपाल को था सेठ ने डारा।
उसने भी मुसीबत में तेरा नाम उचारा॥

४. तूने ही दिखाया था उसे भी तो किनारा।
वरना तो वहीं डूब चला था वो बिचारा॥

५. गांधी को भी तेरा ही तो था नाम प्यारा।
इस ही से तो चमका है ये भारत का सितारा॥

६. तेरे बिना चलता नहीं इन्सान का चारा।
तूने ही तो आज़ाद किया हिंद हमारा॥

([illegible])

जीवंधर—(अपनी माता विजिया सुन्दरी से) आओ माता चलिए, ज़रा अपने चरणकमलों से महल को भी पवित्र कर दीजिए।

विजियासुन्दरी—बस बेटा, मेरा काम तो तुमने पूरा कर दिखाया है, अब सुख पूर्वक अपना राज करो। मैं तो दण्डक बन में ही जाकर धर्म ध्यान करूंगी।

(चल पड़ती है)

जीवंधर भी अपनी माता को छोड़ने के लिए कुछ दूर साथ जाता है दरबारी लोग भी सब पीछे पीछे चलते हैं। कुछ दूर जाकर सब लोग माता विजिया सुन्दरी को प्रणाम करके वापिस चले आते हैं। इस प्रकार जीवंधर अपने पिता की राजगद्दी पर बैठ कर बहुत दिनों तक सुख पूर्वक राजपुरी नगरी में राज करता रहा। (परदे का गिरना)

इति विजिया सुन्दरी नाटक समाप्तम् शुभम्ः